

Title : लवय् प्रतिकार LVAYA PRATIKAR

Micro. No.

Religion : Hindu / Bauddha

Detail direction in reply:

Folios 60 Lines (in a page) 10

missip folio 63, 85 and onwards
Chapt. / act / ५३/५४ पं.सं. १-२२, ५३, ८५ व मां. ५३, ५४

Scribe / donor ✓

Ruler / place

Illus. :

टिप्पणी: थुकी विषय लूची धनः ५ /
एक गुल्मका नीं गनं रूपकाः ३ / मज्जुनि /

Remark: Content list also includes
Title of this MS is not
traced so far.

Beginning, colophon, post-colophon :

7

7

अथ भूतनाम ज्वरां कुश ४४
अथ पंचवक्त्रनाम ज्वरां कुश ४४
अथ भं गिराजकल्पः ४४
अथ बाहुल्यात्पाकल्पः ४५
अथ भूलकल्पप्रतिकारः ४५
अथ काकजंघाकल्पः ४६
अथ त्रिषाप्रतिकारः ४६
अथ कुष्ठरोगप्रतिकारः ४७
अथ निप्रयोग ४८

अथ दुरिकापबाल ४८
अथ नैवनाटपबाल ४८
अथ पबालस्थंभन ५०
अथ प्रमेहप्रतिकारः ५०
अथ फिरंगरोगप्रतिकारः ५१
अथ रतउधिप्रतिकारः ५१
अथ फुलाप्रतिकारः ५२
अथ रिगाटाप्रतिकारः ५२
अथ शिरप्रयोग ५२

अथ पूररोगप्रतिकारः ५२
अथ लिंगपाकोनिकोहो ५३
अथ मुत्तारप्रतिकारः ५३
अथ वारिप्रतिकारः ५३
अथ षटिराप्रतिकारः ५४
अथ निनावप्रतिकारः ५५
अथ वायुप्रतिकारः ५५
अथ जलग्रहफियोप्रतिकारः ५६
अथ कर्णशूलप्रतिकारः ५६

प्रतिकारः ५७
 अथ फायाजिभा प्रतिकारः ५७
 अथ परजिभा प्रतिकारः ५८
 अथ दाव प्रतिकारः ५८
 अथ बललो प्रतिकारः ५८
 अथ प्रसूति प्रतिकारः ५८
 अथ भगसंकोच प्रकारः ५८
 अथ भगं दुरोग प्रतिकारः ५८
 अथ मुखि प्रमेह प्रतिकारः ६०

अथ घेरकिरा प्रतिकारः ६०
 अथ कालक कायेरकिरा प्रतिकारः ६०
 अथ फिया प्रकारः ६०
 अथ हियोउह दो प्रकारः ६१
 अथ घेरउह दो प्रतिकारः ६१
 अथ नाथुरा प्रकारः ६१
 अथ कासोउ सासो प्रकारः ६१
 अथ वायु गुल्म प्रकारः ६२
 अथ हर्षीरोग प्रकारः ६२

अथ भूलरोग प्रतिकारः ६२
 अथ संनिपात प्रतिकारः ६२
 अथ मुत्रकृच्छ्र प्रकारः ६४
 अथ हरन प्रतिकारः ६४
 अथ उदयटि प्रकारः ६४
 अथ विनाश प्रतिकारः ६५
 अथ स्थंभन प्रतिकारः ६५
 अथ शंख दूरी प्रकारः ६५
 अथ वटिरावह प्रकारः ६५

३

अथ अतिहार प्रकारः ६५
 अथ बललो प्रकारः ६६
 अथ गाना प्रकारः ६६
 अथ अत्रिकोबरसाउ दो प्रकारः ६६
 अथ साउ दो प्रकारः ६६
 अथ प्रमेह प्रकारः ६६
 अथ औलाजरा प्रकारः ६६
 अथ जुका प्रकारः ६७
 अथ र्हरि रोग प्रकारः ६७

अथ लुता प्रकारः ६७
 अथ भगवटिरा प्रकारः ६७
 अथ दाद प्रकारः ६७
 अथ मुत्रकृच्छ्र प्रकारः ६८
 अथ मुत्रनिरोध प्रतिकारः ६८
 अथ हरन प्रतिकारः ६८
 अथ कफ कातणित लक्षणं ६८
 अथ रितु लक्षणं ६८
 अथ कुप्य प्रतिकारः ६८

अथ अदाहा प्रकारः ६८ ॥ ॥
 अथ अशंगुदु प्रो प्रकारः ६८ ॥
 अथ रिप्रसूति प्रतिकारः ६८ ॥
 अथ कानपा जो पिना स प्रकारः ७० ॥
 अथ पि-शंगना मतैल प्रतिकारः ७० ॥
 सोतेल वायु हरण ७० ॥ ॥
 अथ कं का मोद कवडि ७० ॥ ॥
 अथ वेताल नाम दूरी ७१ ॥ ॥
 अथ वंजेश्वर दूरी ७१ ॥ ॥

अथ अतिहारः
 अथ अशंगुदु प्रो
 अथ रिप्रसूति प्रतिकारः
 अथ कानपा जो पिना स प्रकारः
 अथ पि-शंगना मतैल प्रतिकारः
 सोतेल वायु हरण
 अथ कं का मोद कवडि
 अथ वेताल नाम दूरी
 अथ वंजेश्वर दूरी

अथ विनाशप्रतिकारः ७९ ॥

अथ जलोदरप्रकारः ७९ ॥

अथ लसुनप्रतिकारः ७९ ॥ ॥

अथ क्षयरोगप्रतिकारः ७२ ॥

अथ रउनउगर्णप्रकारः ७२ ॥

अथ सुवर्णकल्पः ७२ ॥

अथ कुटितपादप्रकारः ७३ ॥

अथ सरलुक्काप्रतिकारः ७३ ॥

अथ वाडुलिप्रकारः ७२ ॥

७९

अथ स्त्रिकोपुलपलवावनुप्रति ७३ ॥

अथ वायुलक्षणं ७३ ॥ ॥

अथ वायुप्रतिकारः ७३ ॥ ॥

अथ स्त्रिकोगानुधातिश्रावप्रति ७४ ॥

अथ कुतंगरोगप्रकारः ७४ ॥ ॥

अथ पेटकिराप्रकारः ७४ ॥ ॥

अथ अजिर्नसुनीयाप्रकारः ७४ ॥

अथ लुताप्रकारः ७५ ॥

अथ दोषप्रतिकारः ७५ ॥ ॥

अथ स्थंभनप्रतिकारः ७५ ॥

अथ कानपात्रोप्रकारः ७६ ॥

अथ वायुगुलप्रकारः ७६ ॥

अथ अन्ननप्रतिकारः ७६ ॥

अथ रंखवूणिहिंजादक ७६ ॥

अथ ववनरहोप्रकारः ७६ ॥

अथ कौलायाकुत्रवायाकासंत्रः ७६ ॥

अथ यनिलासंत्रः ७७ ॥ ॥ ४

अथ हाडिमुकुनुसंत्र ७७ ॥

अथ कोक्लिनिको कपालमुत्तुसंत्रः ७७ ॥

अथ वाक्काकोसंत्रः ७७ ॥ ॥

अथ तेलकितास्थामनुसंत्रः ७८ ॥

अथ कटारोगदातसुनियाको ७८ ॥ ॥

पात्रोषटिराकोसंत्रः ७८ ॥ ॥

अथ पोलियाकोसंत्र ७८ ॥ ॥

अथ वावलोहजलीग्रेसंत्र ७८ ॥

अथ जराकोमुवाहाकोस ७८ ॥

हजैदुष्वाकोसंत्र ७८ ॥ ॥

अथ सानाकेटाकेटिकारोगप्रति ७८ ॥

अथ अतुलक्षणम् ७८ ॥ ॥

अथ जिह्वालक्षणं ७९ ॥

अथ मुवपरिक्षालक्षणं ७९ ॥

अथ घोउलसंनिपातलक्षणं ७९ ॥

अथ सूर्योदयोप्रतिकारः ७९ ॥

अथ खरनामसंनिप्रकारः ७९ ॥

अथ पित्तनामसंनिप्रति ७९ ॥

अथ मेवनामसंनिप्रका ७९ ॥

अथ रौद्रनामसंनिप्रकारः ८३ ॥

अथ पुरंदुनामसंनिप्रकार ८४ ॥

अथ दंतिनामसंनिप्रकार ८४ ॥

अथ मुतिसारनामसंनिप्रति ८४ ॥

अथ धूकारप्रतिकारः ८४ ॥ ॥

इति धं चतरी उक्तम् ८५

अथ गुणधं वायु रसम् ८५ ॥

अथ आनंदमै रवनावडि ८५ ॥

अथ वैद्यसास्त्रप्रकारः ८५

७२ ५ ५ ५

शुव ४

अथ मुष्टा दश कुष्ठ कोषध ॥ अथ स्थंभन विधि ॥ ८२ ॥

अथ भृंगिराज ८६ ॥ ॥ अथ पूर्ववीर्य थंभनं ८२ ॥

अथ सुनमानु उपाय ८६ ॥ ॥ अथ वंधास्थिलक्षणं ८२ ॥

अथ गारा ८६ ॥ ॥ ॥ ॥ अथ दोष किपरिहारा ८२ ॥

अथ नपुंशक प्रकारः ८७ ॥ अथ सौषधीषुः ८२ ॥

अथ हृत्परस कि विधि ८३ ॥ द्वितीया के उपाय अथ सौषधि

अथ प्रभावतिनाम वीर्य ८३ ॥ अथ सौषधि

अथ मुनुषा म ८७ ॥ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ अथ वंधावलि

अथ अश्वगंधा ८८ ॥ ॥ धत्ते ॥ धं चंतरायनमः

सारस्वतचूरी ८८

॥ उल्काभेद मंत्र ८२ ॥

॥ रक्षा कोमंत्र ८२ ॥ रामायनमः

॥ तालुकोमंत्र ८२ ॥ ॥ धन्वातरायनमः

॥ यनिला यनिरा कोमंत्र ८३

॥ चतुराशी देहा ८४ ॥ ८४ ॥

॥ उद्वाहन मंत्र ८४ ॥

॥ वायु कोमंत्र ८४ ॥

॥ मोहन मंत्र ८६ ॥

॥ विष्णु मंत्र ८६ ॥ अतः परं सर्व मंत्राः

८७

८७

था ८

मादा ॥ अथ पित्त रोग उपचारः ॥ निवका फलू वातित वैरका जडा कटा ॥ इति काय गरिपिनुपि

त रोग या कै ॥ १ ॥ भृंगिराज घृत संग पातु ॥ पित्त रोग या कै ॥ १ ॥ का कं जं घृत संग पातु ॥ पित्त रोग

ग या कै ॥ १ ॥ पुरा नु गुड गार घृत संग पातु ॥ पित्त रोग या कै ॥ १ ॥ सिमा काली दुसा भाग ॥ नि

वका दुसा भाग ॥ वासक का दुसा भाग ॥ अवला जडा भाग ॥ इति मेला रक्ता गन्तु ॥ गा ग्राभिन्न

जा कनु ॥ पानि घाल नु सा तो ॥ राषनु ॥ सर्व पित्त या कै ॥ गा इति पित्त रोग समादा ॥ अथ गला

रोग उपचारः ॥ आधा जाड का विज भाग ॥ कूडा को विज भाग ॥ आ कं के दुध भाग ॥ तिल का

तेल घालिषत् ॥ नुत व गला कंठ माला या कै लेप करिय तो ॥ १ ॥ दु चंडा को पेठ भिन्न गंध

क घाल नु ॥ तिल तेल पचा व नु ॥ त वलि लेप गन्तु ॥ कंठ माला कै ॥ १ ॥ कला तिला ला या पा

नु ॥ गाड जाडा ॥ १ ॥ आदित्य कार विता को जडा गला वाध नु ॥ गला रोग या कै ॥ १ ॥ सुठि भाग

20

वे०
२६

सौपभाग १ अदु वा भाग ॥ सतिपिनिवडलानि संगजाले पगर्नु ॥ गाडजा ॥ साजिषार भाग
वा पुविडं ग भाग ॥ सिधो भाग ॥ सतिवर्ण गनु ॥ गो मुत्र संग जाले पगर्नु ॥ पानादिनु
॥ कंठ रोग या कंजं डजा ॥ १॥ देवारं डारि नि को जं डो ॥ सति सम गरि पानि संग पिनु ॥ गला से पा
नु ॥ तव कफ को उपयोग ॥ ५॥ थो कै ॥ १॥ ८॥ कन रार अक्ला को पार ॥ यतिवा कामुत्र खर्च ॥
तव जाले पगर्नु ॥ गला रोग या कै ॥ १॥ १॥ पुराना कुमिडा को पानि सिधो लन तुम्हा ॥ सुना ॥ सति
षर्लुना नासदिनु ॥ तव पद रोग या कै ॥ १॥ २॥ इति गला रोग समादा ॥ अथ वहिरि रोग उपवा
र ॥ सठि भाग १ सौप भाग १ सिधो भाग १ हि ग भाग १ गंध क भाग १ विष भाग १ ॥ सति कुटिड मालि
पिनु ॥ का थार गार घ तसि मल को षो टो तिल को तेल ॥ सति धालि पकाव नु ॥ तव वहिरि
ले पगर्नु ॥ वहिरि रोग या कै ॥ १॥ पुनर्न वा भाग १ जव पाल भाग १ ल जालु भाग १ अरिड तेल घ

२६

15

10

5

लिप चाव नु ॥ तव ले पगर्नु ॥ वहिरि रोग या कै ॥ १॥ गंध क भाग १ पार भाग १ मोर्गि भाग १ को
का विज भाग १ ॥ सति एकत्र करि ले पगर्नु ॥ वहिरि रोग या कै ॥ १॥ इति वहिरि रोग समादा ॥
अथ गद उपवा ॥ हिर्विसतु वा विष सुहा ग हरिताल अजै पाल रति डलो बुध वा सो कुचिलो
डड को दुध गंध क निला पोता वा चाड अफि मसि को लुन पट गेरु चितो ॥ सति वाष धि पि
नि मा द्वि कामुत्र पल्लु ॥ तव वडि वा धनु ॥ तव पडि वा ॥ कामुत्र संग घसिला पत ॥ पि
यो या कै ॥ गं डु या कै ॥ सर्व रोग हरै ॥ विद्वि को विष डत्रै ॥ सर्व विष डत्रै ॥ इति गद समादा
॥ अथ वाजन को उपवार ॥ परे वा कि विष भाग १ वानर को कपाल को षो रो भाग १ जिठि
मह भाग १ वोह भाग १ सति सम करि नासदिनु ॥ अज नग नो पि नदिनु ॥ वाज हर के दो या
कै ॥ १॥ जो वज्र अवे लि रहत त रेकार्तु षधी कडा ला हा भाग १ जेठि मह भाग १ निल भाग १

कस्तुरि भाग १ परे वा कि वि वि भाग १ रति सम करि धूप दिनु ॥ चटा ठनु ॥ वाज धू वार ला गै नि
 को हो ३ ॥ १ ॥ जो वाज वारे न पात त रे को औषधी गुगुल भाग १ आसा पुरि भाग १ मोर को पुछ भाग
 कस्तुरि भाग १ जो रोवन भाग १ रति सम करि धूप दिनु ॥ पाया लिफोष दूरनु ॥ पिन दिनु ॥
 तव द्वे रे दो पावै ॥ चारो पा ३ ॥ जस वाज कु हो मा सु पा ३ ॥ व्य कार हो र त रे का वोष धि ॥ निल भा
 ग १ जंध क भाग रति तो भाग १ कस्तुरि भाग १ रति दुव ला मा सु संग घान दिनु ॥ वाज नि को हो र
 ॥ ४ ॥ महा विर को विज भाग १ तिरि को विज भाग १ सर्पिड भाग १ रति मलार घृत सौ धूप दि
 नु ॥ पोष छाडि हि दो रह ॥ पा वाज कि जाति कहु वाटा ॥ नट करि पनिया ॥ ६ ॥ नर मुत्र संग मा सु
 मि जाइ दिनु ॥ तव वाज नि को हो ३ ॥ गा रति वाज कि जाति ॥ अथ सर्प को उपचार ॥ हिवि
 निर्विषि के दार सु ठि निलो यो नो ॥ रति वाष धी नि वुर स घालि डं क पा द्वि सा वनु ॥ स

२७

वी व स उ त्त रै ॥ १ ॥ पलाल गरुड को जडी मर्व सु ठि ॥ पिसि पा नु ॥ सर्व विष उत्रै ॥ २ ॥ दे वा डं त ल दा
 डि मचु क को इ र को विज ॥ रति पिसि पा नु ॥ सर्व विष पा के ॥ ३ ॥ पेर भाग १ कु डो भाग १ विष भाग १
 तितो भाग १ चितो भाग १ रु दे लो भाग १ रति सम करि धूप दिनु ॥ वाकि मुत्र संग घल नु ॥ सर्व विष
 पा के ॥ ४ ॥ इति गरुड उपचार सर्व विष समा दामि ति मुने ॥ रातो जयति ॥ अथ राक स धूप कहु
 ॥ गुड भाग १ गुगुल भाग १ हि ग भाग १ व र डो भाग १ रति सम करि धूप दिनु ॥ रा क स हो डै ॥ १ ॥ गु
 र्जा भाग १ क टार भाग १ हर डा भाग १ हि ग भाग १ रति सम करि धूप दिनु ॥ तव रा क स
 हो डै ॥ २ ॥ इति रा क स धूप उपचार समा दामि ॥ अथ गंडा को उपचार ॥ गुड गे रु व स थ के ॥ सो वं म धु
 ॥ ले प ये त च र ण ॥ वै वा ॥ अफि मा र्ति पा दौ का मला ॥ १ ॥ गुड भाग १ गे रु भाग १ स धो भाग १ स प्या
 भाग १ म धिर भाग १ घृत भाग १ रति सम करि धूप दिनु ॥ ता ला चु धि रि रते ॥ को मल क द लि कह
 नु ॥ १ ॥ पू मणि वा भाग १ अ पा मार्ग भाग १ अ रि ड को ज डो भाग १ दि जि र भाग १ त व सु धि र मु ष ले प

20

२८

15

से ६

गर्नु॥ सुष गंध थाकै॥ १॥ वरुडा भाग पिपला भाग ते जपत्र भाग रिसो भाग रतिसम करि जड
 तसुका वनु॥ अवला प्रमान गोलिषा नु॥ कंठ स्वर नि को आवै॥ ४॥ अथ हि गाव्य कलिष्यते॥
 हि गभा गजवानु भाग सुठि भाग विन्यालुन भाग जोषार भाग जिरो भाग रतिसम करि
 रिचूर्ण गर्नु॥ तवत्र वकामाड संग घा नु॥ हिया कि वह थाकै॥ का सोड पसा सो थाकै॥ पेट कि
 वह थाकै॥ नाभिकि वह थाकै॥ १॥ इति हि गाव्य कसमादा॥ अथ कुषेराग उपचार॥ गंध कत्र
 फला भाग रो भेला यो काला तिल तिता विंडा का विज॥ रतिला रलेप गर्नु॥ मही संग घा नु॥
 सेतो कुषु जाइ॥ २॥ वोर भाग शवाल को जडो भाग सेता सिसु भाग शिरी क कर्लिका भा
 ग॥ रतिसम करि लेप गर्नु॥ सेता कुषु जाइ॥ ३॥ रतिगेडि भाग चितो भाग खजो भा
 ग॥ कुट भाग धनिव भाग पा॥ रति एकत्र करि काजिसित लेप गर्नु॥ सेता कुषु जाइ॥ ४॥
 वारुति भाग धनिव फला भाग रसुठि भाग पिपला भाग मरिच भाग राजवक्ष भाग

२८

10

5

षट्

रति एकत्र गरिचूर्ण गर्नु॥ चतमह संग लेप गर्नु॥ सेता कुषु थाकै॥ ५॥ राजवक्ष कविज भाग तिल भाग
 रसुठि भाग गुडु भाग रति मेला उषा नुदिनु॥ सेता कुषु थाकै॥ ६॥ इति कुषेराग समादा॥ अथ मूर्द्धा रो
 ग उपचार॥ आ क को पात भाग पिपला भाग रतिसम करि पिपला नु मूर्द्धा थाकै॥ १॥ मर्व पिपल पिपल सदिजे
 तो॥ मूर्द्धा जो गोर ससिउ पिपल मर्व सधोल सनु मन सिर बजे॥ रतिसम करि पल्लव गुण मुत्र संग ताव अंज
 गर्नु॥ मूर्द्धा थाकै॥ २॥ इति मूर्द्धा रो ग उपचार समादा॥ अथ निरोध उपचार॥ जस अजि न होइ पेट भरी रहे॥ उषो
 भोन होइ॥ सो विषम अजीर्न कहनु॥ ताता पानितु न डमालिषु नु॥ तव निरोध थाकै॥ १॥ हर डोषा उषा नु ताता
 पानि संग घा नु निरोध थाकै॥ २॥ अडक को जडो रतिगेडि तुनु॥ रतिगाइ मुत्र घालिषु नु॥ नासदिनु॥ निरो
 ध थाकै॥ ३॥ इति निरोध समादा॥ अथ राहु उच्चोरा॥ मर्व भाग रिसो भाग चितो भाग रसुन भाग विष भाग
 कालो जिरो भाग रतिगेडि भाग अजै पाल भाग हिर्वि भाग जोषार भाग कुचिला भाग बिलो यो तो भाग
 अवला को वुक् भाग अमिला को रस घालि पल्लव नु॥ तव पानि संग लाव नु॥ तव राहु थाकै॥ राग न थाकै॥ गाड

20

वेदांग
२२

थाकै॥१॥सुवागफुल्लारकौडाजलारसुठिहिग॥सुतिवस्तसमकरिगारुकामहिसंगपिनु॥तववाकिकिबिषाः
सै॥१॥रुतिराहुरागणउच्चारसमादा॥अथकमलरोगउपचार॥अथपांडुरोगउपचार॥त्रिफलाकावूर्णमहसं
गषाबु॥कमलरोगथाकै॥पांडुरोगथाकै॥१॥मान्योमारभागामर्चभागपिपलाभाग॥सुठिभाग॥हरडोभाग॥
अवलाभाग॥जिरोभाग॥जवानुभाग॥विषभाग॥सुतिसमकरिचूर्णगरिवस्त्रगलितगर्नुतवसकौचूर्ण॥षा
बु॥कमलरोगथाकै॥पांडुरोगथाकै॥२॥अरिउकादुसाअवलाकादुसामरिक्लसुना॥सुतिसमकरिअव
लाप्रमानषाबु॥सातार॥कमलरोगपांडुरोगथाकै॥३॥भेलोयोभागरतिलभाग॥हरडोभाग॥वरडोभाग॥
॥सुतिपिनिमहसंगषाबु॥कमलरोगथाकै॥पांडुरोगथाकै॥४॥षैरभाग॥तुलसिभाग॥वेलकजडाभाग
॥पिपलाभाग॥तितरिविजभाग॥पिपलमूलभाग॥सुठिभाग॥सुतिवोषधिमिसिचूर्णगर्नु॥सिवालिया
निसंगषाबु॥कमलरोगथाकै॥पांडुरोगथाकै॥५॥रुतिकमलरोगसमादा॥अथभगंदररोगउपचार
॥दिशावस्तागुदफाटलोहस्राववहुवडह॥आषाकाकुंडलपरं॥अस्पापवार॥जार्फलभाग॥वरडो

२२

15

10

5

को६

कापातभाग॥हिगभाग॥गुर्जीकोरसभाग॥सुठिभाग॥सिधोभाग॥सुतिपिसिमहसंगभगले
पगर्नु॥भगंदररोगथाकै॥१॥त्रिफलाभाग॥गुलुभाग॥सुतिमेलारभगलेपगर्नु॥भगंदररोगथाकै॥२॥
कुं॥कुकोहाटपोलिचुलोगर्नु॥तिलतेलसंगलेपगर्नु॥भगंदररोगथाकै॥३॥जिवदोलाहोपोलिभः
संगर्नु॥त्रिफलासुतिगारुधतसंगलेपगर्नु॥भगंदररोगथाकै॥४॥रुतिभगंदररोगसमादा॥अथनररोग
उपचार॥हरडोसिधोसुपाशिरुतिपिनिरुद्धिसेपगर्नु॥रुद्रिरोगथाकै॥१॥ववुलकिहूला
दाडिमकिहूलासुपांरिजर्फलमाजुफलासुतिपिनिपुलेपगर्नु॥पुष्परोगथाकै॥२॥परिकेवुविजका
वाहासुतिसमकरिरुद्रिलेपगर्नु॥रुद्रिरोगथाकै॥३॥पाप्यासर्सिउ॥हरडोवासक॥सुतिपिनिपुलेप
गर्नु॥तवलेपगर्नु॥रुद्रिरोगथाकै॥४॥जार्पत्रिसर्सिउ॥जार्पत्रिसर्सिउ॥हरडोवासक
॥सुतिपिनिपुलेपगर्नु॥रुद्रिरोगथाकै॥५॥दाडिमकापातकोचूर्णगर्नु॥हलेदोमुशलिगुलु

20

वे.
३०

राशतिमिसिद्धर्णगर्नुतवलावनु। इंदिरोजथाकै॥६॥ इतिनरव्याधिरोगउपकारसमादा॥ अ
 यप्रमेहउपकार। रसगंधकभस्ममधुमिश्रीभुक्ता॥ वातप्रमेहप्रणशनमा॥ अवलातिलचूर्ण
 महिमिश्रीकृतं क्रायं भक्ष्यता प्रमेहनाशं॥२॥ रातिगेडिकोजडोपिसिगाइदुधसंगभक्ष्येप्र
 मेहनाशं॥ शतिलेतलभातसंगभक्ष्ये प्रमेहनाशानं॥४॥ त्ववागइंडाइनिकोविजअवलाषाड॥ इति
 चूर्णवस्त्रगलितकृतं भक्ष्येत्॥ अक्षिप्रमेहनाशानं॥ पाहिगभागवजोभाग॥ इति तोभागइसठिभा
 ग४ जवानुभाग५ कुठभाग२ इति चूर्णषाडुसो अवातदापानिसंगषानु। अजीर्नथाकै। फियोथाकै
 पंचकोसाथाकै॥ दुधोहोइ॥६॥ इतिप्रमेहउपकारसमादा॥ अथवेतालनामचूर्ण॥ सुठिनगुथो
 अवलागुर्जोकठाइ॥ इतिसमकरिकाथपिपपलिघालिपिनु। एकज्वरथाकै। द्विज्वरथाकै। त्रि
 ज्वरथाकै। चौथोज्वरथाकै॥ गुर्जोभाग४। समासिभाग॥ इतिस्त्रयगारितावाभाडाउमालनु॥

३०

15

10

5

रसद्वानिलोहाकै। मंदज्वरथाकै॥ चौथोज्वरथाकै॥ सर्वज्वरथाकै॥२॥ इतिज्वरदाहनासिक्कालिपि
 राइतो जवानुविताहरडासुठिहिगविन्या॥ इतिसमकरिषानु। कोसापंचविमोहित॥३॥ मेसाकिनव
 निपुराबुचुकदुइरकत्रकरिमयनुपायमर्दनगर्नु॥ वटपटिनिवार॥४॥ सुठोसिधोविन्या॥ इतिस
 मकरितातापानिसंगषानु॥ शूलथाकै। पेटिकेवहथाकै॥५॥ इतिवेतालनामचूर्णसमादाशुभं॥ अथ
 घोडाबुलि॥ रसविसरसवाधौवडिचौसठिरोजहरेघोरबुलि। सभागविशभाग२ गंधकभाग३ हरि
 तालभाग४ अवलाभाग५ हरडाभाग५ वरडाभाग५ मरिचभाग६ पपलाभाग६ सुठिभाग६ सुवागभा
 ग७ अजेपालभाग८ इतिस्त्रयकै। भृंगिराजससमेतपिसनुवहराप्रमानगोलिवाधनु॥ अतोपरि
 अनुपाना॥१॥ वडि। तुलसिकारससंगअंजनगर्नु। नित्यज्वरजाइ॥२॥ अक्षिदूधसंगअंजनगर्नु। रत्न
 धिजा॥३॥ निबुससंगअंजनगर्नु। कोलिदोजा॥४॥ भृंगिराजससंगषानु॥ अउलो जेरोजा॥५॥ जिरा
 संगषानु। अउलाजेरोजा॥६॥ मर्षासागसंगषानु। पित्तजेरजा॥७॥ अवितासंगषानु। पित्तज्वरजा॥

वेदा०
३१

॥८॥ वडि॥ तो वुल संगषा नुपित्त ज्वर जा ॥९॥ त्रिकुटा नूण संगषा नुवात मूल जाइ ॥१०॥ सहज न घृत
संग वडि॥ षा नु सर्व मूल जाइ ॥११॥ निबु फे साला यषा नु वाघ को जुयो पायो निको हो ॥१२॥ पिपल
कि हला संगषा नु रक्त पित्त जा ॥१३॥ काश पानि संगषा नु को सो पसा सो जा ॥१४॥ जाइ फल संगना
सदि नु अदा हा जाइ ॥१५॥ भागरु स संगला व नु लु ता जा ॥१६॥ अवला रु स संगषा नु हियो डह दो जा
इ ॥१७॥ तिडु का विज प्रसुति भयाषा नु वाति अस्त्रिको पि रिट ॥१८॥ मा ह्य का पित्त संग दास घाल
नु द लु नु जाइ ॥१९॥ गैत संगषा नु संग्रह नि जा ॥२०॥ अरिड को तेल संगषा नु पघाल होइ ॥२१॥ नि
बुरस संगषा नु हिलाइ तो सर्प विष जाइ ॥२२॥ तुलसिका पात संगषा नु तो सर्व वायु जा ॥२३॥ गुड संग
षा नु सर्व वायु जा ॥२४॥ मं गिराज संगषा नु चौरासि वायु जाइ ॥२५॥ मुदु वा संगला व नु विट्टि विध
जा ॥२६॥ पराल का भस्म संगषा नु सर्वा अर्जि न जाइ ॥२७॥ कसौ दि संगषा नु मंदा नि जा ॥२८॥ त्रिफ
ला संगषा नु उर्द्ध स्वास जा ॥२९॥ बडि हिर स संगषा नु सज कल्प हो जा न होइ ॥३०॥ हित्यषा नु

इ

३१

१०

५

आरो ग्य होइ ॥३१॥ नागार्जुनि संगषा नु वलि पालित्थो के ॥३२॥ तो वुल संगषा नु राज कल्प होइ ॥३३॥
कसौ दि संगषा नु शीर पृष्ठ होइ ॥३४॥ त्रिकुटा नूण संगषा नु शिर व्यथा जा ॥३५॥ गुजोर स संगषा नु
शीर व्यथा जा ॥३६॥ वतुर्द शिकि रात्रि वो हट घर द्वार रुम नु भूत प्रेत जाइ ॥३७॥ पाहिलाइ नु दंत का पि
डा जाइ ॥३८॥ धतु रा विज संगषा नु शिर व्यथा जाइ ॥३९॥ वडि धतु रा विजषा नु शिर ज्वर जाइ ॥४०॥ वडि
षषा नु विष न लाग ॥४१॥ आकर सना सदि नु नाक खरुवा वै ॥४२॥ समले कारषा नु संनि वायु जा ॥४३॥
कुकर काषाया ला व नु वडि रवौ ला या कुक्र को पायो निको हो ॥४४॥ तिल तेल आषा मा थिले पज नु अ
षा क पट जा ॥४५॥ पान संगषा नु अजी ने जा ॥४६॥ गारगु तषा नु गुल्म जा ॥४७॥ जाइ फल संगषा नु हसी
जा नु ॥४८॥ सेता मा र्श संगषा नु अस्त्रि डध होइ ॥४९॥ कुट किर सषा नु विष न लाग ॥५०॥ पति उजा सं
गषा नु भूत व्यथा जा ॥५१॥ धनि या घृतषा नु सर्व व्यथा जा ॥५२॥ वजोषा नु त्रिदोष जा ॥५३॥ नि य संगषा
नु को सो उप्सा सो जा ॥५४॥ भौसिकि वल हिषा नु अतिसार जा ॥५५॥ वडि धनि त्यषा नु विष न लाग स

रिर सारे होइ ॥ ५६ ॥ वडि सुवर के विषा भस्म गर्नु गाद ह को मृत नासादि नु अवरि जा ॥ ५७ ॥ कामि संग
 षानु हस्त वात जा ॥ ५८ ॥ चापा का फूल संग षानु शरीर सुगंध हो ॥ ५९ ॥ वाक्त्रि दुध संग षानु वाति रोग जा
 ॥ ६० ॥ भोल व्याल षानु को सो उप सा सो जा ॥ ६१ ॥ वडि पिसिल लाट लावनु रिगा दा जानु ॥ ६२ ॥ अधि
 लिग जल वनु विष नला गा ॥ ६३ ॥ पुराल संग षानु मुष रो ग जा ॥ ६४ ॥ वायु विडें ग संग षानु केवल वि
 ष जा ॥ ६५ ॥ गोले वन संतिल क गर्नु मोह ने हो ॥ ६६ ॥ गोपि वंदन संग प्रसूति कन न दिनु वाजि हो
 ॥ ६७ ॥ जार फल वृक्ष गर्नु मल दार लावनु हर्षा जान ॥ ६८ ॥ पति उजा का गुदि संग षानु वाजि अस्त्र के
 कोषि रिट ॥ ६९ ॥ तिरा संग षानु त्रिषा जा ॥ ७० ॥ षय र संग षानु मुत्र रु दु जा ॥ ७१ ॥ निवु संग षानु त्रि
 मि रि जा ॥ ७२ ॥ आदित्य वार मूल नक्षत्र हात का धनु भूत प्रेत नला गो ॥ ७३ ॥ मृथा संग षानु रिनु
 मृत्पि वंदु हो ॥ ७४ ॥ वडि निगुं डि षानु सर्व प्रमेह जा ॥ ७५ ॥ वाक्त्रि दुध संग षानु काजि प्रमेह जा ॥ ७६ ॥
 कुंभिंडा संग षानु जल प्रमेह जा ॥ ७७ ॥ वडि द्युत षानु विविद्र प्रमेह जा ॥ ७८ ॥ वडि पैर षानु वडोति

३२

प्रमेह जा ॥ ७९ ॥ मधु संग षानु मधु प्रमेह जा ॥ ८० ॥ वडि सुपारि षानु तक्त प्रमेह जा ॥ ८१ ॥ गुड संग षानु
 रक्त प्रमेह जा ॥ ८२ ॥ त्रिकुटा संग षानु बाल प्रमेह जा ॥ ८३ ॥ वडि त्रिफला संग षानु मूत्र प्रमेह जा
 ॥ ८४ ॥ वाक्त्रि दुध संग षानु दुष प्रमेह जा ॥ ८५ ॥ भंगिरा ज संग षानु सास्य प्रमेह जा ॥ ८६ ॥ निगुं डि
 संग षानु घृत प्रमेह जा ॥ ८७ ॥ वज्र भांगल का का गुदि षानु सर्व प्रमेह जा ॥ ८८ ॥ अवलामह षानु ते
 ल्या प्रमेह जा ॥ ८९ ॥ गार कामहि संग षानु प्रमेह जा ॥ ९० ॥ भागे आ फु षानु सर्व प्रमेह जा ॥ ९१ ॥
 सुहा गजा र पत्रिक पूर षानु सर्व प्रमेह जा ॥ ९२ ॥ मह षानु जल प्रमेह जा ॥ ९३ ॥ मास संग षानु सप्र
 मेह जा ॥ ९४ ॥ गुड गा र का दूध संग षानु नील प्रमेह जा ॥ ९५ ॥ नागार्जुनि निर्मिगुं डि संग षानु निल प्र
 मेह जा ॥ ९६ ॥ हले दो महि षानु का सो प्रमेह जा ॥ ९७ ॥ तिता संग षानु रक्त प्रमेह जा ॥ ९८ ॥ वज्र भागमा
 ल का गुनि षानु सर्व प्रमेह जा ॥ ९९ ॥ रतिघोरा वृत्ति प्रतिकारः ॥ १०० ॥ अथ अमृ कले लावनि ॥ मु
 थार स प्रंद ॥ भंगिरा ज र स प्रंद र सिल र स प्रंद ॥ पत कु वारि र स प्रंद र सिल र स प्रंद ॥

20

वैदंग

३३

दिनु॥ मृशलिभाग॥ हरडाभाग॥ वरडाभाग॥ अवलाभाग॥ मरिचभाग॥ पिपलाभाग॥ सुठिभाग॥ सुहा
 गभाग॥ जारफलभाग॥ लवागभाग॥ अलश्चिभाग॥ अकरकराहाभाग॥ जवानिभाग॥ वज्रभाग॥ का
 लोजिरोभाग॥ सेतोजिरोभाग॥ महषाडघृत॥ एतिसकत्रकुरिपिसनु॥ अवलाप्रमानषानु॥ वंदुस
 र्पिकिसमज्योतिहे॥ घोरजसोवेगहे॥ शिखिकोजसोवलहे॥ जीर्णकायापुष्टहे॥ दृष्टिद्विज्योतिहे॥
 ॥ वीर्यस्थंभनहे॥ कफपित्तश्लेष्मानिवोरैसर्वव्याधिनिवोरै॥ सर्वगुणसुभ्रुककैरे॥ इतिअम्रकमेल
 वनि॥ ॥ अथमंडरमारसउपचार॥ अमिलामहिलेवेर॥ चुनुगोतरधुनु॥ पुनिहाडिघालिलो
 हाकिचपकाडनाप्रहरदिन॥ पगारकापर्शजाडनु॥ तववूर्णगरिवस्त्रजलितगनु॥ केलासरसप्र
 दत्तवपिसनु॥ धतुरासपुठ॥ तवपिसनु॥ मंगिराजरसप्रद॥ अनिपिसनु॥ वासकरसप्रद॥ पि
 सनु॥ माडप्रद॥ पिसनु॥ मारिरसप्रद॥ अनिपिसनु॥ एतिवोषधारसमंडरमार॥ अवमंडूकोगुण
 कहु॥ पांडुरोगजोक्षपरोगजोकासोउप्सासो॥ जोफियोकलेजाजा॥ जलोदरजा॥ हर्शजा॥ मंदरि

३३

15

10

5

जो॥ एकेसप्रमेहजो॥ सोवर्णजसीकायाहो॥ सर्वव्याधिरहो॥ इतिमंडरकल्पसमादा॥ ॥ अथमा
 डकल्या॥ दुधमाडषानुरसपर्दीजा॥ त्रिफलावूर्णमाडषानुनित्यज्वरजा॥ पानरसमाडषानुमंदरजा॥
 त्रिफलावूर्णमाडषानुआषादुषाजनु॥ गुडघृतमाडषानुआषाकोग्रहजा॥ वववूर्णमाडषानुमु
 षरगजा॥ अलायामाडषानुवायुगुलजा॥ दधिमाडषानुहर्शजानु॥ महमाडषानुजलोदरजा॥
 मरिचमाडषानुनिब्यारफुटा॥ रजा॥ कैवीरविजमाडषानुमुषरोगजा॥ वायुविडंगमाडषानुदन्त
 शूलजा॥ गुडमाडषानुहियोडहदोजा॥ मर्कलुनषानुअजीर्णजा॥ माडभकामिलोषानुअस्थि
 कोसालफुका॥ गोतमाडषानुसनिजा॥ पलासकविजमाडषानुकोदुषाजानु॥ मैसाजमाडषा
 नुशिरवथाजा॥ काजिमाडषानुपेटशूलजा॥ साधनमाडषानुरक्तप्रतिसारजा॥ दुर्वीरसमा
 डषानुअजीर्णजा॥ द्विउन्मावूर्णमाडषानुगानुनिकोहो॥ जवानुमाडषानुकोसोउप्सासो॥ वि
 तावूर्णमाडषानुमंदरिजजा॥ ॥ इतिमाडकल्प॥ ॥ अथसमुद्रफलअनुयामलिषते॥

घोटि

समुद्रफलमरिचना सदिनु अथोत्तरे सैकिरा विशउत्तरे ॥१॥ समुद्रफलहले दोघु पिसिगाडला
 वनुगाडजा ॥२॥ समुद्रफलनिबुलीवनु सर्वघटिरा जानु ॥३॥ समुद्रफलवासिपानिघोटिना सदिनु
 शिरव्यथाजा ॥४॥ समुद्रफलनिगुंडिरस अंजनगर्नु फूलो जा ॥५॥ समुद्रफलनिगुंडिरस अंजनगर्नु
 शिरव्यथाजा ॥६॥ समुद्रफलसिद्ध धघसिमुषलेपगर्नु मुषव्यथाजा ॥७॥ समुद्रफलगारघृत
 जनगर्नु आषाका जालजानु ॥८॥ समुद्रफलगारघृत धघसिपिनु आतकोषटिरो फुटा ॥९॥ समुद्र
 फलवासिपानिपिष्टे षाजा ॥१०॥ समुद्रफलदूधघोटिलावनुन पातकोषटिरो पाका ॥११॥ समुद्रफल
 काजिघसिकानघालनु कानकविरिकजा ॥१२॥ समुद्रफलकाजिघोटिपिनु अजीर्णजा ॥१३॥ मोड
 सिजा ॥१४॥ समुद्रफलवजो ना सदिनु भूतडा इनिजा ॥१५॥ समुद्रफत्रिफलारसदिनु सन्निजा ॥१६॥
 समुद्रफलकाजि अंजनगर्नु त्रिमिरिजा ॥१७॥ समुद्रफलतिलतेल अंजनगर्नु आषादुषाजनु
 ॥१८॥ समुद्रफलवाक्त्रिदूध अंजनगर्नु आषाकोषोइरा जा ॥१९॥ समुद्रफलवाक्त्रिमूत अंजनगर्नु

३४

निषगर्नु आषावाल आव ॥२०॥ समुद्रफलसिवासिरसना सदिनु मुदाहा जा ॥२१॥ इति समुद्रफल
 प्रतिकारसमादा ॥ अथ विताप्रतिकार ॥ अरिडको तेलसिधो मर्दनगर्नु सुनियुका जा ॥
 पिपलाजवानिसुषे सैजनहरडावरडा ॥ इति समकारिपिसिधानु अस्त्र सुनियोका जा ॥ वि
 तीभाज मरिचभागा पिपलाभा गरसुठो भागर वजो भागर वाटल्या त्या भागानु ग्र्या भाग ॥ मं
 गिराजभागर जवानु भाग हरडो भागर सिधो भागर र्णितेला इपि सठवस्त्र गलिते जा ॥ तिन
 अंगुलप्रमाने धानु तातापानि संगमेदाग्निजा ॥ वायुगुल्मजारसंगरहनि जा ॥ गारघृतसंगषा
 नु फलजा ॥ तिलतेल संगषानु वायुजा ॥ करुवातेल संगषानु पित्तश्रेष्ठाजा ॥ पुनि करुवातेल सं
 गषानु मर्दनगर्नु सर्वसन्निपातजा ॥ गाकडुवातेल संगषानु स्त्रिदोषजा ॥ गुडसितषानु पित्त
 जा ॥ २॥ महसितषानु रक्त अतिसारजा ॥ ३॥ मुत्रा कापात संगषानु कमल रोगजा ॥ ४॥ भलया
 संगषानु जलोदरजा ॥ ५॥ इति विताप्रतिकारसमादा ॥ अथ सिलाजु प्रतिकार ॥ सिलाजुपि

20

15

३५

सिवस्त्रगतितगर्भु॥ गौतरुजावनुदिन॥ हरजापिपलासिलाजुमहसितपानुपित्तरोजजा॥ १॥ अक्ल
 सिलाजुषानुकासाउसासाजा॥ २॥ कटारवासकसिलाजुमहसंगषानुसर्वप्रमेहजा॥ ३॥ अक्लसि
 लाजुहलेदोमहसंगषानुप्रमेहजा॥ ४॥ षयरसिलाजुभलायोमहषानुहर्षाजाना॥ ५॥ त्रिफलासिला
 जुषानुपेडरोगजा॥ ६॥ पिपलासिलाजुपिपलामूलमहषानुफियोकलेजोजा॥ ७॥ हिगसुठोसिला
 जुमहषानुपेडकोवहजा॥ ८॥ तितोअरिडकोजडोसिलाजुमहषानुपेडकोशूलजा॥ ९॥ सिलाजुभे
 गिराजतिलगार्घृतसंगषानुवलियलितमाकायापुष्टहो॥ १०॥ सिलाजुजेठिमहश्रेराजपिसमः
 हसितलेपग्रन्थे॥ कुडुदोघावथाका॥ ११॥ षषारदामुषवाय्लोहआवतसाषयरोगभनु॥ वरडा
 सिधोसिलाजुमहषानुपेडरोगजा॥ १२॥ ॥ इति सिलाजुकल्पसमाप्ता॥ ॥ अथ मुशलिपुण्याजा॥ ३५
 मुशलिगौतषानुनित्पजरजा॥ १॥ मुशलिमहषानुनित्पजरजा॥ २॥ मुशलिबिहिकटारकोः
 फलषानुपेडशूलजा॥ ३॥ मुशलिभैगिराजेषानुकासाउसासाजा॥ ४॥ मुशलिदहिषानुशः

३५

१०

५

शीरलावनुदुभिषजा॥ ५॥ मुशलिदुधषानुपुष्टहो॥ ६॥ इति जागा॥ ७॥ मुशलीकेलाषानुशीरव्याजा
 ॥ ८॥ मुशलीतेलषानुशीरपुष्टहो॥ ९॥ मुशलीलेसुनषानुगाडजा॥ १०॥ मुशलीदोहिषानुपांडुरोग
 जा॥ ११॥ मुशलीकुभिंडोषानुहियोडहदोजा॥ १२॥ मुशलीपिपलाषानुफियोजा॥ १३॥ मुशलीपिपल
 मरिखषानुआषाडहदाजानु॥ १४॥ मुशलीभैगिराजरषानुहर्षाजानु॥ १५॥ मुशलीजवानुषानुष
 वाजुजरजा॥ १६॥ मुशलीमहीषानुपेडकाजुकाजानु॥ १७॥ मुशलीनिगुडिषानुशीरपुष्टहो॥ १८॥
 मुशलीवाक्रिकादुधषानुशीरपुष्टहो॥ १९॥ मुशलीभागषानुसवेवायुजा॥ २०॥ मुशलीवितो
 कानघालनुकानपात्तोतिकोहो॥ २१॥ मुशलिअक्लषानुलेकविषनलाजा॥ २२॥ मुशलीषा
 डषानुप्रमेहजा॥ २३॥ ॥ इति मुशलीपुण्यासमाप्ता॥ ॥ अथ भस्मेश्वरकिमेलानि॥ ३६
 डकाडुपाविरिलुनभर्तुहाडिघालिषुषवुजनुप्रहरवारह॥ १॥ अग्निदिनुतवभस्महो॥ २॥ लासे
 भस्मभागमरिखभाग॥ सुठोभाग॥ विहिभाग॥ अकरकराहाभाग॥ जाइफलभाग॥ पिप

20

२६

15

लाभा गरा एतिसम गुरि पिसि व स्व गलित गर्नु तिन अंगुलि प्रमान पा न्ना फि पो जा । जल ग्रह जा रका
 सोड फा सो जा रषय रे जा ४ अजीर्न जा ५ वायु गुल जा ६ पांडु रोग जा ७ ॥ इति भस्मेश्वर किमेला
 वनिसमाद्य ॥ अथ वंगेश्वर किमेला वनि ॥ जा र पत्रि । जा र फल लवा गा अलै वि । सुठो । मखि । सौ पा जि
 रो । माल का गुनि । वज्र भाग । धतुरा का विज । जवानु । अकर क र हा । हिर्वि । ह र जा । अवला । अफि मा । पिपला
 । पिपलि मूल । कठार । विहि । केदार सुठो ॥ इति वंगेश्वर किमेला वनिसमाद्य ॥ ॥ अथ अउला जरा प्रः
 तिकार ॥ ॥ गुर्जो सुठो उमालि पिनु जरे जा ॥ ॥ अरिड को जडो कठार को जडो सुठो गुर्जो तितो ॥ इतिः
 आलि पिनु अउलो जरे जा ॥ ॥ हि गजि रो पिसि गार घृ त सं म ना सदिनु । अउलि जरे जा ॥ ॥ कै रुवाः
 न गु र्यो कडु कि सुठो वलु तितो धनिउ ॥ इति वोषधि उमालि पिनु ॥ अउलि जरे जा ॥ ॥ सुठो वजो पि
 पलि वटु त्या त्या विहि कठार सता वरि वलु न गु र्यो ॥ इति उमालि पिनु अवली जा ॥ ॥ वाडु त्या त्या उ
 मालि पिनु अलि जरे जा ॥ ॥ धनिउ न गु र्यो सुठो कठार । इति वोषधि उमालि पिनु अलो जरे जा ॥ ॥

३६

10

5

अरिड को जडो हडा वजो सुठो ॥ इति सम गरि व स्व गलित गर्नु गुड का पा नि संग पिनु ॥ अवला प्रमाः
 न पा नु । अउला जरे जा ॥ ॥ वाक व्या का फल को को को वा स क को को को कठार को जडो देवार को वे
 को वा स क को को को का र को जडो देवार को को को सुठो ह र डा ॥ इति पिसि व स्व गलित गर्नु । विराल प
 द प्रमान पाड संग पा नु ॥ अउलि जरे जा ॥ ॥ सिवालि वा सक न गु र्यो ॥ इति सम गरि उमा नु मखिः
 पिपला सुठो ह र डो षय र्ज र फल लवा गा ॥ इति मिसि पा न दिनु । अलि जरे जा ॥ ॥ ॥ इति अउ
 ला जरा प्रतिकार समाद्य ॥ ॥ अथ भस्मेश्वर नाम ॥ विष भाग । मखि भाग । पिपला भाग । सुठो
 भाग ४ भैसा पार भाग १६ ॥ इति पिसि व स्व गलित गर्नु । अदुका कार स घालि षले नु रति प्रमानः
 आ दा संग पा नु ना सदिनु जरे जा ॥ ॥ मखि संग पा नु जरे जा ॥ ॥ ॥ वोलानि संग पा नु उप तेलि जा
 ॥ ३ ॥ मह संग पा नु अतिसार जा ॥ ॥ ॥ चुक संग पा नु का सोड फा सो जा ॥ ॥ ॥ निषै पा नु वायु जा ॥
 ६ ॥ मंदा ग्नि जा ॥ ॥ पेड को वह जा ॥ ॥ ॥ इति भस्मेश्वर नाम समाद्य ॥ ॥ अथ नह रूवा उपचार ॥ प
 देवा कि विविष्टि पा नु न ह रुवा जा ॥ ॥ ॥ तुनरा ज प द कि उदिका जि पि सि न ह रुवा का सष वा ध नु

नहक वाजा ॥ १ ॥ मैसा गोवर पा नी घालि फाय नु नह रु वा जा ॥ २ ॥ इति नह रु वा उपचार समा
प्त ॥ ॥ अथ नेत्र रोग उपचार ॥ माषा कि वीर्य घर को धु वा सो सि द्ध र गा इ च त का सा का चा
ल घालि ता वा ले घ स नु ला षा प ट ल ला इ नु म्मा षा षो र रो जा ॥ ३ ॥ वट का पा त को भस्म म
रि व पि प ला सु ठो सि धो न व नि स ग ष ल नु ला व नु म्मा षा ड ह दा जा नु ॥ ४ ॥ षा ड डो जा
जे ठि म ह वा क ज ल द्यो ल नु म्मा षा म्भं ज न ग नु ॥ म्मा षा ड ह दा जा नु ॥ ५ ॥ रु चो सि धो
सु ठो र क्त चं द ना र्थ ति पि सि व स्त्र ग लि त ग नु का जि सि त पि सि म्भं ज न ग नु म्मा षा पा
का जा नु ॥ ६ ॥ स र्व ड ह दा जा नु ॥ त्रि फ ल भं गि रा ज म ह षा नु त्रि मि रा जा ॥ ७ ॥ का वो
ह ले दो पु नः न र्वा र्थ ति पि सि व स्त्र ग लि त ग नु च त म ह स ग षा नु ॥ म्भं ज न ग नु ॥ म्मा
षा ड ड ह दा जा नु ॥ ८ ॥ पि प ला म रि व सु ठो भं गि रा ज का वो ह ले दो नि व सु चो ॥ र्थ ति स
म ग रि सु का इ नु त व पि स नु व स्त्र ग लि त ग नु क रु वा ते ल स ग ष ल नु ॥ च त स ग म्भं

ज न ग नु सु लो जा ॥ गा का र्त्तिकि म ह म्भं ज न ग नु त्रि मि रि जा ॥ ९ ॥ गा इ गौ त म्भं ज न ग नु
चि प टा जा नु ॥ १० ॥ वा कि ज ल म्भं ज न ग नु म्मा षा का प ट ल का टा ॥ ११ ॥ इति नेत्र रोग प्र
ति कार समा प्त ॥ ॥ अथ ष र इ प्र ति कार ॥ सि म ल की वो क्रो सु ठो ज वा नु ॥ म्भं ज न
र्थ ति पि सि म्भं ज न ग नु व ला प्र मा न षा नु ॥ ष र इ जा ॥ १२ ॥ रा यो धि व षा नु ष र इ जा ॥ १३ ॥ सि व लि
का या सु का व नु व स्त्र ग लि त ग नु गा इ त क स ग षा नु ॥ ष र इ जा ॥ १४ ॥ क डि नु वा स क
वा सि पा नि षा ड र पा लि पि नु ष र इ जा प्र मे ह जा ॥ १५ ॥ पु न र्वा क डि नु पि सि व स्त्र ग
लि त ग नु वा कि का इ ध सु का व नु ॥ व डि ग नु ॥ म्भं ज न ग नु व ला प्र मा न षा नु ॥ ष र इ जा ॥ १६ ॥
दू ध सि रा डि वि ज षा नु ष र इ जा ॥ १७ ॥ मु त डा ह जा ॥ गा प ला स कि षो ला पि सि व स्त्र

20

३८

राम

गलितगर्नुषाडसंगषानुषराइजा॥॥मुत्रडाहाजा॥सिमलकोषोटीदधिषाडषा
 नुषराइजा॥॥॥षाडमधुसूक्तचंदनचौलानिसंगषानुषराइजा॥॥अपासार्गसूर्य
 पिपलामधुगुडषानुषरायीजा॥॥तिलकोमस्ममहसूषषानुषराइजा॥॥वा
 वलपचालनुतिसरोपानिराषनुतवसोचवलानिषाडषानुषराइजा॥॥पषानेमे
 दववलानिपिसिषानुषराइजामुत्रडाहाजा॥॥आजिरोमुटनुदधिमहघालनुमाठा
 गरिपिनुषराइजामुत्रडाहाजा॥॥पाजाइकोजडोवाक्रिकोदूधपिसिषानुदिनुले
 हिमुतदोजा॥॥॥निवसूक्लाषाडमहासमगरिषानुषराइजामुत्रडाहाजा॥॥अ
 वलाहरडाषयरनगुर्थीसुवागफुलइपिनुमहसंगषानुषराइजा॥॥काचो
 हलेदोहरडावरडाअवलागुवालककरिकोजडो॥॥वकाइनाकोदाला॥॥सतिधिसिव

वे०

३८

15

10

5

अगलितगः नुमहसंगअवलाप्रमानषानुषराइजा॥॥मुत्रडाहाजा॥॥॥इतिषराइप्रतिकार
 समाप्त॥॥अथयतपिडाप्रतिकार॥पतिउजाकिगुदिदातकाक्षेत्रघालनुदातकाकिडाजा
 न॥॥॥सेतवरुवारिदातघालनुदत्तनुजा॥॥॥अजैपालकिद्वालारिदातकाक्षेत्रघा
 लनुदातपिडाजा॥॥॥वाषोअफिमदातकाक्षेत्रघालनुदातवथाजा॥॥॥कोदरसुठोएति
 दातकाक्षेत्रघालनुयुकआवतआफालनुदातपिडाजा॥॥॥मुदुरमुलोदातकाक्षेत्रघा
 लनुदातवथाजा॥॥॥सुमयाकोजडोदातकाक्षेत्रघालनुदातपिडाजा॥॥॥सिउंडकोजडोर
 तिदातकाक्षेत्रघालनुदातकाकिराऊनु॥॥॥विताकोजडोदातकाक्षेत्रघालनुदत्तनु
 जा॥॥॥षिडाकोजडोदातघालनुदातवथाजा॥॥॥रतिगुजाकोजडोकानवाधनुदत्त
 नुजा॥॥॥सिस्नाकोजडोका नवाधनुमागलकाकादिनदत्तनुजा॥॥॥कटाइकाविजचरण

20

वे०
३५

15

माडसंगलावनुसियलोदकुनुजा॥१॥ वषरजारकापातलवागकप्ररआवकापातपिसिदंदो
 साघसनुसियलोदकुनुजा॥२॥ काकजंघाकोजडोदूधसंगघसनुसियलोदकुनुजा॥३॥
 मरीवसिधोविडरकापातपिसिदातघसनुसियलोदकुनुजा॥४॥ कटापिकाविजकरुवाते
 लसंगपिसनुधुवारगनुदातकिडाकडनु॥५॥ कावद्धाकोजडोगाश्चतसंगववारयतसर्व
 कुनुजा॥६॥ नागवेलिकोपातजारकोपातवावनुदांतहलंनिकाहुन॥७॥ इतिदंतपिडा
 तिकारसमाप्ता॥ ॥अथअतिसारप्रतिकारः॥ रन्निगहतरुकावनुपिसिदहिसंगषानुदि
 नुरहदोअतिसारसरह॥८॥ पीषानभेदद्विउन्यापिसिवस्त्रगलितगनुदधिसंगषानुदि
 रजा॥९॥ वरिकाविजषाडदधिसंगषानुदिनाअतिसारजा॥१०॥ भलायाघृतपुटनाअफि
 मतिलमहसंगपिसिअवलाप्रमानाषानदिनुसर्वअतिसारजा॥११॥ घुरसानिजवानिअफि

राम
३८

10

5

मलवागजारफलमरिवषाडाअतिवोषधसमगरिपिसनुविणलापदप्रमानषानुसर्व
 अतिसारजा॥१२॥ वितोर्गंडाडनुपषानभेदजुवानुमरीवपिपालासिधोअतिसमगरिपि
 वस्त्रगलितगनुविणलापादप्रमानषानुसर्वअतिसारजा॥१३॥ मोकलागअन्नरुचमासिपदोर
 ह॥पेटपुषदोरहाआवकोछालापिसिदहिसंगषाठ॥आमअतिसरजा॥१४॥ रगतपदोर्जागा
 पषानभेदजारफलद्विउन्याधतुराकाविजभागोअफिमपिसिमहसंगषानुलोहुहडान्या
 तिसारजा॥१५॥ वावलमुजिभागामासमुजिभागकपासविजमुजिभागजवानुभागसौवलभा
 ग॥अतिसमगरिपिसिषानुलोहिहग्दोजाहावावलमुठि॥वितोतोलासुहोतोला॥अति
 मिसिपकाउजाउलोगरिषावदकुष्टद्वेदोरहा॥अफिमजारफलभामोआवकाकोइला
 किगुदि॥अतिसमगरिषाडसंगषानदिनुअथवामहसंगषानुसर्वअतिसारजा॥१६॥ कप्र

20

वे०
४०

कस्तुरि म्रफिम जाइ फल लवाग धतुरा किभा गो॥ सति मे लाइ पिछ्छा अवला प्रमान मह संग वा
 नुा सर्व सति सा रजा लवाग जाइ फल लका गुनि वग भाग भागो धतुरा का विज म्रफिम ॥
 ति वो षधी पिसि वस्त्र गलित गुनु गुड कि मह षन्नु वडु रा प्रमान वडि धनु वडि प्रात वडि सा
 जवा नुसर्व स्रसा रजा ॥ १॥ दाम को वो को साला कि एल जाइ फल जवानु म्रफिम पषा लभे दास
 तिस मगरि पिसि वस्त्र गलित गुनु तव वा नुपेट रुदो रह ॥ १४॥ का करि सि गो धाइ रा का फल कु
 सुम को फल जवानु सिमल को घो टो ॥ सति सम गरि वस्त्र गलि गुनु द हि संग वा नुा सर्व स्रतिसा
 रजा ॥ १५॥ जवानु के ला को ला को फल सुठो ॥ सति सम गरि पिस नु ॥ गार का द हि संग वा नुलो
 हि दे दो जागा ॥ १६॥ इति स्रतिसा रप्रतिकार समा सा ॥ अथ उपर्त लिप्रतिकार ॥ पात्र जाइ पत्रि म्रले
 वि ॥ सति सम गरि पिसि वा नुा पउ तेलि जागा ॥ धर सो सिधो पिसि वस्त्र गलित गुनु वा सिप
 निर्या लिपि नु ॥ उपर्त लि जागा ॥ कवल फल कि गुदि सुपारी गुवाल का क रिका विद्या पिपि

दाम

४०

15

10

5

षा नु। उपर्त लि जागा ॥ १७॥ गाइ का घ तम हसि चो मुट नुा कालो गुर्जो म्रले विषाड संग पिसि वा नुा उ
 प तेलि जागा ॥ १८॥ गुर्जो वेल कि गुदि उमालि ता नो गरि मह संग वा नुा उपर्त लि जागा ॥ १९॥ ला या का सा
 तुल वा ग म्रले वि ॥ सति पिसि मह संग वा नुा उपर्त लि जागा ॥ २०॥ ला या का सा तुम हवा ड ॥ सति मुग
 ना पानि संग वा नुा उपर्त लि जागा ॥ का गु ना का सा नु श्री घंड पिपला ॥ सति सिमल संग वा नु
 उपर्त लि जागा ॥ २१॥ ल वाग जाइ फल मु यो ॥ सति पिसि पानि संग वा नुा उपर्त लि जागा ॥ २२॥ सिमल को
 वो को पिसि पानि संग वा नुा उपर्त लि जागा ॥ २३॥ ल वाग जाइ फल म्रले वी मु यो ॥ सति सम गरि पिस नु
 ॥ उपर्त लि जागा ॥ २४॥ का वो हले दो जाइ फल म्रफिम ॥ सति सम गरि पिस नु वा ड वो ला नि संग वा
 नु। उपर्त लि जागा ॥ २५॥ इति उपर्त लिप्रतिकार समा सा ॥ ॥ अथ व्यकारी प्रतिकार ॥ हरि न को सी
 ग सहस्र भेद संग वनिर्वि शिवा सिपानि घो टि पिनु ॥ व्यकारी जागा ॥ कला का सा तुम हवा
 उघ तप निरया लिपि नु। व्यकारी जागा ॥ कयर को वो को कोइ राल को वो को वो स को वो को सि

20

15

४१

वे०

मल को फुल्ला सति रूपा गरि वस्त्र गलित गनु मल संग घानु ॥ वकारि जा ॥ ३ ॥ हरदा मल षाडसं
 ग घानु ॥ वकारि जा ॥ ४ ॥ जा मु ना को वो क्रे ॥ आव को वो क्रे ॥ सति पि सिसा सि पा नि सी ग घानु ॥ व
 कारि जा ॥ ५ ॥ ल वा गर स मुद्र फल ॥ सति कुटि पा नि सी ग उ माल नु पि न दि नु ॥ वकारि जा ॥ ६ ॥
 रति व कारि प्रतिकार समा द्या ॥ ॥ अथ उषाल पुनिकार ॥ ॥ सोवल भाग सिधो भाग ॥ जवानु भाग
 ॥ ॥ नृस गरि मल द्वार ना लि दि नु पे ट को नि रं ध र जा ॥ ॥ मा न्यो पा रो गं ध क र स मे ग नु ति ता विं डा
 को र स पू ट दि नु पु टै प्र ति स र्ग पु ट ॥ सु का व नु सु व ला को र स घा ल नु ता ता भा डा घा लि ध र्त्त नु मा ए म
 स पु मा न घा नु पे ट को आ प दा क फ पि त्त स व उ षा ल हो ॥ मय फु ल पि सि व स्त्र ग लित ग नु ता ता पा
 नि सी ग पि नु उ षा ल हो ॥ लु न सि उ ट को दू ध पु ट ॥ दि नु मा स र प्र मा ण गा र का दू ध सं ग पि नु उ
 षा ल हो ॥ १ ॥ क ल वि र ॥ उ ड ति गु ड पि सि षा नु उ षा ल हो ॥ ४ ॥ व जो म ह ता ता पा नि सी ग घा नु उ षा ल हो
 ॥ ५ ॥ द धि भा त घा नु ॥ उ षा ल स्थ भ हो ॥ ६ ॥ तालि वे र नि ला यो धा ॥ ति वु फे सा मि र नु प्र भा त घा नु

४१

१०

5

उ षा ल हो ॥ गा द धि भा त घा नु उ षा ल रह ॥ इ ति उ षा ल पु ति कार समा द्या ॥ अथ नि रं ध प्र
 ति कार ॥ सोवल भाग सिधो भाग ॥ जवानु भाग ॥ नृस गरि मल द्वार ना नि ग नु घा लि य
 त नि रं ध र कु का ॥ ॥ ज स्र जि र्ण हे पे ट ट टा व उ धो उं भो न हो सो वि ष अ जि र्ण भ नु ॥ ता तो
 पा नि लु नु उ मा लि पि नु ॥ पे ट को नि रं ध र जा ॥ १ ॥ लु न रा ति गे डि अ पा मार्ग को ज टो ग उ त सं
 ग पि नु ॥ पे ट को नि रं ध र जा ॥ २ ॥ ह र डा षा ड ता ता पा नि सं ग पि नु पे ट को नि रं ध र जा ॥ ३ ॥ सि
 ला नु ह र डा सि धो गो सु रो ॥ स ति पि सि ता ता पा नि सं ग घा नु ॥ पे ट को नि रं ध र जा ॥ ४ ॥ अ पा मार्ग
 को ज टो ता ता पा नि सं ग पि नु ॥ पि सि नि रं ध र जा ॥ ५ ॥ का ले जि रो ज वा नु आ धां जा डा को
 ज टो ॥ मु ठो नि वु कि द्वा रा ॥ स ति पि सि ग उ त सं ग पे ट ले प ग नु ॥ म रु सो व ल ज वा हि ग कु ट
 ॥ स ति पि सि ता ता पा नि सं ग घा नु ॥ पे ट को नि रं ध र जा ॥ १ ॥ वा स का पा त कु भिं डा को गु दि
 ह र डा क टा रा ता तो ग रि पि नु ॥ पे ट को नि रं ध र जा ॥ २ ॥ तिल को भ स्म म ह दू ध सं ग घा नु ॥ पे ट

४५

को निरंधर जा ॥ १ ॥ भागोल न पका वनु भला गरिपिसिता तो गरिपेटले पग नु । आधा पो
 ल्या को हरडो अजैपाल मरिच सम गरिपिसि गुडी को गर्नु ताता पानि संग घानु । पेट को निरं
 धर जा ॥ १ ॥ ॥ इति निरंधर प्रतिकार समाप्त ॥ ॥ अथ वंधाकरण प्रतिकार ॥ दुरवर्ष का
 कुमिंडा को जडो वाविया को जडो सनिवार निद्रुतः नु प्रभात आदित्य वार दुरवोषधि पि
 सिव स्त्रगलि ॥ भगनु । अस्त्रि आरुतार ग्रास मित्र घालि घानि दिनु ॥ सो अस्त्रि को रजह
 ॥ सो अस्त्रि वारि हो ॥ पाचर च्याउ वा क च्या का फल को वो क्रोथारि भेडि को पित्र गुड कुसुम
 का फल को पानि घालि पि सि देह ला वीसा वाहिर मुख गरिषा अस्त्रि वारि हो ॥ इति वंधा क
 रण प्रयोग ॥ अथ वात लक्षणम् ॥ आग भाग ज ह्मा रला ग जा डो ला ग पेट सा ग ड को हि
 या चस्का उठ नु । डर कु ह्मा भाग न्ना पा घु र छा डिय न्ना ॥ वगा रा दुष । कान वा ज न्ना । तलि
 पुः डि दुषे मुड पिडा हो ॥ मुख मञ्जो हो ॥ आघा रा ता कु न्ना । आग पञ्जो हो ॥ र स विद्रु होत वात

राम
४२

ज्वर भन्नु ॥ वात ज्वर निवा योग नु । गार घ मर्दन ग नु । अग्नि न पाव नु । घ त भात घान दिनु
 ॥ भेडा का मासु को गोला दिनु ॥ इति वात ज्वर को पथ ॥ ॥ अथ वात ज्वर वौषध ॥ अरिड को जडो
 ॥ कटार को जडो ॥ विहि को जडो जि र गो घु रो । न गु र्थो । पु न र्न वा । सु ठो ॥ रति उ मालि पि नु । वा
 त ज्वर जा ॥ इति वात ज्वर प्रतिकार समाप्त ॥ ॥ अथ पित्त ज्वर लक्षणम् ॥ पेट डा हा हो मुख सु
 का द दो सा मुख लो हु आवा ना प्रो कुट । शरीर उ हा कहिलै जरो या का मु द्वा आवा शरीर प्रसे
 द हो ॥ सन्निपात कि ज सि धिय रि आ वै । पेट खोलिया । आवा न ष धिय ला कुं न्ना । मुख गंध आ
 वा मुख ति तो हो ॥ र स विद्रु हो त पित्त ज्वर भन्नु ॥ ॥ पित्त ज्वर उपास गनु । श्री घंड क पर मर्द
 न गनु । वासि पा नि दिनु । चंद्र मा प र्श नु । प्रात ति तो ज म र पि पि नु । नि को द डो हो त उपास ग
 नु दि न्ना नि द्रा हो त उपास दि न्ना ॥ त व पित्त ज्वर कि पु डि ॥ ॥ कै रु वा न गु र्थो कटु कि ति तो व
 लु ध नि उ । रति उ मालि पि न दिनु । पित्त ज्वर जा ॥ ॥ इति पित्त ज्वर प्रतिकार समाप्त ॥ अथ क

20

४३
वे सं०

फज्जर लक्षणम् ॥ सिर आलस्य हो ॥ मूत्र वा यो न पचा ॥ आषा उमो न कुन ॥ शरीर जा डो हो ॥ ज्वर
 मंद हो ॥ का सोला गा ॥ आग टिलो हो ॥ मुख गुलियो हो ॥ थुक थुकिला गा ॥ आग लाटि हि र हा ॥ आग
 विला र हो ॥ मूत्र गगरु वो हो ॥ आषा नख हरि या कुन ॥ सन्निपात सेति आवा मिय लवस्त न जा ॥
 घाम रुवै ना ॥ रसा चिद्रुं त कफ ज्वर जा नु ॥ रुघो सु को क सा इलो ॥ ति तो पिरो ॥ ठरै ॥ सनिक फ
 ज्वर को प य ॥ अथ सन्निपात ज्वर लक्षणम् ॥ आग काटा उठनु ॥ दिन निद्रा ला गा ॥ आवा रा
 ता हुन ॥ आषा आसु आवा ॥ जिह्वा फुटा ॥ रसा चिद्रुं त ॥ सन्निपात ज्वर जा नु ॥ सन्निपात ज्वर को
 श्लेष्मक हनु ॥ गुर्जो न गुर्धो धनि उ सु ठो के रुवा ॥ रति उमालि पिनु ॥ सन्निपात ज्वर जा ॥ ॥ राम
 अथ मूर्द्धा लक्षणम् ॥ अवेत हो ॥ तर्ध एवा लुगा उ धि ना ॥ आग घटि रा उठनु ॥ दिन निद्रा ला गा ॥
 आषा तिल मिला हुन ॥ रसा चिद्रुं त मूर्द्धा ज्वर जा नु ॥ मूर्द्धा ज्वर को मंत्र ॥ तय नु फुल सि ॥ ४३
 यलावल घाल नु ॥ कुं कुम ० क पूर ० क स्फुरि ० गो लोचन ० अग र ० श्री षंड ० ॥ रति मंद न

15

10

5

गर्नु ॥ मूर्द्धा ज्वर जा ॥ अस्पोषधं ॥ सुठो ॥ वज्रो धिप ला ॥ वा दुल्पा ला ॥ विहि क ठा र पिप ला ॥ कुरिलो
 व लु ॥ न गुर्धो ॥ रति उमालि पिनु ॥ मूर्द्धा ज्वर जा ॥ रति मूर्द्धा ज्वर प्रयोगः ॥ न वा ते न वि ना मूर्द्धा
 न पित्रे न वि ना भ्रमः ॥ न क फे बि ना हे द्रुं न म म ले न वि ना ज्वर ॥ अ जै पाल भाग विष भाग ॥ म
 रि व भाग ॥ पिप ला भाग ॥ सु ठो भाग ॥ सु हा ग भाग ॥ रति सम गरि पिनु ॥ मा सा ॥ प्रमा न गु ड संग वा
 नु ० प घाल हो ॥ संग्रह ती जा ॥ आ म स ल जा ॥ सर्व रोग निवार ॥ ॥ इति न री हि ह नाम ज रां कु
 या ॥ अ जै पाल भाग ॥ पारो भाग ॥ गंध क भाग ॥ सु हा ग भाग ॥ सु ठो भाग ॥ म रि व भाग ॥ पिप ला भाग ॥ र
 ति सम गरि पिनु ॥ रति २ प्रमा न वा ड सी ग घा नु ॥ सर्व ज्वर जा ॥ सर्वाङ्ग नाम ज रां कु श स मा य ॥
 अ जै पाल भाग ॥ पारो भाग ॥ गंध क भाग ॥ सु हा ग भाग ॥ इ गु ल भाग ॥ रति सम गरि दं ति का र स घा
 लि ष ल्प नु ॥ गुं जा प्रमा न व रि वा ध नु ॥ व डि ॥ घा नु ॥ सर्व ज्वर जा ॥ सु र रि ना म ज रां कु श स मा य ॥ अ
 लै पाल भाग ॥ पारो भाग ॥ गंध क भाग ॥ इ गु ल भाग ॥ व र डु भाग ॥ हर ड भाग ॥ रति पि स दं ति को र स

20

15

घलिषर्लनु रदि । बाडसंगषानु । सर्वज्वरजा ॥ महेन्द्रनामज्वरं कुश ॥ ४॥ अत्रैपालभागाने
 धकभागान्गुलभागामारलताको भागचितो भागपिपला भागान्हरडाभागा ॥ सुवला भागा ॥ ५॥
 ४४ केतिसमगरिपिस ॥ भंगिराजरसघर्लनु । रतिप्रमानषानु ॥ सर्वज्वरजा ॥ भूतनामज्वरं कुश
 ॥ ५॥ अत्रैपालभागान्गोभागा गंधकभागामरिचभागपिपला भागान्गुवागभागान् रतिसमग
 रिपिहनु । रतिदुर्प्रमानषानु ॥ अष्टप्रकारकोज्वरो जा ॥ ६॥ पंचवक्त्रनामज्वरं कु
 शजा ॥ अत्रैपालभागान् अरिडविजभागपिपला भागामरीचभागान्गुवागभागान् रतिपिसिभंगिरा
 जरसघर्लनु गुजा प्रमानवडिगनु । दिनखानु । सर्वज्वरजा ॥ अरिडिनामज्वरं कुश ॥ अथ भं
 गिराजकल्पः । भंगिराजभलायाषानु । कुष्ठरोगजा ॥ ७॥ भंगिराजहरडाषानु । जलोदरजा ॥ ८॥
 मरुसंगषानु । अतिसारजा ॥ ९॥ तिलसंगषानु । घलजो जा ॥ १०॥ कटुसंगषानु । अउला ज्वरो जा ॥ ११॥

राम

४४

10

5

त्रिफलासंगषानु । सिररोगजा ॥ ६॥ दाषसंगषानु । गानुथातिश्रावा ॥ ७॥ चित्तसितषानु ।
 मंदगिजजा ॥ ८॥ तिर्गुडिसंगषानु । अउला ज्वरजा ॥ ९॥ भंगिराजकोज्वरो कानवाधनु ।
 कर्णरोगजा ॥ १०॥ भंगिराजकोज्वरो विषकानवाधनु । दत्कनुजा ॥ ११॥ रतिभंगिराजकल्पस
 माया ॥ अबाहुल्यात्पाकल्पः ॥ बाहुल्यात्पाद्यतसंगषानु । पित्तरोगजा ॥ १२॥ शरीरपुष्टहो ॥ १३॥
 नजागदि रन्दिजागा ॥ १४॥ अजागलसंगषानु । मन्निजा ॥ १५॥ वाक्त्रिदूधसंगषानु । पेठसुलेजा
 ॥ १६॥ वाक्त्रिकोतसंगषानु । शिरस्थथाजा ॥ १७॥ श्राघातिरिभिरीजा ॥ १८॥ तातोगरिपिनु । पित्तजा ॥
 १९॥ गाइकादोहसंगषानु । कमलरोगजा ॥ २०॥ मरुसंगषानु । अतिसारजा ॥ २१॥ दाहिंसंगषानु । र
 न्दितेजहो ॥ २२॥ पिपलासंगषानु । स्वरति कोहो ॥ २३॥ त्रिकुटासंगषानु । कासोउप्सासो जा ॥ २४॥
 गहतसंगषानु । अउला ज्वरो जा ॥ २५॥ सिवालिसंगषानु । वाउथो जा ॥ २६॥ वलुसंगषानु । यश
 दु रोगजा ॥ २७॥ गुर्जसंगषानु । वातज्वरजा ॥ २८॥ कोरासंगषानु । त्रिदोषजा ॥ २९॥ रतिवाडु

20

४५

वे० सं

ल्य ता कल्य समा सा ॥ अथ ^म कल्य ॥ भं गिराज को जडो पिसि ना भि नार नु ॥ हि या को व
 ह जा ॥ १ ॥ पुष्प नक्षत्र श्रौला को जडो गला वाध नु ॥ गल गंडु जा ॥ २ ॥ पुर्वि को जडो हा त वाध
 नु ॥ विदि को विष जा ॥ ३ ॥ पुष्प नक्षत्रे वेयु को जडो पिसि घा नु ॥ विष नलाग ॥ ४ ॥ कटाइ को
 जडो काजि संग पिसि गुड घाल नु ॥ रिगटा ज नु ॥ ५ ॥ वा स को जडो ता ता दूध संग घा नु ॥ क
 म लोग जा ॥ ६ ॥ गो घु रा को जडो वासि पानि संग घा नु ॥ विष नलाग ॥ ७ ॥ आदित्य वार मासि
 को जडो का न वाध नु ॥ नित्य ज्वर जा ॥ ८ ॥ कु भिं डा को जडो विया पिसि घा नु ॥ का न वाध नु ॥
 दिन ७ मुत्र कू ड जा ॥ ९ ॥ पुष्प नक्षत्र पुधि को जडो का न वाध नु ॥ सर्व विष नलाग ॥ १० ॥ मुघा
 को जडो पानि संग पिसि ॥ मर्दे न गर्नु ॥ लु तो जा ॥ ११ ॥ गो घु रा को जडो पिसि पानि संग घा नु ॥ क म
 लो ग जा ॥ १२ ॥ का स को जडो पिसि दहि संग घा नु ॥ लु तो जा ॥ १३ ॥ आदित्य वार सह देर को
 जडो का न वाध नु ॥ नित्य ज्वर जा ॥ १४ ॥ पुष्प नक्षत्र वयर को जडो का न वाध नु ॥ नित्य ज्वर जा

एम०

४५

15

10

5

॥ १५ ॥ विता को जडो पिसि ता ता पानि संग घा नु ॥ कं टा कि वह जा ॥ १६ ॥ हर डो को जडो का न वाध नु
 ॥ कर्ण फल जा ॥ १७ ॥ इति मूल कल्य ॥ अथ का क जंघा कल्य ॥ का क जंघा को जडो दुध पिसि मुड
 घाल नु ॥ रिगटा ता नु ॥ १८ ॥ को क जंघा का रस ॥ मुड ला का रस ॥ भं गिराज को रस ॥ इति स कत्र गरि
 भ ल्को ॥ उमाल नु ॥ मुड घाल नु ॥ घोर रो जा ॥ की रो का न सु ना कैला र उ का ला हु नु ॥ मुड को सर्व
 रोग जा ॥ १९ ॥ का क जंघा को जडो ॥ मह घो टि अंज न गर्नु ॥ त्रि मि रि जा ॥ २० ॥ का क जंघा को जडो वौला
 नि संग पिसि ला र नु ॥ गा द ह ष टि रो जा ॥ २१ ॥ का क जंघा को जडो म ह वि रा को जडो पिसि दूध भा
 त संग घा नु ॥ स प्त वर्ष जिवा ॥ २२ ॥ वलि पालि म जा ॥ का क जंघा को जडो गुड संग घा नु ॥ पित्त रोग जा
 ॥ २३ ॥ का क जंघा को जडो गुड संग घा नु ॥ मुत्र क्रि छा जा ॥ २४ ॥ का क जंघा को जडो म ह सी ग घा नु ॥ उ
 प त्त लि जा ॥ २५ ॥ का क जंघा को जडो तिल का ते ल संग घा नु ॥ सरि र को वा यु जा ॥ २६ ॥ का क जंघा को
 जडो त्रि कु टा संग घा नु ॥ श्लेष्म जा ॥ २७ ॥ का क जंघा को जडो म ह सी ग घा नु ॥ टि ल्यो न दु ष ॥ २८ ॥

20

15

का कर्जघा को जडो मेडा को मासु को जो लषा नु। दूत्र रोग जा॥२॥ का कर्जघा को जडो वासि पाति
 संग घा नु। शरीर को रोग जा॥३॥ का कर्जघा को जडो गोरोचन चो टितिल कग नु। राज प्रजा वस्य
 हु न॥४॥ का कर्जघा को जडो नउ निसंग लेप गनु। पुष रोग जा॥५॥ का कर्जघा को जडो रुक वन्मा
 ४६ गा रको दूध संग पि सिसा रु दे हला वसि घा नु। वा मि अस्त्रिक नपु त्र हो॥६॥ का कर्जघा को जडो
 दूध घा नु। भा गो हा डला गा॥७॥ का कर्जघा को जडो गा रको दूध संग पि सिसा कुल्लिग नु। मुख रोग
 जा॥८॥ इति का कर्जघा कल्प समाप्ता॥ अथ त्रिषा प्रतिकारः॥ मरिच म्रटा र के मु के छाला दु
 वो डा कला॥९॥ का वो ह ले दो र ति तो। रति सप्त गरि पि हनु ति म रा घ रनु॥ पानि त्री घा टु ट॥१०॥ गु रम
 जो को र स। मरि वा ति तो। रति उमा लि पि नु। त्रिषा जा॥११॥ किं मु के छाला का वो ह ले दो ति तो
 । का का का किय॥ मरि वषा र ति दु वा को र स घा ली धर्त्त नु। गुजा प्रमा न व डि वा ध नु। व डि वा नु त्रि
 षा जा॥१२॥ ल वा ग जा र फ। मु धो। रति पि सिसा वि सा पा नि सी ग घा नु त्रि षा जा॥१३॥ भं गि र न र स

10

5

म ह घा नु॥ त्रि षा जा॥१४॥ जे ठि मः ल वा ग। मरि दा डि म को चु क दा ष। घा डा। का का का वि ज। रति स
 म गरि घा नु। त्रि षा जा॥१५॥ ध नि ड। वो रो। उमा लि पि नु त्रि षा जा॥१६॥ त्रि फू ला ध नि ड। ज वा नु सि
 धो। उमा लि पि नु। त्रि षा जा॥१७॥ का ला का सा नु। भ क्पा मि लो। सि धो। रति पि सिसा नु त्रि षा जा
 ॥१८॥ मुख र स हो॥ का क र सि गो घा डा। मरि च॥ रति पि सिसा नु। त्रि षा जा॥१९॥ ष भा रि का फू ला
 घा डा। रति पि सिसा नु त्रि षा जा॥२०॥ का र्त्तिक को म ह। जे ठि म ह मरि च रो य। उमा लि वि सो ग
 रि पि नु त्रि षा जा॥२१॥ लो हि वु सा को ज डो। पानि संग पि सिसा वस्त्र ग लि त ग नु॥ त व पि नु। त्रि षा
 जा॥२२॥ मां टा का हा डि गु तो। भा र घा ल नु॥ पा त्रि घा ल नु। त व उमा ल नु। मुख मु डि वा फा ली
 नु। त्रि षा जा॥२३॥ इति त्रिषा प्रतिकार समाप्ता॥ अथ कुष्ठ रोग प्रतिकारः॥ द्वि हरि डा। म जि घा
 व ग ह धूम वि प ल स स्था। क ने रं व तथा मू ल गो मु र्त्रं वै व ले प नी॥ लू त र्क र श्मि र्क र वै व सर्प को

20

15

यदकुषकम् ॥ १ ॥ तिलासविचित्रकुष्मानिलातकुष संयकुष वीटकुष षषानिकुष ॥ २ ॥
 ते कुष विशिती ॥ ३ ॥ तावापत्रभाग मेधकभाग सुवागभाग हलेयोभाग आ वकोरलो भाग
 वेदी ॥ ४ ॥ एतपाचवौ षधधियकुषारिकापातविरिबोषधजा कनु ॥ ५ ॥ आगामधिरासनु ॥ ६ ॥ सासादवाकि
 काद्रुधसंगलेपगनु ॥ ७ ॥ सगुचियाकाहातगोजानिकाहु न् ॥ ८ ॥ गंधका चतुरेणहि तिलतेल
 सैमपकावनु ० वाको होतपकाड ॥ ९ ॥ तवमर्द नगनु ॥ १० ॥ हसिदाधजा ॥ ११ ॥ आमोडकुष जा ॥ १२ ॥ रक्तपित्त
 जा ॥ १३ ॥ एतकुष जा ॥ १४ ॥ गंधका त्रिफला ॥ १५ ॥ भृंगिराजा मलायो ॥ १६ ॥ कालातिल ॥ १७ ॥ तिताविंडा कोविजा ॥ १८ ॥ मे
 लारलेपगनु ॥ १९ ॥ कुष जा ॥ २० ॥ हिर्विभाग ॥ २१ ॥ सरिवभाग ॥ २२ ॥ पोल्या हाडभाग ॥ २३ ॥ एतिसकत्रगरिपि
 सिषानु ॥ २४ ॥ लावनु ॥ २५ ॥ सर्वकुष जा ॥ २६ ॥ गुनापुद्गाकोजडाभाग ॥ २७ ॥ निवभाग ॥ २८ ॥ वायुविडुंगभाग ॥ २९ ॥ रा
 जवक्षकिगुदिःभाग ॥ ३० ॥ पिपलाभाग ॥ ३१ ॥ गंधकभाग ॥ ३२ ॥ चितोभाग ॥ ३३ ॥ हिर्विभाग ॥ ३४ ॥ एतिसकत्रगरिषानु ॥

राम
 ४७

10

5

सकुष जा ॥ ३५ ॥ सुछोभाग ॥ ३६ ॥ पिपलाभाग ॥ ३७ ॥ सरिवभाग ॥ ३८ ॥ राजवक्षकिगुदिभाग ॥ ३९ ॥ हिर्विभाग ॥ ४० ॥ सुउ
 लाभाग ॥ ४१ ॥ वरडाभाग ॥ ४२ ॥ हरडाभाग ॥ ४३ ॥ एतिसंमगारिपूर्णागनु ॥ ४४ ॥ तमरसंगलेपगनु ॥ ४५ ॥ सर्वकुष जा
 ॥ ४६ ॥ लसुनभाग ॥ ४७ ॥ निवभाग ॥ ४८ ॥ चितोभाग ॥ ४९ ॥ हरितालभाग ॥ ५० ॥ गंधकभाग ॥ ५१ ॥ कनैरभाग ॥ ५२ ॥ ससिंडभा
 ग ॥ ५३ ॥ कुषभाग ॥ ५४ ॥ मेथिभाग ॥ ५५ ॥ मार्षाभाग ॥ ५६ ॥ एतिसिषगरिका ॥ ५७ ॥ जि सैगपिसि हाडिभिन्नद्यालिमुष
 वुजनु ॥ ५८ ॥ तवगाइकापसागाडनु ॥ ५९ ॥ दिनराकाडि लेपगनु ॥ ६० ॥ सर्वकुष जा ॥ ६१ ॥ सौवलभाग ॥ ६२ ॥ सुजै
 पालभाग ॥ ६३ ॥ रतिघोरबुलिया ॥ ६४ ॥ एतितकका ॥ ६५ ॥ तुतघाटिपाहो लारनु ॥ ६६ ॥ श्वेतकुष जा ॥ ६७ ॥ गंधकत्रि
 फला ॥ ६८ ॥ मलायो ॥ ६९ ॥ भृंगिराजा ॥ ७० ॥ कालातिल ॥ ७१ ॥ तिताविंडा ॥ ७२ ॥ काविया ॥ ७३ ॥ एतिसैलारपिहनु ॥ ७४ ॥ तवलारनु ॥
 श्वेतकुष जा ॥ ७५ ॥ सुजै ॥ ७६ ॥ पालभाग ॥ ७७ ॥ रतिभाग ॥ ७८ ॥ चितोभाग ॥ ७९ ॥ वजोभाग ॥ ८० ॥ सुछोभाग ॥ ८१ ॥ एतिसिष
 काजिसैगलेपगनु ॥ ८२ ॥ श्वेतकुष जा ॥ ८३ ॥ राजवक्षकावियाभाग ॥ ८४ ॥ तिलभाग ॥ ८५ ॥ सुछोभाग ॥ ८६ ॥ गुड

20

15

10

5

४८

राम

४८

भागासुनिधिसिषा नुआकु सुजा ॥ १ ॥ इति कुसु रोग प्रतिकार समाप्त ॥ अथ पंचनिप्रयोगः ॥
 हरडासिवा वन भाग पर भाग चारि ४ सोठो तह लागि चिता मरि वंज वाइनि अ न नो ॥ २ ॥ नो भाग ता
 सुपर मा न पि परि भागा सधार रु रु का गति पुठ दि न ति न र दे हु न व व ड वा न ल चूर न हो र क
 र रु उपचार वैद्य निको होइ ॥ आवण भा द व कार्तिक मी सिर पौष माघा ॥ इति द्वाय मा स दुरिर यथा
 लोदिनु ॥ फाल्गुण वैत्र वैशाख जेठ आषाढ ॥ आश्वि नार नुद्व य मा स मेघ नाद पषाल दिनु ॥ व
 गुर्धो भाग सुठो भाग कैरुवा भाग तितो भाग गुर्जो भाग ॥ इति सम गरि उ मालि पिनु ॥ पच हो ॥ ३ ॥
 हरडा वा यु विडंगा सुठो सिधो मरि वा पि पला ॥ इति सम गरि गौत मी गडु मादि पिनु पच न हो ॥ ४ ॥
 सुठो सिधो मरी वा जवा बु ॥ हरडा ॥ इति पि सि अ गु ल र प्र मा न वा बु ता तो पा नि पि नु पच न हो ॥ ५ ॥
 इति पच न समाप्ता ॥ ॥ अथ दुरिका पषाल प्रतिकार ॥ अजैपाल भाग मरि भाग वा वल भाग

॥ इति सम गरि गुड मी ग बा नु ता तो पा नि पि नु ॥ दुरिका पषाल हो ॥ ६ ॥ अजैपाल भाग हरडा भा
 ग मरि व भाग नू कर ति रा ॥ इति एक त्र गरि न व नि सै ग नि ल नु ता तो पा नि पि नु ॥ दुरिका पषाल
 हो ॥ ७ ॥ अजैपाल भाग पा र इति ॥ दुरिका पषाल हो ॥ ८ ॥ अजैपाल र मरि व १० वा उ ल गे डा ५० पि सी
 गुड सै ग बा नु ॥ अथ वा न व नि सै ग बा नु नि ल नु ता तो पा नि पि नु पषाल हो ॥ ९ ॥ अजैपाल जि भ्रो
 कादि गोवर दालि पका व न ॥ हरडा मरी व व य र गुडा ॥ इति मे ला र पि ह न ड नि ल नु ता तो पा नि पि
 नु ॥ दुरिका पषाल हो ॥ १० ॥ अजैपाल ॥ हरडा मरि वा बु का ॥ इति सम गरि न व नि सै ग नि ल नु ता तो
 पा नि पि नु ॥ दुरिका पषाल हो ॥ ११ ॥ महा विर को ज रो दि न र ग उ त रु मा व नु ॥ त व सु का र व स्र ग लि त
 ग नु ॥ गुड सि ते नि ल नु ता तो पा नि पि नु ॥ दुरिका पषाल हो ॥ १२ ॥ ग सि उ ड को दू धा घ र सो ॥ भ ड र के
 गु डि ॥ हरडा ॥ इति पि सि गुड सै ग नि ल नु ता तो पा नि पि नु ॥ ग सु व रि रो ग हो उ षाल हो ॥ प र ह
 क

20

15

हो॥ दुरिकाप पवाल हो॥ आ अजैपाल कि पेटि लिवा धि दध पका वनु। सो अजैपाल रजि सज वानु
मरि वपि पला रति सम गरि पिसि उ सै दूध सै ग अव ला प्र मान वा नु। ता तो पा नि पि नु। सर्व गु न ग र
दुरिकाप पवाल हो॥ रा अजैपाल का जि भरो का डि गो वर पका उनु। रु गा या वा व ला सु दो हर डाम
रि वा रति पिसि नी को गरि अ ठि से का वनु। वा नु ता तो पा नि पि नु। दुरिकाप पवाल हो॥ आ इति दु
रिकाप पवाल प्रति को र स मा य॥ अ य मे घ ना द प वाल। अ रि उ को वि जा। अ जैपाल। य य रा वा व ल
सि धो। मरि वा रति पिसि वा नु वि सो पा नि पि नु। मे घ ना द प वाल हो॥ आ अजैपाल पा नि रु गा व
नु। अजैपाल रपि पला सु प्रा रि आ धा पो लि आ धा का चो ह र दो मे ला रि पिसि वि सा पा नि सी ग वा नु
मे घ ना द प वाल हो॥ रा अजैपाल रपि पला मरि व जि ऐ वु का आ दा र स धा लि पिसि पि नु। वि सो
पा नि पि नु मे घ ना द प वाल हो॥ रा अजैपाल रजि भ्रा का ढा जा भिर का र स रु गा व नु। प्र ह र मरि

४२

10

5

व पि पला य र सु को रति पिसि सम गरि वा नु। वि सो पा नि पि नु। प वाल हो॥ ह द हि मा त वा नु
प वाल र ह॥ आ अजैपाल र नि वु भि त्र घाल नु। दि न ग ह र ड पि प ला मरि व सु को रति पिसि वा नु
वि सो पा नि पि नु। प वाल हो॥ ह आ अजैपाल र प्र ह र पा नि रु गा व नु। जि भ का ड नु। अ ग र वा ड
धा लि पि नु वि सो पा नि पि नु। प वाल हो॥ रा इति मे घ ना द प वाल सम य॥ अ य प वाल स्थि म न॥
मि ल क वा र अ स्थि को द ध मे ह ल का र स॥ रति धा लि पिसि ना भि ला र नु। अ सा ध प वाल र ह॥
आ अ दु वा का क रि गो ध ार का फु ला स म गरि पिसि वा नु। अ सा ध प वाल र ह॥ रा उ रि द वा क
लो ग रि रि ध नु। त व वा नु। अ सा ध प वाल र ह॥ रा इति य वा स्थि म न स मा य॥ अ य प्र मे ह प्र
ति का र॥ मरि व पि पला अ व र वि र डा। मु डि लो कु डि लो मु स लि का रि कि स ह ग र घ त पि
स्थि व ला प्र मा न वा नु। प्र मे ह जा॥ कु सु म का फु ल आ रु को पि न का रि कि म धु स म
गरि वा नु। वा ल प्र मे ह जा॥ अ दु वा को र स ग रि को दू ध घा डा रति पि नु। वा ल प्र मे ह

20

जा॥३॥ बोलानिसिमलको बोको॥ एतिपिसि वस्त्र गलित गर्नु॥ तवपि नुति उकप्रमेह जा॥
 तिलधारका फल कार्तिकिमह घत॥ पिसि श्रवला प्रमान घाबु॥ प्रमेह रक्त जा॥ मरि वभाग
 पिलला सुठो॥ एति उमालिनु॥ मह संग घाबु॥ रक्त प्रमेह जा॥ धा॥ धारका फल तिल कार्तिकिमह
 घत॥ पिसि श्रवला प्रमान घाबु॥ रक्त श्रवति सार जा॥ ग॥ श्रु उ का कवार॥ कुटि पानी रुखा वनु॥ सा
 पानि घाउ सीग घाबु॥ रक्त प्रमेह जा॥ वका र नाको जडो गुवाल का करि त्रिफला का बोट
 ले दो॥ एति उमालनु॥ ये बौधो माला हले दो पिसिमह मिसि॥ श्रवला प्रमान घाबु पित्त प्र
 मेह जा॥ र॥ त्रिफला रजत दक्ष को को सो॥ एति उमालि मरु सीग घाबु॥ प्रमेह जा॥ वाटु ल्या
 त्या घ त घाबु॥ प्रमेह जा॥ वाटु ल्या त्या दिहि घाबु॥ प्रमेह जा॥ पत कु मरि को गुदि॥
 सिमल को घोटो॥ घाड॥ एति घाबु॥ प्रमेह जा॥ इति प्रमेह प्रीति का र समाप्त॥ श्री फेर ग
 रोग प्रतिकार॥ हरडा भाग॥ मरि वभाग॥ निला घोषा भाग॥ एति पिसि वस्त्र गलित

रमरी

५०

५०

15

10

5

गर्नु॥ गर घ त सीग मरु न गर्नु॥ निवा घा रा बनु॥ फिरी ग रोग जा॥ पारो भाग॥ गंधक भाग॥
 कनिक भाग॥ गुड भाग॥ श्रु उ क कार स घर्षनु॥ तातो फिरी ग रोग जा॥ श्रु व ला प्रमान घा
 बु॥ सा तो॥ फिरी ग रोग जा॥ मनीसिल भाग॥ हरिताल भाग॥ श्रा धा सु ह भाग॥ ह ले दो भाग॥
 गु ना पु छ को जडो॥ पिसि ग ड त संग घाबु॥ वाकि दू व सी ग ले प ग हु॥ भि र ग रोग जा॥ श्रु तु
 ल सि भाग॥ साली के राल भाग॥ हरडा भाग॥ मरि व भाग॥ गंधक भाग॥ कानि सि दूर भाग॥
 कार्तिकिमह भाग॥ पिसि श्रवला प्रमान घाबु॥ सा तो॥ फिरी ग रोग जा॥ पारो गंधक भा
 ग॥ लवंग भाग॥ हरिताल भाग॥ गर फल भाग॥ नामुनी के छाला भाग॥ मार्षा भाग॥ पि
 सि श्रवला प्रमान घाबु॥ फिरी ग रोग जा॥ पारो भाग॥ गंधक भाग॥ ह ले दो भाग॥ जवा नु
 भाग॥ वयर भाग॥ मला या भाग॥ गुड भाग॥ पिसि श्रवला प्रमान घाबु॥ सा तो॥ निवा त
 वनु॥ फिरी ग रोग जा॥ पारो भाग॥ गंधक भाग॥ जवा नु भाग॥ गु जो भाग॥ मला या भा

20

15

५१
ए-म

गघाएतिलमुठि १ सुक्ता कार स घाली पिरु ॥ सुवला प्रमान वा नु फिरींग रो गजा ॥ ५१ ॥
 मिवालिका दुसा भाग १ वास काटु सा भाग १ सुवला काटु सा भाग १ से तो दू दो भाग १ सुदि
 को सुगा भाग १ र गुल भाग १ इति एकत्र गमि पिह्लु ॥ वडि १४ गनु ॥ वडि १ दिन प्रति धुवाय
 नु निवान रष नु फिरींग रो गजा ॥ ५२ ॥ उफुल ह्या या सुका वनु ॥ पिसिव स्रगलित गनु ॥ पु
 यना गुड से गघा नु सा तो १ मडा माथि सुत नु स भपारो मु न वाट सुवा ॥ सुघांग घा दो ज
 ॥ फिरींग रो गजा ॥ ५३ ॥ इति फिरींग रो गप्रतिका रस माय ॥ सुच रत उ निप्रतिका रः ॥ काली
 वा का को कले जो ता तो गरिवे २ ॥ आषा वाध नु ॥ रत उ धिजा ॥ ५४ ॥ घोर कालिदि को र स म
 रि व घोटे सुंजन गनु ॥ रत उ धिजा ॥ ५५ ॥ रुद्र को ल उ रि ॥ मरिवा इति वसिषा निघसि ॥ सुंज
 न गनु ॥ रत उ धिजा ॥ ५६ ॥ घोर बुलि सुस्त्रि दूध से ग सुंजन गनु ॥ रत उ धिजा ॥ ५७ ॥ अदित्य

५२

10

5

वार को मा यौ वा क्रो तस्का पित भित्र मरि च घाल नु ॥ अथ वाचा वल घाल नु ॥ त व घा नु ॥ रत उ धि
 जा ॥ ५८ ॥ इति रत उ धिप्रतिका रस माय ॥ अथ कु लाप्रतिका रः ॥ सिमल को घा दो मरि च गे डाल
 गर को घ जति व को र स का डी भा डा घल नु ॥ प्रहर ४ सुंजन गनु ॥ आषा पा का नु ॥ आषा को
 घोर रो जा ॥ फुलो जा ॥ ५९ ॥ एक वर्णा गा र को गौत घे टा १ मरि रषा नु ॥ सो भा डो निरसु का वनु ॥ प्रात
 स भइ गौत सुका ॥ सो बुला मुद्धि सुंजन गनु ॥ वासिषा नि संगा ॥ फुला जा ॥ ६० ॥ संघे ड र ड रत न जो ति स
 ति स्त्री दूध घोटे सुंजन गनु ॥ फुलो जा ॥ ६१ ॥ कान को मैल सु मती ॥ सुंजन गनु ॥ फुलो जा ॥ ६२ ॥ संघ नू
 र्ण भाग ४ मण सिल भाग २ हरिता ल भाग १ सि धो भाग १ मं गिरा जर स घल नु ॥ सुंजन गनु ॥ फुलो जा ॥ ६३ ॥
 को डो बु क प लाल नु ॥ आग जा र नु ॥ नौ नि सित पि सि ॥ सुंजन गनु ॥ फुलो जा ॥ ६४ ॥ ॥ इति फुला प्रतिका
 र स मा य ॥ सुच रि ग टा प्रतिका र ॥ मरि व पि प ला सु दो को ॥ इति पि सिव स्रगलित गनु ॥ नास दि नु ॥
 दि व सुवसि र व घां जा ॥ ६५ ॥ पति उ जा कि गुदि पा नि घोटे क पाल लार नु ॥ सि र व घा जा ॥ रा घो डा नु

20

५२
राम

लिमरिच गौतघोटिसिरलेप गर्नु॥ सिरवा या जा॥ शाका वोह ले दो भागा दडिम को वो को भागर कुहे
 भाग ५ क चूर भाग ४। एति गौतसितीषिसिरलेप गर्नु॥ शिर रोग जा॥ ५॥ कपाल किचिरि कुजा रिग
 जा न॥ ५॥ पिपला हरडा मधिर समग रिपिसि सुध ल प्रमान वा नु रिगाटा जान॥ ५॥ सुठा अरिड को
 जडो पिसि काजि सी ग ले सिरलेप गर्नु॥ रिगाटा जाना धा सु ठी वु न। गर दूध संग ता सदि नु सिरवा या
 जा रिगाटा जान॥ ५॥ कट अरिड को जडो। कटि काजि संग मुड घाल नु॥ रिगाटा जान॥ ५॥ सुवला भ
 गिर जवर डा हरडा एति नू र्ण गरि वा नु॥ रिगाटा जान॥ ५॥ कटार को जडो काजि सी ग पिसि मुड घाल
 नु रिगाटा जान॥ ५॥ सिला नु। हरडो सिधो गो घुरो। नू र्ण गरि ता ता पा नि सी ग घा नु रिगाटा जान॥
 ५॥ का कर्त घा को जडो। दूध सी ग पिसि मुड घाल नु॥ रिगाटा जान॥ ५॥ केदार सु ठो अजै पाल नि
 ला यो तो। सुफि मा एति गौत स ग पिसि मुड घाल नु॥ शिरवा या जा रिगाटा जान॥ ५॥ १३। इति रिग
 ठा पुति कारः। समाप्त॥ अथ पु र्श रोग पुति कारः॥ प घा न भेद सु पारि द्यो टि पा नि सी ग ला नु पु
 रुष रोग जा॥ ५॥ हरडा सिधो सु पारि एति पिसि वस्त्र गलित गर्नु। रंद्रि वु क नि घाल नु पु र्श रोग जा

५२

15

10

5

५॥ वडु रै कि द्वा ला १ या डि म कि द्वा ला जा र फ ल पिसि वस्त्र गलित गर्नु। रंद्रि वु क नि घाल नु
 पु र्श रोग जा॥ ५॥ सु पारि ष य द। अल रू चि र ति पिसि वस्त्र गलित गर्नु। रंद्रि वु क नि घाल नु पु
 र्श रोग जा॥ ५॥ अरि को विज सुवला को विज जवर डा को विज हरडा के गुदि का वो दा या का वो ह ले दो
 एति समग रि पिसि वस्त्र गलित गर्नु। रंद्रि वु क नि घाल नु पु र्श रोग जा॥ ५॥ जा र प त्रि स र्मि ड। हरडा
 वा स क। एति पिसि वस्त्र गलित गर्नु रंद्रि वु क नि घाल नु पु र्श रोग जा॥ ५॥ ति मि कि द्वा ला या डि म
 को को पिलो ह ले दो मुश लि एति पिसि वस्त्र गलित गर्नु। रंद्रि वु क नि घाल नु पु र्श रोग जा॥ ५॥
 पा ति का टु घा प प्या हु लि का टु पा प त लु का टु पा ५ न व नि संग पिसि लेप गर्नु पु र्श रोग जा॥ ५॥ नि
 व ष य र। म जी ठ। एति पिसि वस्त्र गलित गर्नु। रंद्रि वु क नि घाल नु रिग पा तो जा॥ ५॥ गंध क। पि
 सि घ त म घु लिं ग लेप गर्नु। लिं ग पा तो नि को हो॥ ५॥ प त कु वा रि के गु दि जि रो। एति पिसि लि
 ग लेप गर्नु। लिं ग ड ह ये जा॥ ५॥ पा तो जा ठे ष य र जा॥ ५॥ रंद्रि र नि को जडो। वा द्वा को मु त।

20

15

सम
पर

घोटे लिंग लेप गनु पुर्व रोग जा ॥ १॥ इति पुर्व रोग प्रति कार समाप्त ॥ ॥ अथ अष्ट स्मार प्रतिकार
 र ॥ मरिच भाग सुखे भाग च नामि लो भाग गु नापु द्य को ज डो भाग ॥ घुरि कि डा भाग सर से
 भाग भजे र कि विधि, भाग ॥ इति पिसि व ख ग लि त ग नु । ना स दि नु । अ वा रि जा ॥ १॥ रि डा
 कि गु दि नि तु र स घो टि ना स दि नु । अ वा रि जा ॥ २॥ वा का के पि त्त म रि च संग घो टि ना स दि नु । म
 शि ग ल क ले जो चाम रोष धु वा र दि नु ॥ अ वा रि जा ॥ ३॥ स मु द्र फ ल म रि च भालु को पि त्त मि त्त
 ट घा स नु दि न रा घृ त संग ना स दि नु । अ वा रि जा ॥ ४॥ म न सिल षा प न्या प रे वा कि वि धि वा
 का मु च जल घो टि ना स दि नु । अं ज न ग नु । अ वा रि जा ॥ ५॥ हि ग जे ठि म ह व जो कु ट ल सु ना इ ति स
 म ग रि वा का जल पि सि ना स दि नु । अ वा रि जा ॥ ६॥ हि ग जे ठि म ह व जो कु वि ना से तो स र्शि डा ल सु ना
 इ ति स म ग रि पि व ख ग लि त ग नु । वा कि का मू त्र सी ग ना स दि नु । अ वा रि जा ॥ ७॥ अं ज न ग नु ॥ ८॥
 कु मि टो माल फु डो वा र का क पाल को घ प टो से तो स र्शि उ जे ठि म ह । इ ति पि सि घृ त संग ना स

पर

10

5

दि नु । अ वा रि जा ॥ ९॥ सै ख पु थि व जो सु ठो । व जो हि ग प रे वा कि वि धि ॥ इ ति स म ग रि वा का जल पि सि
 ना स दि नु । अ वा रि जा ॥ १०॥ ह ले दो हि ग सि तालि को र स पि सि ना स दि नु । अ वा रि जा ॥ ११॥ अ रि गों
 द्या सा प क न व न्द्रो म रि वा हि उ न्या । स म ग रि पि सि ना स दि नु । अ वा रि जा ॥ १२॥ म न सिल षा प रि
 प्या प रे वा कि वि धि । स म ग रि षं गि रा ज र स व ल्ले नु । अ वा रि जा ॥ १३॥ इ ति अ ष्ट स्मार प्र ति कार समाप्त
 ॥ अथ षट् रि ण प्र ति कार ॥ हि वि नि ला यो ता । अ जे पा ल पु थ म ला र नु ॥ र न्न जो ति नि ला यो ता वु कु
 नि ग ने ण घा ल नु । ना स र ष टि रो जा ॥ १॥ प रे वा कि वि धि सु वा ग स म ग रि पि सि वु क नि घा ल नु । ना
 सु र ष टि रो जा ॥ २॥ अ म र वे लि पि सि न व नि सं ग ला र नु । न ने व ष टि रो जा ॥ ३॥ लो कु चूर्ण शु क ले घो
 टि ला र नु । स र्व ष टि रो जा ॥ ४॥ का वो ह ले दो स ला को वो टो म ह ल न मं ता तो ग रि ला य नु । न पा क्तो ष
 टि रो पा का ॥ ५॥ कु कु र कि वि धि वा का कि वि धि पा नि म थि स ष टि रा ला र नु । न पा क्तो ष टि रो पा
 क ॥ ६॥ पि प ल का भ स ल न ग उ त्त र इ ति पि सि ले प ग नु । न पा क्तो ष टि रो पा क ॥ ७॥ नि व ह ले दो मे धि

20

५५

15

नवा लुपि सिव क निघाल नु। वहुत दिना पाको षटि रोया क ॥ रा एतु बाकि द्वा को भ सम्ब
 बाकि द्वा का वो ह ले दो चुक पि सि घ त सी ग ले प गर्नु। रा ता षटि रोया क ॥ रा ना सि धो क रु वा ते ल
 ग म र्द न गर्नु। सर्व षटि रो जा ॥ ११ ॥ म रि व पि प ला सु ठो व जो से त व रु वा गे उ त सि त पि सि ला र नु ॥ स
 र्व षटि रा जा न ॥ १२ ॥ म रि व पि प ला सु ठो ज वा नु पि सि व क नि घा ल नु। षो लि दो पा को षटि रो जा
 ॥ १३ ॥ व ड कि द्वा ला ति मि ला कि द्वा ला पि प ल कि द्वा ला ला म्बा कि द्वा ला वे ल कि द्वा ला ए ति उ
 ता लि ले प न गर्नु। स दा पा को षो लि दो षटि रो या क ॥ १४ ॥ वा ण कि द्वा ला सु पा रि सि वा लि म जि ठो दा डि
 म को द्वा ला ध तुरो प षा न भे द। कु ट क रू र धा ड फु ल क रा ड वे ल को ज डो ॥ ए ति स म ग रि
 उ मा ल नु। व स्त्र ग लि त गर्नु तिल का ते ल प का व नु ले प गर्नु। त व सर्व षटि रा जा न ॥ १५ ॥
 ह ले दो म जि ठो बु त्रा कि द्वा ला का फु ल कि द्वा ला धा ड रा कि द्वा ला का फु ल। लो ध कि द्वा ला जे ठि
 म ॥ ए ति प का व नु। व स्त्र ग लि त गर्नु तिल ते ल सं ग प का व नु। अ सा ध्य षटि रो हो त ले प गर्नु।

५४

५४

10

5

सा ध्य हो ॥ १६ ॥ ॥ इ ति षटि रा प्र ति कार स मा ष ॥ ॥ अ य नि ना व प्र ति कारः ॥ ता वा पा न्ना क टु कि रि तो नि व ति तो
 अ वि जा लो गु धा र ग नु। मं गि रा ज भा गे पि सि। बा ड। म्बा गु ल पु मा न षा नु। नि ना व रोग जा ॥ १७ ॥ ति
 ल भा ग। रा यो भा ग २ ल सु न भा ग ६ वि ष र ति भा ग ५ म रि व भा ग। गे त सि त पि सि वा डि घु नु गु
 जा पु मा न व डि। बा नु। नि ना व जा ॥ जि रो म रि व अ रि उ का पा त को र सू द्वा लि पि ह्नु त व पि। नि न उ जा ॥
 १८ ॥ नी ल क स रिं क रा ड। बु क पि सि ला य नु। सु नि यो नि ना व जा ॥ सर्व नि ना व जा ॥ १९ ॥ अ जै पाल
 ह र डो क टु किं। सि ला जु सु वा ग सि धो। ए ति स म ग रि जो त सं ग पि सि ले प गर्नु। ग आ नि ना व जा
 ॥ २० ॥ वा स के। सि वा लि। सु ठो ज वा नु। मं गि रा ज। स म ग रि पि सि व स्त्र ग लि त गर्नु। अं गु ल अ मा न
 षा नु। नि ना व जा ॥ २१ ॥ सु ठो म रि व पि प ला ज वा नु ॥ ए ति स म ग रि पि सि षा नु। पे ट को नि ना व जा ॥ २२ ॥ गु द्रो सु
 म यो पु न र्न वा क टु किं जि रो क बु र सा ल कि रा ल। ए ति दू र ग रि व स्त्र ग लि त गर्नु। षा नु। पे ट को नि ना व

वा ३

20

५५

15

५५

सिंगेकाठउहलेदोदूबोयिसिलारनुपेटकोनिनावजा॥२॥तिलपिसिकरुवातेलसंगलाइनु।वा
 युनिनावजा॥१॥मरियपिपलाह रितालदूवाकोरसघालिपिसिनासदिनुमुउकोनिनावजा॥१॥
 अश्वगंधाकोजउतिलतेलसंगपकावनु।पेटलावनु।निनावरोगजा॥१॥२॥अश्वगंधाकोज
 जेघसिबोलासिसंगपिनु।निनावजा॥१॥२॥ ॥इतिनिनावरोगप्रतिकारसमाप्त॥ ॥अथ
 वायुप्रतिकारः॥भागोजवानुमुशालिगंदाइनुवितीसुठोत्रिफला॥रतिपिसिवस्त्रगलि
 तगर्नु।षानु।सर्ववायुजा॥१॥भागजवानुमुशालिगंदाइनुसुठोभंगिराजमरियपिपलासो
 यल।रुर्गगरिषानु।वायुजा॥२॥वापाकोजदोवितीजिरोधनिउसुठो।सालकिरालमरियपि
 पलासिधोसोयलजवानु।समगरिपिसिवस्त्रगलितगर्नु।तवषानु।सर्ववायुजा॥२॥हरजवर

10

5

अश्वमत्स्यामरियपिपलासुठोवितीवजोहिगसिंधोसोयलनगुर्थो॥समगरिपिसिप्रभातषानु।सुतकारि
 अस्त्रिकोगानुयातिप्रोव॥सर्ववायुजा॥४॥पिपलाजवानुसिधोसुठोहरजसमगरिपिसिवस्त्र
 गलितगर्नुप्रभातषानु।सुत्कारिअस्त्रिकोगानुधातीआव॥सर्ववायुजा॥४॥पिपलाजवानु
 सुठोसिधोविषमरियपिपलाभागोकोरोपोलि।समगरिवस्त्रगलितगर्नु।रसरतिप्रमान
 षानु।सर्ववायुजा॥६॥त्रिकुटाजवानुसिधोवितीहिगकालोजिरो।यतिसमगरिपिसितातापानि
 संगषानु।सर्ववायुजा॥१॥अजैपालकिछालामरियमासीसुठोगोपुरेसिधो।लवागजाइफल
 सुपादि॥यतिसमगरिपिसिवस्त्रगलितगर्नु।रतिप्रमानषानुफिदोजा॥जलअहजा॥सर्व
 वायुजा॥८॥हिगबुकवरनु॥८॥आककोजउपिपलालोधहरजसमगरिसदजनकोरसति
 लेतेलापकावनु।कानघालनु।कणेश्वरजा॥९॥ ॥इतिवायुप्रतिकारसमाप्त॥ ॥अथ

५६ कर्णशूलप्रतिकारः॥ सिधोवाक्रि दूधपकावनु॥ कानघालनु॥ कर्णशूलज॥ १॥ सुठोहिग
 टिभुर॥ इतिपिसिवस्त्रगलितगर्नु॥ केरुवातेलसंगषल्लनु॥ कानकचिरीज॥ २॥ सेजनकोरस
 तिलतेलसंगपकावनु॥ कानघालनु॥ कर्णशूलज॥ ३॥ हिग॥ तिभुर॥ सिधोवाक्रामुतघालितिलका
 तेलपकावनु॥ काणघालनु॥ कर्णशूलज॥ ४॥ सिउउकाटुपाषाणविद्यकघालनु॥ पिसिरसका
 ठनु॥ कानघालनु॥ कानकिरिडिकज॥ ५॥ सिधोवाक्रिमूतघसिमु॥ कानघालनु॥ कर्णशूल
 ज॥ ६॥ जाइकापातकोरसगडतसंगकानघालनु॥ कर्णशूलज॥ ७॥ विउसकारसामु
 वलाकोरस॥ कानघालनु॥ कर्णशूलज॥ ८॥ सुठोदेवारवजोकेटसिधोसहस्रशूलिको
 रसघालिषल्लनु॥ वाक्रिमुतपिसिकानघालनु॥ कर्णशूलज॥ ९॥ कपासकोविजसा
 लकिरास॥ कुटकार्तिकिनहजेठिमह॥ इतिसमगरिपिसितेलसंगपकावनु॥ सोतेलकानघा

१० जाइफलहलेदोपुथोकेरुकिगुदि॥ इतिघालितेलपकावनु॥ सोतेलकानघालनु॥ कर्णशूलज॥ १०॥ माछाकोपि
 तकोसाभाउषल्लनु॥ कानलेपगर्नु॥ कानघालनु॥ कानदूषेज॥ ११॥ रंगिराजकोजटोविषकानघालनु॥ का
 नकिजिडिज॥ १२॥ हरडकोजडोकानवाधनु॥ कर्णशूलज॥ १३॥ वजोकुचिलानिर्विशिवाक्रिमूतसम
 गरिपिसिसातो॥ घालिवेरकानघालनु॥ वहिराकाननिकाडुन॥ १४॥ सिउउकोटुपोघतपकावनु॥ सि
 धोपिपलाघतघालिमधनु॥ पकावनु॥ रसकाडिकानघालनु॥ वहिराकाननिकाडुन॥ १५॥ इति
 कर्णशूलरोगप्रतिकारसमाप्त॥ ॥ अथगरप्रतिकारः॥ पैहिलेपषालोदिनु॥ घिराकोदुधलुनपिसिदिनु॥
 गदियोनिकोहो॥ १॥ पोल्याहरडभागरकायोहलेदोभाग॥ पोल्यासुठोभाग॥ कावोसुठोभाग॥ इति
 पिसिवस्त्रगलितगर्नु॥ तिताविंजकोरसघालिषल्लनु॥ तवपिनु॥ गरयायाकोनिकोहो॥ २॥ घयरकुडोनिम
 त्रिकुटाश्रुउकहरडावरडावितोतितोकटुकि॥ इतिसमगरिपिसिदिनुवस्त्रगलितगर्नु॥ वाकरिकासुतसंगषनु
 गरयायाकोज॥ ३॥ जाइफलभागकेडुकिफुलभाग॥ कहरभाग॥ सेलारपिसिधानु॥ गरयायाकाज॥ ४॥ विता

५७

राम

कोजडोगैतपिसिषानु॥गर्जा॥पामुडककोजडोगडतपिसिषानु॥गर्जा॥६॥लेककादूधिलाकोजडोगैतपि
 सिषानु॥गर्जा॥पुनेलकोजडोदाडिमकोजडोघघातकोजडोगैतसंगपिसिषानु॥गरपायाकोजा॥८॥
 विजेभाग॥वजेभाग१॥रुक्मलविरभाग१॥महविरोभाग१॥रुक्मकोकोभाग१॥संघपुष्पिभाग१॥तेवारते
लभाग१॥काकाकिरोभाग१॥वाकिजूनपिसिषानु॥वाम्पुगरजा॥२॥सर्वकयटजा॥॥पूनभंगिराजर
सपिसिषिबुकेसायुप्रावनु॥तटागरात्रिराषनु॥प्रातषानु॥गुरुजा॥१॥सेतरवाकठार॥उमालिनि
 नु॥गर्जा॥॥१॥हिगभाग१॥सेतवरवाभाग१॥मुजैपालगेडो॥१॥तिसिषानु॥गरजा॥॥२॥विसापानिहा
तगेडाधूनाजिरालुनदहिभातषानु॥उषालपकालरह॥३॥पिघालाभाग१॥जवानुभाग१॥मरीयभाग२
 सुठोभाग२॥गुर्जोभाग४॥पानिवटुका५॥गडतवटुको॥१॥सुलिउमालिवटुका॥राषनु॥साविदेरपि
डापवनहो॥४॥॥इतिगरकष्टप्रतिकारसमाप्त॥॥अथफाद्याजिभ्राप्रतिकार॥॥श्रीकको ५७

प्रा५

समगरि२

जजेवयर॥पिसिजिभ्रालावनु॥फुद्याकोजिभ्रोनिकोहो॥॥१॥जस्कोजिभ्रोमागपुटसानाषटिराउठं॥षयरहर
उसमगरिपिसिमहघालिषल्लनु॥तवलावनु॥परस्त्राव॥ववनफुट॥॥१॥षयरहरडोहलेदो॥यतिंपि
सिमहसंगवडिगनु॥रात्रिपुरवघालिसिनु॥प्रमाततातापानिकुल्लीगनु॥फाद्योजिभकोमलहो॥॥२॥षयरह
 रडोजिरोहलेदोलवागनवजाइफलकाकाकावियासुवाग॥पिसितेलसंगजिभ्राघरुमुत्रिदोषकोफा
द्योजिभ्रोनिकोहो॥॥३॥त्रिकुमजौषारहरडावितो॥॥यति॥यूरुगरिजिभ्राघरुफाद्योजिभ्रोनि
कोहो॥॥निवषाउदाडिमकाविजहरडाजिरो॥॥यतिसमगरिपिसिजिभ्रालाइनुकवलोहो॥॥६॥
 ॥॥इतिफाद्याजिभ्राप्रतिकारसमाप्त॥॥अथपज्जिभ्राप्रतिकारः॥॥धेसोसिधोमह॥काजिसंगपिसि
पज्जिभ्रालावनु॥पज्जिभ्रोनिकोहो॥॥१॥जवषारहरउपिपलाकरवातेलसंगजिभ्राघरुपज्जिभ्रोनिकोहो॥॥२॥
सुवागसोवलसमुद्रफेनअतिसुवाक्रिकामुतसमगरिपिसिषानु॥गलालाइनु॥पज्जिभ्रोनिकोहो॥॥३॥
लोवकेवोकोवासककोवोकोतातोगरिमहसंगषानु॥मुषको॥अवदोरगतजा॥४॥॥इतिपज्जिभ्राप्रिका

20

५८

15

अथ घाव प्रतिकारः॥ जसु घावला ग्यारगत् अधिक आव विषला ग्या मरु उठत॥ निवन वनिगाइ को दूध पिनुनि
 कोहे॥ फल तावल भुट नासर सरावना॥ सो तावल भाग १६ घर भाग २ डाडि मकि छाला भाग ३॥ इति पि
 सिवस्त्र गलित गर्नु १ थुकमि सि घाव लावनु दिन ३ उ पत्तैल सित बुकनि घालनु घाव पुरिय॥ २॥ भेडा
 को सिगपि सिवस्त्र गलित गर्नु तिल तेल संग लावनु घाव पुरिय॥ ३॥ अउ क को ज डो मुत पि सिलावनु वा
 डाक सरा को घाव पुरिय॥ ४॥ अवला मुत सित लावनु घाव पुरिय॥ ५॥ हल्ल्या को ज डो म हा विरुका
 दुपा आव का पात॥ इति सम गरि पि सि घृत मुहि घालनु घाव थाक॥ ६॥ सेत वरुवा हि विरिखा को व सो पि
 ता सिउउ को दूध वेडु को दूध॥ इति पि सि वाति गर्नु घाव लावनु साल आव॥ ७॥ निला थो ता कु विला
 घालनु साल आव॥ ८॥ को दा को भस्म तेल संग बुकनि घालनु घाव पुरि वषटि रो पुरियं थाक॥ ९॥
 निर्दुडिका पात पि सि घालनु घाथाक॥ १०॥ सफे कार क संग लाइनु वाकटा भयाटा लिय न॥ आव ५८
 को ज डो पि सि घालनु घाव पुरिय॥ ११॥ अरिड का पात पि सि बुकनि घालनु घाव पुरिय॥ १२॥ वरि मिला

10

5

केसर माता १ विधिति भाग गर्नु
 रक भाग क दोर माता विउ से मागा ३
 उहुने त को ले भाग क न ह लो जा

मेरु घो टितो ला १ राखनु करवा तेल संग घालनु बल ह लो जा वा दु ल पात्मा को पात पि धि क प ही
 न गरि घाल मा राखनु जा म्पा घाव पद्धि धानु बल ह लो जा प ६
 को बुकनि घालनु घाव पुरिय॥ १३॥ वा दु ल्यात्मा को दूर्ण घालनु घाव पुरिय॥ १४॥ भेडा कु हा को रस्
 घालनु घाव पुरिय॥ १५॥ इति व प्रतिकार समाप्त॥ अथ बल लो प्रतिकारः॥ धाइ रा का
 फुल पि सि दूध संग पिनु स्त्रि को ष ल ह लो जा॥ १॥ गा इ दूत दूध षाउ षानु ष ल ह लो जा॥ २॥ वुरा
 व स को फुल के पाइ को ज डो अगार॥ इति पि सि वस्त्र गलित गर्नु घालनु ष ल ह लो जा॥ ३॥ अवला पुन
 र्न वा मुथो सम गरि उ मालि सह संग घालनु ष ल ह लो जा॥ ४॥ वा दु ल्यात्मा बुना कि छाला षयर
 जेठि सह॥ इति सुं पि सि कार्ति कि सह संग घालनु अथ वा वो लानि संग पीनु नि लो पि रो ष ल लो जा॥ ५॥
 इन्द्रा इनि को विजरु ह ले दो षयर मुग का सातु॥ इति सम गरि पि सि कार्ति कि सह संग घालनु ष ल लो जा॥ ६॥
 का वो ह ले दो भुइ का फुल को ज डो का स को ज डो॥ इति सम गरि पि सि व दु का ट पा नि घालनु व दु को
 राखनु पिनु ष ल ह लो जा॥ ७॥ इति बल लो प्रतिकार समाप्त॥ अथ प्रसूति प्रतिकारः॥ धतुरा
 को ज डो पि सि जो नि मित्र घालनु सुष प्रसूति हो॥ १॥ सिधो तिल तेल पि सि ज्यो नि घालनु सुष प्रसूति हो
 के रा का सुपला को पानि क दो र मा मा सा ६ राखनु इति ५ अ मि म मिला इ घालनु पिठ मा ला ३ नु

इति
 वल
 लो

५८ देवारकावो काकोवृणगरिअवला प्रमावासिपानिसंगवानु। सुषप्रसूतिहो॥३॥ पुनर्नवाकोजुडो
 पिसिनाभिउपरतेलेलाइनुसुषप्रसूतिहो॥४॥ कोसकोसविषविषकासमहाकासखाहा॥ यामंत्र
 राम० पंचसुगंधालेभुजपत्रलेषनु। होविजमथेरोगरिअस्त्रिवेहावनुसुषप्रसूतिहो॥५॥ ॥इतिप्रसूति
 प्रतिकारसमाप्त॥ ॥अथभगसंकोचप्रकारः॥ जामुनिकेहाला माजुफुलसुफिरकिरि। पिसिम
 हसंगलेपगरियतभगसंकोचहो॥१॥ दाडिमकेहालाकावोहलेदोपइयाकोफुलदेवारकोका
 ठ। दूर्गागरिवस्त्रगलितगर्नुआफुकोरसद्यालिपिसिभगलेपगर्नुभगसंकोचहो॥२॥ रातोरासाटोमासि
 विजया० फटकिरिधाइराकाफुलधतुराफु। कोयानिवाहिपिसिभगलेपगर्नुभगसंकोचहो॥३॥ ॥इतिभग
 संकोचप्रतिकारसमाप्त॥ ॥अथभगद्रोणप्रतिकारः॥ कायोहलेदोभंगिराजवज्रोसिवालहरडा
 सालकिरालगुडवाडुल्याताअनैविजाइफलपिपलाधाइराकाफुलमजिटोकटुकि। समगरि
 पिसिवस्त्रगलितगर्नुविडराकोरसद्यालिषल्लनुतिलतेलसंगपकावनु। भगलेपगर्नुभगद्रोण

शिव०

५८

५८

* विरलाकोहाडघोटिभगलेपगर्नुभगंद्रजा ५९

न। पुषमेहजा॥ भगवटीरोपटिराजान्॥२॥ जाइफलभाग१वकोपातभाग४हिगभाग१गुर्जोभाग४सु
 ठोभाग५सिधोभाग२महिसंगपिसिभगलेपगर्नु। भगंद्रराजा॥३॥ पिपलाहलेदोवकाइनाकिहा
 लासुपारि। रतिपिसिभगलेपगर्नुभगंद्ररोगजा॥४॥ त्रिफलागुडसंगभगलेपगर्नु। भगंद्र
 रोगजा॥५॥ कुककोहाडपोलिवस्त्रगलितगर्नुतिलतेलसंगभगलेपगर्नुभगंद्ररोगजा
 ॥६॥ सापकिकायुलिमस्त्रगर्नुत्रिफलाद्यतमुद्धिभगलेपगर्नुभगंद्ररोगजा॥७॥ कालाअैसा
 लुकोजडेपिसिनकनिसंगभगलेपगर्नुभगंद्ररोगजा॥८॥ ॥इतिभगंद्ररोगसमाप्त॥ ॥
 अथअस्त्रप्रमेहप्रतिकारः॥ वुरसकोफधाइराकाफुलगुर्जोभंगिराजजिरो॥ रतिपिसि
 वस्त्रगलितगर्नुमहमुद्धिअवलाप्रमानवानुस्त्रिप्रमेहजा॥१॥ इडाइनेकोजडे। विजालवागअवला
 पाडा। रतिपिसिवस्त्रगलितगर्नुतववानुस्त्रिकोप्रमेहजा॥२॥ ॥इतिस्त्रिप्रमेहप्रतिकारस
 माप्त॥ ॥अथयेचकिराकारः॥ हरडागोवरपकावनुसुवागफुलाइसमगरिगुडसंगवानु

६०

तो तो पानि पितु। वाल किरा जा ॥ १ ॥ सुवाग फुला ॥ कौ डो जारि सुयि हि ग सम गरि पिसि गा इ काम
 हि संग पिनु ॥ वाला किरा जा ॥ २ ॥ हि ग जवानु हर उ सुवाग गुड सम गरि पिसि भले को ॥ उमा
 जात कपिया वनु पेठ का किरा जान ॥ ४ ॥ इति पेठ के रा प्रतिकार समाप्त ॥ ॥ अथ फिया प्रतिकार
 ॥ ॥ पट कुचारे के गुदिसि धो न वनि संग घानु फियो जा ॥ १ ॥ जोषार आव कापात को भस्म दहि
 काया ॥ २ ॥ संग घानु फियो जा ॥ ३ ॥ पलास का पात को भस्म पिपलास ह। यति पिसि विरा लापाद
 प्रमान घानु फियो जा ॥ ४ ॥ वायु गुल्म जा ॥ ५ ॥ भला या हर उ डिरो वि तो गुड। यति संग गरि पिसि
 वला प्रमान घानु फियो जा ॥ ६ ॥ सिउ उ को दूध पलर पत कुवारि को गुद पलर लुन मुठि ॥ वा
 का कसुत पकावनु पेठ लेप गर्नु ॥ फियो जा ॥ ७ ॥ वासक सिवालिरु जे लुन सम गरि पिसि गौतप
 कावनु पेठ लेप गर्नु ॥ फियो जा ॥ ८ ॥ गाका रोह ले दो सिउ उ को दूध भंगि रा जा ॥ यति संग उतप का
 इ पेठ लेप गर्नु ॥ फियो जा ॥ ९ ॥ दिन ट लेप गर्नु ॥ १० ॥ दाडिम कि छाला निव कापात अक कापात सम गरि

६०

पिसि वाकि का दूध पकावनु पेठ लेप गर्नु दिन ट फियो जा ॥ ११ ॥ पिपलावार भाग ॥ केला
 वार भाग ॥ कुमि उषार भाग ॥ नागा जूनि वार भाग ॥ वाकासुत पकावनु पेठ लेप गर्नु फियो जा ॥
 १० ॥ इति फिया प्रतिकार समाप्त ॥ ॥ अथ हियो उर हो प्रतिकार ॥ दाष घाउ हर उ सम गरि पिसि
 घानु पेठ उ उह दो जा ॥ १ ॥ घाउ वाकि को दूध घानु हियो उ ह दो जा ॥ २ ॥ अदला को दूध मसूर
 घानु पेठ उ उह दो जा ॥ ३ ॥ सुशालि कुमि उषानु पेठ उ उह दो जा ॥ ४ ॥ लसुन शि तो बुक ॥ यति पिसि मवला प्र
 मान घानु पेठ उ उह दो जा ॥ ५ ॥ पै या को घोरो उ मालि पेठ लावनु पेठ उ उह दो जा ॥ ६ ॥ लवाग भाग ॥ मेहल फ
 ल भाग ॥ वजो भाग ॥ पिपला भाग ॥ सुठो भाग ॥ घाउ भाग ॥ पिसि दूध गंदिनु विरा लापाद प्रमान
 घानु हियो उ उह दो जा ॥ ७ ॥ ॥ इति हियो पेठ उ उह दो प्रतिकार समाप्त ॥ ॥ अथ नाथुरा प्रतिकार ॥
 निर्विशिष्टो टि नाश दिनु नाथुरो रह ॥ १ ॥ आव को कोर लो पानि घो टि नाश दिनु नाथुरो निको हो ॥ २ ॥
 अदला पिसि घत पकावनु सिर मर्दन गर्नु नाथुरो रह ॥ ३ ॥ कुसुम का फुल कोर सदा डिम का फुल कोर

६१

सद्वक्त्रकोरसवाक्रिकोदूध। एतिसमगरिनासदिनु। नाथुरोवहदोरह॥४॥षाडमा^ऊरगाइकोदूधनास
दिनुनाथुरोरह॥५॥जीमुनाकोरसदाडिमकाफूलकोरसदुवाकोरसनासदिनु। नाथुरोरह॥६॥दाडि
मकाफूलकोरसदुवोरसवाक्रिकोदूधनासदिनुनाथुरोरह॥७॥इतिनाथुराप्रतिकारसमाप्ता॥ ॥अ
थकोसोडप्सासेप्रतिकार॥अजैपालकेछालाभाग१लवागभाग२सुदुवाकोरसद्वालिपिसिगुजाप्र
मानवडिवाधनुप्रभातवडिवाधनुकासोडप्सासेजा॥३॥हरउरायोधनिया। जीवाडिबुरवैरिदुका
जवानुसिधोसौरललितोफुलमाजनिममगरिपिसिवस्त्रगलितगनुगाइघतसंगषानुकासोड
प्सासेजा॥४॥सामुलोकदुकिमरिवजवानुसिधोसौरलपिपलाजिरोकावाडिबुरवैरिदुका
विजनिवकापातधनिया। एतिसमगरिपिसिवस्त्रगलितगनुप्रभातषानुकासोडप्सासेजा॥५॥सिवालि
जवानुसुढोहरडाहिगवितोसमगरिवस्त्रगलितगनुतातापानिसंगषानुकासोडप्सासेजा॥६॥कनि

जो.
६१

कगुडकाबोहलेदोगावृतमुहैअवलाप्रमानषानु। कासोडप्सासेजा॥७॥त्रिकुयविफलावलुसि
वालिआवपिसिवस्त्रगलितगनुबुककिपुठदिनु। अवलाप्रमानषानु। कासोडप्सासेजा॥८॥ ॥इति
सोडप्सासेप्रतिकारसमाप्ता॥ ॥अथवायुगुल्मप्रतिकार॥हरउवरडासौरलसमगरिपिसिदधिका
पानिसंगषानु। अथवातातापानिसंगषानु। वायुगुल्मजा॥९॥जवानुसुढोहरडागुडपिसिषानुवायुगु
ल्मजा॥१०॥त्रिकुयवितो जवानुवाधुलात्मानुगुथैविजोभंगिराजहरउसिधो। समगरिपिसिवस्त्रगलि
तगनुतातापानिसंगषानु। वायुगुल्मजा॥११॥सुवागसिधो। जेरोकालो। जेरोहिगजवानु। समगरिताता
पानिसंगषानु। अवलाप्रमानषानुवृतसंग। वायुगुल्मजा॥१२॥हिगभाग१वजोभाग२पिपलाभाग३
सुढोभाग४जवानुभाग५हरडाभाग६वितोभाग७इतिपिसिवस्त्रगलितगनुमहसंगषानुअथ
वातातापानिसंगषानुवायुगुल्मजा॥१३॥ ॥इतिवायुगुल्मप्रतिकारसमाप्ता॥ ॥अथहरीसंगप्र
तिकार॥कचनारकेछालाकाफूलकेछालापिसिवस्त्रगलितगनुकार्तिकमहसंगषानुहरीजा॥१४॥पेप

लामरीवा। वानुह शीजान् ॥ २ ॥ पिपलके छालामुशालिसमगरिषानु गुड संगम्रवलाप्रमा
 नवानु। ह शीजान् ॥ ३ ॥ पाउमरु रक्तवदनसमगरिपिसिबौ लानिसंगषानु। ह शीजान्
 ॥ ४ ॥ मेरुलके छालालिवागवजोपिपलासु ठोसमगरिपिसिषाउ संगविरालापादप्र
 मानवानु। ह शीजान् ॥ ५ ॥ गुडपिपलाषानु। ह शीजान् ॥ ६ ॥ हरडावृतसंगभुटिषानु। ह शी
 जान् ॥ ७ ॥ गोनीनितिलसंगषानु। ह शीजान् ॥ ८ ॥ दहिमाउ संगषानु। ह शीजान् ॥ ९ ॥ हरजोवितो
 गुड। रतिषानु। ह शीजान् ॥ १० ॥ पिपलके छालामुशालिदधिसंगषानु। ह शीजान् ॥ ११ ॥ ति
 लभालाहरजोवितोगुडजिरोसमगरिपिसम्रवलाप्रमानवानु। ह शीजान् ॥ १२ ॥ तिलभला
 याहरडासंगषानु। ह शीजान् ॥ १३ ॥ वितोभलायाहरडा गुड रतिसंगपिसिषानु। ह शीजान् ॥ १४ ॥
 वलाप्रमानवानु। वा। लेपगर्तु। ह शीजान् ॥ १५ ॥ माछाकाकाठासापके कायुलिविरोलाकिछा
 लावृतमुटि। पुवारुदिनु। ह शीजान् ॥ १६ ॥ ॥ इतिहरीप्रतिकारसमाप्त ॥ ॥ अथशूलरोगप्रति

॥ ३ ॥ मरीच. पिपला. शूल. सिंधी. मिश्री. मरु. सम गरी चटाउनु वातकको मुत्रक
 कावियापिपलामरीचसिंधीवजोलसुनमनसिल ॥ समगरिगोतसंगपिसिभ्रंजनगर्तुसन्निपा
 तजा ॥ १ ॥ लवागशूलैरिषयरमनसिलजिरोत्रिकुटासमगरिपिसिषानु। सन्निपातजा ॥ २ ॥ ॥
 इतिसन्निपातप्रतिकारसमाप्त ॥ ॥ अथमुत्रक शूलप्रतिकार ॥ ॥ मुसाकिविष्टिपिसिनाभिलाइनु रंदि
 लेपगर्तु। रुइनजा ॥ १ ॥ अलैरिपिपलापषानभेदसिलफारोको छाकाविजगोषुरो वास करुतिसंगरि
 उमालनुषाउसंगषानु। मुत्रक छुजा ॥ २ ॥ सिलफारो कटुधनिउविहिराजवृक्षकागुदिसमगरि
 उमालिबौलानिसंगषानु। मुत्रक छुजा ॥ ३ ॥ अलैरिपिपलामनसिलसिलफारोसिलाजुसमगरिउमा
 लनुबौलानिसंगषानु। मुत्रक छुजा ॥ ४ ॥ सिलफारोजेठिमहअलैरिपिपलासेताम्ररिउकोफलवासकागो
 षुरोहरडासमगरिउमालनुषाउसंगषानु। मुत्रक छुजा ॥ ५ ॥ अश्वगंधागोषुरोउमालिदूधसंगषा
 नुमुत्रक छुजा ॥ ६ ॥ गोषुरोततादूधसंगततादूषानुमुत्रक छुजा ॥ ७ ॥ गोषुरोतातो गरिदहि
 षाउसंगषानुमुत्रक छुजा ॥ ८ ॥ अलैरिसिलफारोसिलाजुपिपलासमगरिपिसिबौलानिगुडरयालिपिउ
 खरा भाग १ वाक्राको वकोलो भाग १ लमगरी नाभिकावतुः सहिते

निकोले

मुत्रक छुजा

६४

राम

मुत्रकृद्वाषराश्चाहाम्यलैविका का का वियापिसिबौलानिदूधसंगघानुमुत्रकृद्वा॥१०॥ **॥ इति मु**
त्रकृद्वाषराश्चाहाम्यलैविका का का वियापिसिबौलानिदूधसंगघानुमुत्रकृद्वा॥१०॥
त्रकृद्वाषराश्चाहाम्यलैविका का का वियापिसिबौलानिदूधसंगघानुमुत्रकृद्वा॥१०॥
 निरयालिनुरुदनजा॥१॥ जौषारमिसिनिवातसंगघानुरुदनजा॥२॥ तिलजालिमहसंगघानुरुदन
 नजा॥३॥ सिधोसोबलसमगरिपिसिमहसंगघानुरुदनजा॥४॥ सुहोपिपलासिधोअजवाइनिहरउ
 पिसिघानुरुदनजा॥५॥ कालाश्रैस्यालुकोजउकुटदूवोहलेदोवाकिदूधसमगरिपिइदिलेयगनु
 मुत्रमुक्तहो॥ रुदनफुट॥६॥ विहिकपुरनिलायोतासुवागसमगरिथुकघोटिउत्रायाटकिवातगनि
 वातिश्रोषधवृपनुसोवातिवालिवेरइन्दिकाक्षेद्रघालिराघनुषरोमुतासलागततवकाछनुतरुवनिष
 स॥७॥ मिसिमरीववतासमगरिघानु॥ कालारुदननिषस॥८॥ **॥ इति रुदनप्रतिकारसमाप्ता ॥ अथ रुद**
प्रतिकारः ॥ पिपलाहलेदोपिसिनवनिसंगहातगोअलावनु॥ रुदपटिरह॥१॥ तावाभाउकावदुका
 पानिभरिनामिमाथिरावनु॥ हातगोअलावनु॥ भैसिकिनवनिपुरानुवुकमथिहातगोअलावनुवद

१ वटपटि जा॥२॥

६४

सर्हिउपिसिवाकिदूधभिजावनु॥ हातगोअलावनुवदपटि जा॥३॥ अरिउकाजउकोरसकायोहलेदोविउराका
 पातकोरसपिपलाका॥ दूवाकोरसतिल॥ गाइकोनवनिसंगफावनु॥ हातगोअलावनु॥ वायुकिवदपटि जा॥४॥ ज
 वानुत्रिकुणकावोहलेदोसिधो॥ अरिउकापाते॥ वुकधनिया॥ गाइवत॥ समगरिपिसिलोहाभाउभलकोर
 उमालनु॥ अष्टगलेपगनु॥ वदपटि जा॥५॥ इति वटपटि प्रतिकारसमाप्ता ॥ **॥ अथ विनासप्रतिकारः ॥ अथ विना**
ल० वयर० पिसिभैसिकिनवनिसंगलेपगनु॥ विनास जा॥१॥ काफलकिहला० वयर० अजपाल० इति पिसिभै
सिकिनवनिसंगलेपगनु॥ विनास जा॥२॥ हर्वि० निर्मिश० अजपाल० विष० पवान० भेद० सिधो० इति पिसिभै
 सिकिनवनिसंगलेपगनु० विनास जा॥३॥ भलायाभाग१ अजपालभाग१ कुमाग१ निवभाग१ राजवस
 किगुदिभाग१ भैसिकिनवनिसंगलेपगनु॥ विनास जा॥४॥ **॥ इति विनासप्रतिकारः ॥ प्रथमोऽध्यायः ॥**
अथ स्थंभनप्रतिकारः ॥ अतिमृविलोनवानु॥ अतितातो नवानु॥ अतिरुवानवानु॥ विष
 हिनहो॥ अस्त्रिउपरमननहोतस्निमित्त० स्थंभनगतु० वाकदूध० मह० दूत० सुवावटगनु॥ सिधो० पिप
 मिश्रीतातापानिपनुमुत्रकृद्वा
 गुरुकापानिदिनुभिजावनु

इति
 कालाश्रैस्यालुकोजउकुटदूवोहलेदोवाकिदूधसमगरिपिइदिलेयगनु
 मुत्रमुक्तहो॥ रुदनफुट॥६॥ विहिकपुरनिलायोतासुवागसमगरिथुकघोटिउत्रायाटकिवातगनि
 वातिश्रोषधवृपनुसोवातिवालिवेरइन्दिकाक्षेद्रघालिराघनुषरोमुतासलागततवकाछनुतरुवनिष
 स॥७॥ मिसिमरीववतासमगरिघानु॥ कालारुदननिषस॥८॥ **॥ इति रुदनप्रतिकारसमाप्ता ॥ अथ रुद**
प्रतिकारः ॥ पिपलाहलेदोपिसिनवनिसंगहातगोअलावनु॥ रुदपटिरह॥१॥ तावाभाउकावदुका
 पानिभरिनामिमाथिरावनु॥ हातगोअलावनु॥ भैसिकिनवनिपुरानुवुकमथिहातगोअलावनुवद

20

६५

ला। दूर्णगर्नु। संगषानु। स्थंभन हो॥ वात्रिका दूध तिलपकावनु। का लातिल दूध रुखावना। धनुना
 फुलति पि सि बालि वेरषाउ संगषानु। तातो गरि दूधपिनु। स्थंभन हो॥ रा। अरिउ का विया। जोर फुल
 अफिम। रतिपि सि बानु। स्थंभन हो॥ ॥ रति स्थंभन प्रयोगः॥ अथ संवदूर्ण नाम वीउ। स्वाग भाग ५
 विष भाग ३ मरी। र भाग २ सि बालि कार सवा लिख लूनु। दिन संवदूर्ण नो मने डि। पे ट दु प्री जा। भो क लाग।
 सर्व दा मु जा। इति संवदूर्ण नाम वीउ समाप्त॥ ॥ अथ वटि र व ह अति सार प्रतिकारः॥ अथ क को व वावनु नु
 ष को वटि र जा। दहि ग र को ज डो। को ह ला व वावनु। फल व वावनु। रा अ व लो को व ए म ह संग षा
 हिया कि व ह जा। टि वर। दूत। माउ वानु। हिया कि पि हिया कि व ह जा। ॥ ३॥ द्या ३ नि की ज डो को व ए त्रिको
 सम गरि। ताता पानि संग पिनु। मूल जा। ॥ ५॥ सुषे हि ग। जिरो व जो मरी। र। ग र ताता पानि संग षानु। सर्व फुल ६५
 जा। ॥ ६॥ जवानु। सि बालिका दूर्ण हि ग। सो य ल। उ न्या को दूर्ण सम गरि ताता पानि संग षानु। पे ट कि व
 ह जा। ॥ ७॥ हर डो। सु ठो जवानु। हि ग। सो य ल। यिता को ज डो। सि बालिका पात। का क र्ति गो। सम गरि दूर्ण गर्नु
 ताता पानि संग षानु। पे ट कि व ह जा। ॥ ८॥ अति सार जा। ॥ अथ अति सार प्रतिकारः॥ भाग का टु पा अरिउ

15

10

5

तिमिरा को दूध

बालि ५

का टु पा वरी मिला का टु पा। लुन ठिका पात वे हि भुवुरा बालि पकावनु। पि सि माउ संग पिनु। रक्त अति सार जा। ॥ ८॥
 जवानु सिमल को षो डो। सु ठो धा र का फुल। सम गरि दूर्ण गर्नु। गा र काम ह सि ग दिनु। अति सार जा। ॥ १०॥ अक।
 वी या का फुल कि छाला। के रा का गानो को पानि। को र रा। सु लो। गा र काम हि संग दिनु। वानु पे ट छे दि दो र हा। ॥ ११॥ हि ३
 पाट ला को ज डो। जा मु ना कि अत छाला। धा र का फुल। का फुल कि छाला। जवानु। सिमल को षो डो। सु ठो।
 रति सम गरि। दूर्ण गर्नु। गाला दहि संग षानु। पे ट प छारि दो जा। र ह। ॥ १२॥ ॥ इति अति सार॥ अथ वल लो
 गाना प्रतिकारः॥ ति मी को। ह ध के रा का गु भा को पानि। जवानु सिमल को षो डो। धा र का फुल। सम गरि कार्ति
 कि म ह संग सम गरि षो नु। अ स्त्रि को षल ह लो जा। ॥ १०॥ हि ३ द्या जवानु। सु ठो। सो य ल। यिता को ज डो। सि
 बालि को ज डो। सम गरि षानु। गानु या ति माव। ॥ ११॥ यिता को ज डो। पि पेलि मूल। सि वी जवानु। हर डो। सु ठो।
 सम गरि दूर्ण गर्नु। ताता पानि संग षानु। अथ वामाउ संग षानु। अथ बा भा त संग षानु। भो क लागो। नि धा र जा। म
 दग्नि जा। सरी पुष्ट हो। ॥ १२॥ ॥ इति गाना प्रतिकारः॥ अथ स्त्रि को वर माव दो प्रकारः॥ दा उ म का फुल। सिमल को
 षो डो। जा मु ना कि छाला। यो लानि संग षानु। सु त्कारि को र ग गु त र ह। ॥ ११॥ वल का पात। जा र का पात। डा दि

विहि।

मको बोको. पिसिअंगधूपगनु. सुत्कारिकोर मत्तर है।। राक रुवातेल. जवानु. वृतवानु. जत्रगरिरावनु. धर
 ६६ शेषदो आवदोरह।। ३।। सिखाको जडोकंठवाधनु. वोकोको राल भगलानु. वरमावदोरह।। ४।। इतिमित्रिको
 घरमावदोप्रतिकारः।। अथगुदमावदोप्रतिकारः।। मुसाकोमासुकुटुरागरि. वृत्तसोइसंगसकनु. गुदमित्रजा।।
 ताव. यामिलाकोरसवटुकोटसिधोपल. वाकूकोवृत्तपल. ४. एतियाकत्रगरिपकोवनु. सोवृत्तवृत्तपनु. से
 कगनु. सातोइगुदमावदोरह।। २।। मुशालि. पुनर्नवा. कुक्ति. कोडो. वलुकाजिमासकोतलकोपिठो. एति
 सकत्रगरिपकावनु. उवावहुतगरिभगसखनु. गुदवाहिरमावदोरह।। ३।। धयर. मरु. मसालुकाटुपा. सु
 पारि. जाइकाटुपा. सिपलसुकावनुपिसिवस्त्रगलितगनु. मरुमुहिलारनुफाद्योभगपरिय।। ४।।
 इतिगुदमावदोप्रकारः।। अथप्रमेहप्रतिकारः।। लायावृत्ति. त्रिफला. हलेदो. मरु. संगवानु. प्रमेहजा।। १।। य
 नेनवा. वधनियाकोहला. वराउसकोफल. सिमलाकोकोटो. धारराकीधृतहला. एतिसंगगरिदूरागनु
 मरुसंगवानु. प्रमेहजा।। २।। कोहकोविया।। दूधकि. वृत्तसंगवानु. प्रमेहजा।। ३।। वलुकाविया मरुसंगवानु. ६६
 प्रमेहजा।। ४।। इतिप्रमेहप्रतिकारः।। अथमौलाजराप्रतिकारः।। ततोकेरवा. पचा. दूध. योकिहला

२५१

भुनिमसिक. दुकिनिव. सुमयाकाजडा. श्रीखंड. अलैवि. लवागा. एतिवोषधि तातो गरिपिनुमवल जाइजा।। १।।
 अवलाहरडा. मुथो. रितो. कैरुवानिवा. उमालि वि सोगरिपिनु. औलाजरोजा।। २।। तितोमुनिकेनिवइव।। सिकराइवे
 त्रदनु. यतिउजा. त्रिफला. तुवाहला. जमु. न्यासां. दूकिहला. क. दुकि. मासि. हलेदो. धनिया. गुजो. नगुर्यो. उसि
 रडमालिवटुकाटपाछेराषनु. वटुकोरसितगरिनिवातरसंगवानु. औलाजरोजा।। ३।। तितोकेरवाउमालिपिनु. औला
 जरोजा।। ४।। प्रमेहजा।। ५।। तितोकेदुकि. हरडा. उमालिपिनु. औलाजरोजा।। ६।। धरिकेअतहला. उमालिपिनु. औलाजरो
 जा।। ७।। राताविउराकोजडोसियलापानिसंगवादिनु। कदुकेपिसिदिनु. औलाजरोजा।। ८।। तितो. पानिसंगपिसि
 दिनु। आगलाइनु. सुपाकोवतासगनु। औलाजरोजा।। ९।। इतिमौलाजराप्रतिकारः।। अथजुकाप्रतिका
 ५ तितो. हरडा. हलेदो. अगाउकोवोकोउमालि वि सोगरिपिनु. रसवितरदो. निकोहो।। १।। किमुकोजडो.
 पिसिमरुसंगपिनु. जुकाजानु।। २।। जाविउराकोजडो. पानिसंगपिसि. पिनु. जुकाजानु।। ३।। रघाकोजडो. महि
 संगपिनु. जुकाजानु।। ४।। विउराकोजडो. पानिसंगपिसि. पिनु. जुकाजानु।। ५।। घडाधरोपिसिपिनु. गररोगजा।। ६।।

६७

सिंहो हो गिपेनु जु का जान ॥१॥ सिरु का जरा कुटिपानि संग कप हीन गनु तवपिनु जु का जान ॥२॥ बुद्ध्या ओषो
 टिपिया वनु जु का जान ॥३॥ इति जु का प्रतिकारः ॥ अथ पूरा प्रतिकारः ॥ वयर सुपारि भैरवा लुका दुपा सुका इपिसि
 महसगषानु लाइनु पूरा जा ॥४॥ जाइ का दुपो सुका इपिसि महसगषानु लाइनु पुषरो जा ॥५॥ इति पूरा
 प्रतिकारः ॥ अथ लता प्राते कारः ॥ सन्यालेपि सिलाइनु लता जा ॥६॥ गयउ को ज लाइनु लता जा ॥७॥ सला को
 पोरोते लसग लाइनु लता जा ॥८॥ केरा को बो गोपोलि न संग नु तेल संग लाइनु लता जा ॥९॥ बुरे तेल संग स
 र्यपाक गनु सोते ले लाइनु लता जा ॥१०॥ कपा सका विया को तेल लाइनु सर्व लता जा ॥११॥ इति लता प्रतिकारः ॥
 अथ भगवटि रा प्रतिकारः ॥ जाइ का पात पि सिलाइनु भग को षटि रो जा ॥१२॥ तितो मह निव रति पि सिलाइनु
 भग को षटि रो थाक ॥१३॥ लवा ग जिरो निवा त म्रु ड क को ज डो पानि संग पि सिलाइनु भग को षटि रो थाक ॥१४॥ ता
 ता ता से पा कर सलाइनु भग को षटि रो थाक ॥१५॥ नि ला यो तो लाइनु भग को षटि रो थाक ॥१६॥ इति भगव
 टि रा प्रतिकारः ॥ अथ दध प्रतिकारः ॥ बुत्रा कि द्वा ला संजार कि द्वा ला मरि ठ का फल कि द्वा ला जेठ मह लो

राम०
६७

का३

५ बु ५

ध स म गरि पि सिलाइनु दध जा ॥१॥ अस्त्रिका दूध बो टि म्रि म लाइनु दध जा ॥२॥ गुड परि सुवा ग लाइनु दध जा
 ॥३॥ कुकु डी इना को रो प लाइनु दध जा ॥४॥ भला या को र स लाइनु दध जा ॥५॥ हल हला को ज डो बो टि व क स
 ग म धूत व द द क ना क लाइनु दध जा ॥६॥ अक्ला दुवो गुजो हले दो सवाले धै सोय को द रति स म गरि पि सिला
 इनु सर्व दध जा ॥७॥ दुभिक जा ॥८॥ इति दध प्रकारः ॥ अथ मुत्र क दू प्रतिकारः ॥ धनि ड मह संग षानु मुत्र कि दू जा ॥९॥
 कुभिं डो को ज डो गाइ का द धिका पानि म ह संग षानु मुत्र क दू जा ॥१०॥ गुजो ता तो गरि पिनु मुत्र क दू जा ॥११॥
 जिरो पि सि मह संग षानु मुत्र क दू जा ॥१२॥ मरि व गुड षानु मुत्र क दू जा ॥१३॥ इति मुत्र क दू प्रतिकारः ॥
 अथ मुत्र निरोध प्रतिकारः ॥ पषी न भेद प्रभा त षानु दो लानि संग षानु मुत्र निरोध जा ॥१४॥ मुत्र क दू जा ॥१५॥ धनि
 याम जिटा का जलिरा षाडु स म गरि दो लानि संग षानु मुत्र निरोध जा ॥१६॥ अवला सुठो मह स म गरि षानु
 मुत्र निरोध जा ॥१७॥ इति मुत्र निरोध प्रतिकारः ॥ अथ रुदन प्रतिकारः ॥ अड क का पात कार स सिधो गाइ
 कि न वनि संग ले पा नु अरि उ का पात ले से का नु रुदन व स ॥१८॥ अथ पान जात र सा विरु हुं त मुत्र निरोध हो ॥

20

द्वार

६८

राम

मुकीहो सारिमुनियपटलाग फुदिनि स्तुनवाताना सैवैपेटाभरिमावदूधदिनु सारंदिमुषडाह
 उठ मुत्र नवेगहो मुत्र नम्राको सारिहोत साधु मुषाउ उपायलो गो असाधनया शिरिवाठ
नु काद्यापक्षि य मा सरहिनु नदिनु अस्तिवानु ॥ ॥ इति रुद्र न प्रतिकारः ॥ ॥ अथ कफ वात पित्त
लक्षण ॥ वट परिश्रु धनि श्वेव मुख क दुर्क स्वादक ॥ दधि पुपित वण र सरो गि पित्त वातकः ॥ रक्त
नेत्र निजाति वनसि काप वन धु वम ॥ त्रिषा मुच्छा कं ड सोष संरो गी रक्त वातक म ॥ ॥ निष्टा नु स्वादु
कं नि तं शु कं लालं वजु जुरि ॥ क्षि ने जा उं क्षि ने तापं सरो गी कफ वातक म ॥ ॥ इति कफ वात
पित्त लक्षण ॥ ॥ अथ अतुल लक्षण ॥ मार्ग शीघ्रं तथा पौषे माघे वाषा ण मावणे ॥ तथा भाद्रपदे वै
वरी ते रा जो प्रकीर्तिता ॥ ॥ फाल्गुणे रौद्र मासे च यस्यापि डाक रोति ॥ सित उष्ट्रा समुत्पन्नौ श्वेष्वा
रा जे प्रकीर्तिता ॥ ॥ इति अतुल लक्षण ॥ अथ कथं प्रतिकारः ॥ संज जरो विज रो वापि पि क्तो परि
भुज ते जे पु लं वन सपो क ते गु ए लु घु भो ज ने ॥ ॥ ॥ सुका फुल कु पथ गु उ दिनु ॥ विर का कु प थ द हि

मा

६८

15

10

5

दिनु। दधिका कुपथ सिधो दिनु। के रा का कुपथ लुन ता तो पानि दिनु। वटुक का कुपथ लुन ता तो पानि दिनु
 मा ह्ना का कुपथ सिधो दिनु। सौ र ल हि का दिनु। दूध का कुपथ पा ड दिनु। ला उ का कुपथ गु उ दिनु। सि हा का गु ना
 का कुपथ लुन उ मा लि दिनु। ता सि धा ये का कुपथ हर जे। चि सो पानि दिनु। अ विला का कुपथ गु पो लि दिनु। रो टिका
 कुपथ अ व दिनु। अ व का कुपथ जि रो दिनु। पि डा लु का कुपथ त्रि फ ला ड मा लि दिनु। हरिया सा ग का कुपथ लि ल गु ड
 दिनु। गु ड का कुपथ दू ध दिनु। सि र्ब नि का कुपथ ल वा ग ड मा लि दिनु। पानि का कुपथ म ह मरी र दिनु। षा ड
 का कुपथ म हि दिनु। म हि का कुपथ पा को ह ले रो दिनु। हि ग का कुपथ ति ल दिनु। ति ल का कुपथ अ व ला उ मा
 लि दिनु। अ सि दो ष का कुपथ जा इ फ ल गा र वृ त सं ग भु दि दिनु। उ नि जा इ फ ल क र दिनु। स्व प्र भ या हर जे जा
 इ फ ल गा र दू ध उ मा लि दिनु। स्व प्र दो ष नि को हो ॥ त्रि दो ष भ या जा इ फ ल हर जे अ फि म स म गरि पि सि वा क्रि ह
 ध उ मा लि दिनु। ता तो गरि दिनु। अ सि दो ष नि को हो ॥ जा इ फ ल का कुपथ जि रो दिनु। जि रा का कुपथ रा यो दि
 नु। रा या का कुपथ मु सु रो दिनु। म सु रा का कुपथ वा सि पानि नु। धि व का कुपथ षा ड दिनु। तेल का कुपथ मा को पालि

नमो

20

६२

कार

मुलाकाकुपयमासुपोलिदिनुगाजलकाकुपयसिधोदिनुउविकाकुपयमुलाकाविजदिनु। केराकाकुपयवतदि
 नु। कटहरकाकुपयकेरादिनु॥ जवानु० समुद्रफल० सिधो॥ रतिउमालिपिनदिनु। सर्वकुपयानिकोहो॥ ३॥ ॥
 ॥ इति कुपयप्रतिकारः ॥ ॥ अथ अदाहाप्रतिकारः ॥ सरिउरुमुसुरैपातकोरसद्यालिद्योदनुनासदिनु। अदा
 हाजा॥ १॥ सेतासुवरकोवसो० गुड० भईसकोविठरतिपिसिनासदिनु। अदाहाजा॥ २॥ वाउ० कुं कुं मपिसिना
 सदिनु। नेवावृतसंग॥ अदाहाजा॥ ३॥ जेठिमह० पिपलामूल० गाइवृतसंगनासदिनु। अदाहाजा॥ ४॥ ॥ इति
 अदाहाप्रतिकारः ॥ अथ अष्टांगदुष्टप्रतिकारः ॥ कालिसिवालिकाविया० कालिगाइकागउतपिसिअष्टा
 गमर्दिनगनु। अष्टांगदुष्टजा॥ १॥ पुनर्नवाकोजउ० अरिडकोजउ० कपासकाविया० सिवालिकाजिकोपानि।
 वालिपिहम० मल्को० उमोलनु। अष्टांगमर्दिनगनु। अष्टांगदुष्टजा॥ ४॥ जिउदोलाहागुगुलरुगिरिमहसंग
 वानु। अष्टांगदुष्टजा॥ हाउफुडिहिंदाजा॥ ५॥ ॥ इति अष्टांगदुष्टप्रतिकारः ॥ ॥ अथ सिप्रसृतिरोगप्रतिकारः ॥
 ॥ निवकोरस० लहसुन० धईसो० इंदोरनिवायु० विउंगकदाइकोरससंगपिसिज्योनिनेपगनु। वालनु० ज्योनिश्र
 लजा॥ १॥ निवकोफल० अरिउकोकाकोफल० निवकोरससंगपिसियोनिनेपगनु॥ मित्रवालनु० योनिश्रलजा॥

15

10

5

कल्लरुहुदृशीधतुराकोजउकेठावाधनुअधिओजादोरह॥ ३॥ वायाइतिप्रसृतिहो॥ ३॥ धतुराकोजउ
 योनिमित्रवालनु। छाटेप्रसृतिहो॥ ४॥ सिधो० तिलकोतेलयोनिमित्रवालनु। अस्त्रिवेगिफुक॥ ५॥ देवारको
 यूर्गमासा१६पानिसंगपिनुस्त्रिछाटेप्रसृतिहो॥ ६॥ अरिउकापातकोकाहअगुलटजोनिमित्रवालनुमास४
 रहोगर्भस॥ ७॥ पुनर्नवाकोजउपिसिज्योनिमित्रवालनुछाटेप्रसृतिहो। दुषनपाव॥ ८॥ अउककोजउ
 अगु४ज्योनिमित्रवालनुस्त्रिछाटेप्रसृतिहो॥ ९॥ ॥ इति सिप्रसृतिप्रतिकारः ॥ ॥ अथ पित्तप्रतिकारः ॥
 निव० कटुकि० वेलकाजउ० तितोकदाइ० रतितातोगरिषानुपित्तजान्॥ वादुल्यात्पावृतषानुपित्तजान्॥
 २॥ वादुल्यात्पातातोगरिषानुपित्तजान्॥ ३॥ भंगिराजवृषानुपित्तजान्॥ ४॥ काकजंवाधिवषानुपित्तजान्
 ॥ ५॥ पुनानुगुडधिवषानुपित्तजान्॥ ६॥ सिमालिकादुषाभागरनिवभागा१वासककादुषाभागा१अधारा
 उकाजउभागा१दूर्णगरिगाग्राद्योलिसातो१राषनुतवपिनु। पित्तजान्॥ गासुहो० गुडषानुपित्तजान्॥ ८॥
 ॥ इति पित्तरोगप्रतिकारसमाप्त॥ ॥ अथ कानपाकोपिनासप्रतिकारः ॥ कटाइ० पिपला० वज्रो० षयर०

20

60

ल३

६८

सुहोमरीव.सिधो.समगरि पि सिते लपकावनु सो तेल ना सदिनु कान पा को जा ॥१॥ मजुर को घुं दे लौटि कान घालनु
 कान पा को जा ॥२॥ रातो बाउ बा लिवे र पानि भिजाउ राघनु। सो को निका न घालनु। कान पा को जा ॥३॥ सिउ को पात को लि
 कननि तो नु कान घालु। कान कि विडि कनि को हो ॥४॥ रि ठा कि गुदि पि सि का वारि परिलाइनु। कान कि विडि कनि को हो ॥
 पा मरि व. गुड. समगरि कजिका पानि संग पि सि ना सदिनु। पि ना स जा ॥५॥ द्वा वि फला. पिपला. दूर्ण गरि षानु। जो स
 दिनु पि ना स जा ॥६॥ सुवाग. पिपला. देवार. जोषार. अरु उ का विज. पि सि भल्को ॥ तेल लपकावनु। सो तेल ना स
 दिनु। पि ना स जा ॥७॥ ॥ इति कान पा को पि ना स प्रतिकारः ॥ ॥ अथ पि सुडा नाम तेल प्रतिकारः ॥ वलु भाग १
 सिवाल भाग १ कुरिलो भाग ४ विफला भाग ३ केटाइ भाग ३ गुजो भाग ३ वासक भाग ३ मजो भाग ३ वजो भाग ३
 पतालग रुड भाग ४ ॥ इति र क व गरि प का वनु। तेल वाति वला त व का डंनु त व म दिन गनु। हाउ को वा युजा ॥ संधि
 को वा युजा ॥ सर्वांग को वा युजा ॥ ॥ इति पि सुडा नाम तेल प्रतिकारः ॥ ॥ अथ के का मो द क व डि ॥ मरि व भाग १
 हरडा भाग ५ पिपला भाग ३ पिपली मूल भाग ४ वि तो भाग ६ सुहो भाग ७ जोषार भाग २ मलाया भाग ८ सूने भाग ६०

15

10

5

ग १६ दूर्ण गरि पि सुडा त स्को दुनु गुड घालनु व डि वाधनु मासा १६ व डि १ प्रभात म हि संग घातु। मंदाग्नि जा। संग ग्रह निजा.
 यो डुरो जा। ह र्श जा नु ॥ वा क्ता रि जा ॥ ॥ इति के का मो द क व डि ॥ ॥ अथ खल्य मो द कः ॥ मरि व भाग १ सुहो भाग २ सुहो
 भाग ४ कुहो भाग ४ वेल कि गुदि भाग ४ साल कि राल भाग १ रुति दूर्ण गरि पि सि व डि वाधनु मासा १६ व डि १ प्रभात घातु
 मंदाग्नि जा। सर्व शूल जा। पंच गुल्म जा। ह र्श जा नु ॥ ॥ इति खल्य मो द क व डि ॥ ॥ अथ वे ताल नाम दूर्ण ॥ हि ग
 भाग १ वजो भाग १ सो वल भाग ३ सुहो भाग ४ जवानु भाग ५ हर डा भाग ६ कुट भाग ७ रुति दूर्ण गरि ता ता पानि संग घा
 त अजीर्ण जा म पि र या जा ॥ भोक साग। प व का सो जा ॥ ॥ इति वे ताल नाम दूर्ण ॥ ॥ अथ वे गेश्वर दूर्ण ॥ सुहो १ पिपला भाग १
 भाग १ मरि भाग १ सिधो भाग १ हर डा भाग ८ ॥ रुति दूर्ण गरि व सु ग लि त गनु वि राला पाट। प्रभात घातु प्रभात घातु। ता
 ता पानि संग घातु। गा नु था ति आ वा गुड संग घातु पि घाल रह। चेत संग घातु। शूल रह। तिल तेल संग घातु सर्व वा युजा ॥
 तिल गुड बु त्रा कि क्ता ला संग घातु। पे ट द घुं दे र हा म ला या संग घातु। जे लो द र जा ॥ म ह संग घातु अति सार जा ॥ ॥ इति
 वे गेश्वर दूर्ण समाप्त ॥ ॥ अथ किं ग स प्रतिकारः ॥ अजै पाल भाग १ घयर भाग १ मै सि कि न वानि संग ले प गनु। वि ना स
 जा ॥ ॥ का फे ले कि क्ता ला भाग १ घयर भाग १ अजै पाल भाग १ पि सि मै सि कि न वानि संग ले प गनु। वि ना स जा ॥ ॥

भाग १

हिर्विनिर्विषिभ्रजेपाल. मरुतो. शिल्फो. रो. सिधो. रतिसमगरिपिपि सिभैस किनवनि संगलेषगनुविनासजा॥२॥
 भलाया. भ्रजेपाल. कुट. नि. राजवसुकिगुदि. समगरिभैसिकि नौनि संगलेषगनु. विनासजा॥४॥ ॥
 रतिविनासप्रतिकारः॥ मृधजलदरप्रतिकारः॥ ॥पेठभिन्नपानिगडगडोवहान गोडोसु यन्नामुषसुकहिउन
 नसक. रात्रिनिद्रान होअन्ननरुव. पेठवादिआवा. रुसाविह होत जलोदरकहिय॥रसभटमभागा४मनसि
 भागर वितोभागरतिउसाभागरहोलेदोभागरत्रिफलाभागरत्रिकुठभागादमृजेपालभागरदिबुरभागर
 तिनूणसकत्रगरिजयंतिकि पुठ७दिनुमुरिउपुठ७दिने। जवसुकतवना४। घानुपषालहो॥५॥ दहिभाजभा
 तषानु। पषालरहा। विसापाभिनदिनु। नाभिउपरपठपाक्षिसिगोसाइनु। जलोदरजा॥२॥ मृजेपाल. महेति
 दि. जेरो. घयर० जवानु। सिधोफदकिरिउउंति॥ रतिसमगरिपिपि लेषगनु। जलोदरजा॥३॥ ॥इतिजलो
 दरप्रतिकारः॥ ॥मृधजलसुनप्रतिकारः॥ लसुन. ससिउ कोतेल घालिराषनुसाताइतवनिनीपेठ घानुफेसोर
 सर्ववायुजा॥वि सोआगभयातातो हो॥१॥ लसुनमुग्रदुवाषनु। सडिजा॥२॥ लसुनसिउ कोतेलमायनाडाघोल

न१

नु। गडकापरीजाउनु साताइनिनीपेठघानु। फसा१ सर्ववायुजा॥२॥ लसुन. वजो. घानुकर्णरोगजा॥३॥ लसुन. कुभि
 गकारसनाहदिनुमृदाहाजा॥४॥ लसुन. सुवाग. घानुसर्वविसजा॥५॥ लसुन. मह. समगरिषानु। उषी लसुन
 दालसुन. मृवलाषानु। सरिरपुष्टहो॥६॥ लसुन. गारदुतषानु. प्रमेहजा॥७॥ लसुन. कादाकोरसषानु
 सर्वप्रमेजा॥८॥ लसुन. सुवाग. घानु. घयरोगजा॥९॥ लसुन. तातोयानिषानु। वायुजा॥१०॥ लसुन. भेडिः
 दूतषानु। १॥ दूधषानुत्रिमिरिजा॥१२॥ लसुनपात. कुवारिकागुदाषानुसरिरपुष्टहो॥१३॥ लसुन. गा
 इदूधषानु. वाहिमृरिपुत्रहो॥१४॥ लसुन। त्रिफलाषानुसेतकुष्टजा॥१५॥ लसुन. गारदूध. घानुसर्वरोग
 जा॥१६॥ लसुन. हरिताल. लेषगनु. शिरवाथाजा॥१७॥ ॥इति लसुनप्रतिकारः॥ ॥मृधसयरोगप्र
तिकारः॥ वासक. गुर्जो. ससिउ. मृधगंध. तितिपिठालो। रतिसमगरिउमालनुदूधसंगपिनु। सयरो
 गजा॥१८॥ पिपला. दाष. घाउ. मारलसार. जेठिमधु। तिलकोतेल. कार्तिकिमह. विवा। रतिसमगरिपि
 सिषानु। सयरोगजा॥१९॥ नवाता. जेठिमह. तिल. नौनि। रतिसमगरिपिसिदूधसंगषानु। सयरो

जसकाका सदायकारवाटरगतआव. कारवाटरगतकोपोषरोलागमलनआव
 तसकन रुयरोगभन्ने. तत्कोओषध३

आवउवा रो होइर हाव मन वायु होइ सुकोमा सुमा वा सुका का दूध संग वाया कुष नाम वायु होइ विसा पा निद्रा
 या प्रसूति नाम वायु होइ तेल लाइ उधारो होइर हत अथा सिना मवायु होइ कुमिं जोमि उा दूध संग वाया
 धर नाम वायु होइ तेल को प का या को घिव संग वाया क वल नाम वायु होइ अवि लो महि नि नी पे ट वाया
 त स स नाम वायु होइ ॥ १॥ ॐ ॥ इति वायु लक्षणं ॥ ॥ अथ वायु प्रतिकारः ॥ रस विसंगंधक अरु हरिताल
 सा जि सौ बल वैर जोषार सा सु हग सत के य रौ वंदति इश्वर सर्व वायु हरे ॥ ॥ पारो भाग १ विष भाग १
 धक भाग १ हरिताल भाग १ सा जि भाग १ सौ बल भाग १ जोषार भाग १ मा यो ता मो भाग १ सुवाग भाग १
 एति पिसि मल कार स बालिव दुरा प्रमान बडि वाध नि वान दिनु बौरा सिवायु र हा श्वे भ हर उम कुषा मिजा
 ला निवि सुषिका सय के पुवा विपात कुरु ते नित्यं त द्वायो विनि वा सवेत ॥ ४॥ वापा को वो को वि तो जि रो
 धनि उ सौ बल सु ठो साल किराल मरी ब पिपला सिधो जवानु एति समगरि पिसि वस्त्र गलित ग ७३
 उषानु सर्व वायु जाया हर उा विहरा मरि ब पिपला सु ठो सौ बल वि तो वजो सिधो नार्थिता एति समग

रिपिसि वस्त्र गलित गर्नु प्रभात वायु सर्व वायु जाया ॥ ५॥ पिपला जवानु सु ठो सिधो हर उा एति समगरि पिसि
 वस्त्र गलित गर्नु रति १ प्रमान वायु सर्व वायु जाया ॥ ६॥ प्रसूति को गनु याति होगा विष त्रिकुटा पो लो को अ
 सिधो भागे ॥ एति समगरि पिसि वस्त्र गलित गर्नु रसरति १ प्रमान वायु सर्व वायु जाया ॥ ७॥ त्रिकुटा ज
 वानु सिधो वि तो हि ग कालो जि रो एति समगरि पिसि वस्त्र गलित गर्नु रसरति १ प्रमान वायु ता ता
 पानि संग सर्व वायु जाया ॥ ८॥ हि ग रुक पिपला शक का ज उा लोध हर उा एति समगरि पिसि वस्त्र गलित
 गर्नु रति २ प्रमान वायु सर्व वायु जाया ॥ ९॥ भु द्या तिल भागे समगरि पिसि वृ त संग भु टनु कार्तिकि म ह
 संग मिसि भु टनु श्रव ला प्रमान वायु सर्व वायु जाया शरी र पुष्ट हो ॥ १०॥ वासक मरी ब दाडिम को वो को
 सिधो पिपल को वो को सौ बल वैलं जवानु वि तो पिपला फटिकि रि मो हो गिरि सिवाल को र स एति स
 मगरि पिसि वस्त्र गलित गर्नु रति २ प्रमान वायु बौरा सिवायु र हा ॥ ११॥ पाल्मे साध सुवाग विष त्रिकु
 टा एति समगरि वस्त्र गलित गर्नु अ दु वा कार स संग रति १ प्रमान वायु सं य जा सर्व वायु जाया ॥ १२॥ ॥

20

७४

इति वायु प्रतिकारः॥ अथ कुंठं ग रोग प्रतिकारः॥ हिगं जिरो सिधो सकत्र गरिपिसिवस्त्रगलितगर्भुति
 लतैलपकावनु। कुंठं ग रोग जा॥१॥ गु वा० त्रिफला मरिडु० सौ फ व जो पिसिका जि सं ग ले प ग नु। कुंठं ग रोग
 ग जा॥२॥ से तो मरिडु० जे ठि म ह तिलका तेल संग पि सिले प ग नु। कुंठं ग रोग जा॥३॥ म रु वा को प ल तिल तेल प
 का व नु। बा यु वि उं ग त्रि कु टा सि धो दे वार का का ठ तिला र ति स म गरि तिल तेल प का व नु। ले प ग नु। कुं
 ग रोग जा॥४॥ आ क का पा त दा ष का पा त सि धो र ति पि सिले प ग नु। कुंठं ग रोग जा॥५॥ सि धो पा नि स म
 गरि पि सि स द न ग नु। कुंठं ग रोग जा॥६॥ ॐ ॥ इति कुंठं ग रोग प्रतिकारः॥ अथ पेट किरा प्रतिकारः॥
 ॥ हर डो० गो व भि त्र वा लि प का व नु। सु ग ह फ ल प का व नु। गु उ स ग य कां व नु। ता तो पा नि पि नु। पेट का
 किरा ष स न॥१॥ ॐ ॥ इति पेट किरा प्रतिकारः॥ अथ मृ जी र्ण स निया प्रतिकारः॥ विव सिधो ता
 ता पा नि सं ग षा नु। मृ जी र्ण जी र्ण हो॥१॥ हर डो० सु डो० गु डो० र ति पि सि ष नु। मृ जी र्ण जी र्ण हो॥२॥ मृ दु वा
 सि धो भा त षा नु। मृ जी र्ण जी र्ण हो॥३॥ सि धो हर डो० वि तो पि प ला र ति स म गरि पि सि व स्त्र ग लि त

७४

15

10

5

गर्भु। ता ता पा नि सं ग षा नु। मृ जी र्ण जी र्ण हो॥४॥ ल वा ग भा ग प पि प ला भा ग १ जा इ फ ल भा ग ५ म रि व भा ग ३ पो लो
 सं ष भा ग ६ षा ड भा ग ८ र ति स म गरि पि सि व स्त्र ग लि त ग नु। वि रा ला पा द प्र मा न षा नु। सं दा मि जा॥ मृ जी र्ण जा॥
 म वै सा ना म दू र्ण॥५॥ ॐ ॥ इति मृ जी र्ण प्रतिकारः॥ अथ लु ता प्रतिकारः॥ का रो ह ले दो भौ सि कि न व नि सं ग पि सि
 हा डि भि त्र वा लि मु ष मु दि प र्शी गा उ नु दि न ७ ले प ग नु लु तो जा॥१॥ सि र सु को ज डो० जे ठि म ह मा षो ह ले दो कु
 ट र क्त खं द न दा र ह ले दो र ति स म गरि पि सिले प ग नु लु तो जा॥२॥ भि डा को वो ट स नू ल उ वे ल नु। जालि भ स
 ग नु। तेल सं ग ला ड नु। लु तो जा॥३॥ ॥ इति लु ता प्रतिकारः॥ अथ दो ष प्रतिकारः॥ स्त्र रि र क्त ज टा र क्त मु
 कु ट धा रि शि दे वि का र वा जो मु मा र त क्त मा र जो मे रो षे द ग र क प ट भे द ग र त स्त प ल टि ता कि य ला व द
 वि का म रु का मा र वा कि रा कि गो रा म हेश्व र कि रा कि इ नु सं त्र ले पा नि सं त्रि पि या व नु ला या को वा ष क प ट
 जा॥१॥ गो लो न क भं गिरा ज ० पु ष्य न क्ष त्र पि सि टि को ला ड नु। त्रे हो कृ व स हो॥२॥ गो लो व न म न सिला
 कुं कु म सु गं ध क ष त्र र ति स म गरि पि सि टि को ला ड नु। मृ स्त्रि र्ष व रा जा प्र जा से ह न हो॥३॥ क षु वा का षु
 हा क पा ल सु का व नु गु टि का ग नु पा नि मि सि हा थ लो र नु। मृ स्त्रि दे षा व नु मु ठि व टा र नु मृ स्त लु कि जी नू॥

20

15

64

64

॥४॥ का लो धतु रेल जालु पत्र जीव सयु र कि सखा गुटि का कृ यति मुखे ध त्या शर
 स्त्रि स्थं भं भवति ॥ ५ ॥ सेता स र्शु मरी रं कुट सुसाभि डि गा रति वी का मुत पि सि गा र का भा वा
 अंजन गर्नु दुं छर गा र साधु हो ॥ ६ ॥ पाट लो को ज डो पुष्प नख उ पा डि ग ला दालि यत लो हो न ला गा गा कुरा
 ठा का पो लो धु लो वा को शो ध व हो ॥ ७ ॥ का के जं वा को ज डो र क वर्ण गा र को दू ध ले पि सि पि नु वा कि अस्त्रि
 पुत्र हो ॥ ८ ॥ गु डो हि गं घा नु दोष जा ॥ ९ ॥ ॥ इति दोष प्रतिकारः ॥ ॥ अथ स्थं भन प्रतिकारः ॥ गा र का
 गो बु उ प प टि ये धतु रा को फ ल अश्व गं धा को ज डो पि सि व स्त्रा ग लित गर्नु भै सि कि नौ नि स ग ले प गर्नु दि न ३
 हो उ का ज सो लिंग हो ॥ १० ॥ भ ला या वि हि का फ ल दा डि न को वो को रति स र्शु का ते ल प का व नु लिंग ले प ग
 नु व डो हो ॥ ११ ॥ ल जालु को ज डो वा क्रि को दू ध सि डु का दू ध पि सि पे तो ला ले प गर्नु वि र्य स्थं भन हो ॥ १२ ॥ दु विः
 ष को हा को ज डो वा क्रि का दू ध पि सि लिंग ले प गर्नु वि र्य स्थं भन हो ते ज अ धि क हो ॥ १३ ॥ घो रा को राल से ता
 स र्शु ड म जि ठ जा र फ ल द र लो का पा त पि सि स र ति कि वे ला लिंग ले प गर्नु लिंग प्र व ल हो कं द यो ज सो

३१

10

5

लो १

लिंग २

अस्त्रि का पा रो हो सु ष हो ॥ ५ ॥ पा रो गो रें व न क पू र श्री रं उ ० धतु रा को दू र्ण रति समा रि पि सि स र ति कि
 वे ला लिंग ले प गर्नु दे व क न्या को मो हि य ॥ ६ ॥ वी ज रि ष को लिंग क पू र रति म ह स गं ले प गर्नु न
 इ अ स्त्रि को पि या रो हो ॥ ७ ॥ क पू र पा रो वा ड को लिंग धतु रो म ह रति स म ग रि रा त्रि लि
 ग ले प गर्नु वि र्य स्थं अ स्त्रि व र प हो ॥ ८ ॥ कु सु म को ते ल ग धि उ मा को दू र्ण स र ति कि वे ला
 पो तो ला ले प गर्नु अ त्तं त का म वा ठा ॥ ९ ॥ ॥ इति लिंग स्थं भन प्रतिकारः ॥ ॥ अथ कान पा तो प्रतिकारः ॥ सिल फा रो बु क नि ग रि का न धु लो
 रति लिंग स्थं भन प्रतिकारः ॥ ॥ इति कान पा तो प्रतिकारः ॥ ॥ अथ वा यु गु ल प्रतिकारः ॥ सो फ पिः
 घाल नु कान पा तो र ह ॥ १० ॥ ॥ इति वा यु गु ल प्रतिकारः ॥ ॥ अथ अंजन प्रतिकारः ॥ रु द्रा का ज ग
 सि घा नु वा यु गु ल म जो ॥ ११ ॥ ॥ इति वा यु गु ल प्रतिकारः ॥ ॥ अथ अंजन प्रतिकारः ॥ रु द्रा का ज ग
 आ नि नि का ग रि धु ना आ गु ल ग रि का ट ना नि को ग रि रि ध नु का ठ का ठि म्मा फ ल उ र सरा ष नु
 सो हि र स क पर हा न गर्नु व रु ग रि ज व लु गा के हि न दे वि य त व ड माल नु पा हि ले हु लो आ गो वाल
 नु प डि म धु रो अ गो गर्नु प डि म्म गार ले प का व नु अ धा उ ट दू ध ज ति हो त वा व र उ का हा उ को गु दि

तर

20

15

66

किंकिरि मरीच रतिसंमंगरिपि सितस्त्रगलितगर्तवद्यलनु पातोभयाकाठनुलुगाकोकुपु
 रोगरिराषनु मसिनु सारोठं गोनिकोगरिधुनु ठंगासाथि वोटि रात्रि सररहदा पोषलेआ
 षाधालनु। आषापा ताजानु॥ ॥ इति मंजन प्रतिकारः ॥ ॥ अथ हिगाष्टक संघट्टण हिगाष्ट
कः ॥ हिगजवानु त्रिकुटा सिधो भोटिया नून पोल्पो संघ ॥ रतिसमंगरिपि सितस्त्रगलितग
 नु। षानु अन्नर सजा ॥ शूलजा। सर्ववायुजा। प्रभात सासा ६ संध्या सासा ४ षानु सन्निजा ॥
॥ इति हिगाष्टक संघट्टण हिगाष्टकः ॥ ॥ अथ वनर ह्यो प्रतिकारः ॥ जसो गिकोव
 वनर ह्यो उस्को उपायक रूवो तेल माफि जिभा आगुलाले थो पागालनु पिपेलापि सितस्त्रगलि
 तगनु। जिभा का तेल माथि दालनु वनन आवा ॥ ॥ इति वनर ह्यो प्रतिकारः ॥ ॥ अथ
वोलाया का कुकुर कोषाया को मंत्रः ॥ शोषे कु कु मु ष धो रे ज्यासिः कथिया विशयाः युनम्रा सां इपि
 लवावारि भितर क रोग मारि निकालि सिद्ध गुरु ॥ १ ॥ ॥ इति मंत्र ले जहा वोलाया कुकुर कोषाया वा

10

5

भागे भाग
 भग्नरा का विभागा
 पुरा भागे मंगरिपि सितस्त्रगलितग

वहे जा हाउ सुबाय काउ पल्काडिव देषि उधो हातं जानु। आगे न छुट्टा मनला है प्रभाती पनिदिउ सपनि रा
 तिपनि जानु। सामिनि वोलमंत्रिकाल विकाल हाथेल उ विश डिदि मारि ३ जे आवै मरुत तिनु मंदाभा
 न्नापनि रे विशनाहि पाइ जे से व विरुपानि त्रि सा जे नथ वि सह रि वि समा रि वि स का रौ गो रौ छुट को तरह
 थिले विश मारौ सिद्धि बुद्धि ॥ १ ॥ ॥ इति मंत्र ले पानि मंत्रि पियावनु। वामनला गदै पानि त हिले मरी मुना उनु
 भुइ नराषनु अलग राशि पानि मंत्रि पियावनु। उ घाल हो वोला या का कुकुर कोषाया को निरि पत मुघि उउः
 जानु। नमि टियत व जानु दिन ७ जानु। उ ति दिन पानि मंत्रि पियावनु। उ घाल हो कि न्याव दिन ३ मुत सं
 ग हाउ रा आवनु ॥ ॥ इति वोलाया का कुकुर कोषाया को मंत्र प्रतिकारः ॥ ॥ अथ थानिला मंत्रः ॥ सरव जागे
 सौरि नावे रा म फुल थानिला नावे विरहनु मानती रि नारि ति निउ मंत्रे हनु मारि गां गवा रि एक सौरि गाइ
 त क दूध साजो जाइत के दूध करौ फुटे मो जा रौ मुमुकि बुवि सि गुरु पाउ ॥ १ ॥ ॥ ने सप हो तयो मंत्र पात लेषनुः
 लेषा का पात माथि किलो गाउनु उ सकिला जस थानिलो हो त श्रेय लघ ३ दुनु तव निको हो ॥ जव पाउ
 ॥ ३ ॥ हंर कारी बुजवा धौ दशा दारवा धौ ठिंगा कुना मारौ वोषा मसान वावो ६ डि पावो डि म्रवर वाधे जा बीर नर सि ह किवावा

इति मंत्र ले जहा वोलाया कुकुर कोषाया वा
 मंत्र ले जहा वोलाया कुकुर कोषाया वा

यामेप्र आरुत

20

७

होत आधनु दूध मंत्रनु दाहिनु दूध तगाउ मंत्रनु वाउ धत दाहिनु मंत्रनु निको हो॥ स्वात्मिको नाउ सुधावनुक
 वन दूध दु सोह जा पोहा हिया ते व स्वात्मिको नाव दिनु उइ को दूध निको हो॥ उ स भ नि मंत्रनु॥ ॥ इति धनि
 लामंत्रसमाप्ता॥ ॥ अथ अथ हाडि मुदनु मंत्र॥ बुदा काडि उमले जाठि साग भात बाइ वगु वारे पइ सिरे छुट
 वरि वरि लंका छे डि पलंका पडिये कौ डि ठ सोहे लाइ॥ तउ सिद्ध गुरु हनु मंत्र कि रखा लंका सारिका कोट स
 मुद्र सारिका वास गरि अंकि निपा॥ ललगाउ कामरुका मरवा कि आग्या॥ ॥ ॥ अदि त्यवार प्रभात धा
 मन लगे लेपनु पूर्व मुख होइ वै सनु लिपा माथि उनु दुहु मंत्र लेपल ३ मंत्रनु आपना छाति ही तलेः
 हात्रु तव हाडि मुउदा रुदा क सै को ग यो कूल क पट न लाग्याप निरखा हो॥ ॥ ॥ इति हाडि मुदनु मंत्र॥
 ॥ ॥ अथ को कानिको कपाल मुउनु मंत्र॥ ॥ उ नर सिंह कि शक्ति वे नि वे नि महा वे नि वे नि जय का ल मे
 पत्रि पटि मारौ डाइ नि जोगि नि के लागौ अंध काल मुउ मुडौ हाडि मु मुडौ आइत वार काः वार मुडौ डाइ निः जो
 गि नि के लागौ अंध कारः डाइ नि जोगि नि लरे वरे मोहि नि हि सिद्धि गुरु॥ ॥ ॥ इनु दुहु मंत्र ले वेर ३ मंत्रनु

15

10

5

नउ हाडि मुष अघिरा वनु जो वो क सिद्ध तउ सै का घर देषि के हिलया वनु कि जानि हि दे गरि कि न जानि हि दे गरि
 या सु कै हवस् मंत्रनु दाहाउ ने रे आनि रावनु कि वोक्ति को नावलिनु तव कु राले हाडिका वाहिर मुउनु वोक्ति
 को कपल मुडिया॥ वोक्ति को कपाल मुडिया वोक्ति का घर देषि आ न्या को वस्तु उ सै का घर दिवा वनु कि
 उ सै का घर राषिया वनु॥ आपु ले राष नि न जव हाडि नया या हु आपनु बुडो मंत्रनु तव डाइ नि को कपालः
 मुडिया॥ ॥ ॥ इति डाइ नि को कपाल मुउनु मंत्रनु मंत्र प्रतिका ॥ ॥ अथ वाघ को मंत्र॥ ॥ ॥ इति वा
 पत य नमः॥ नर वष रु रः सुख्य भतु वारः गोरिक पुत तो हे वा व रु सार इ व न छो डि आ न व न जाः हरि न ल
 वर सारि षालं का वा हे डि ठि मोहि वा हे पि डि रु व न वा हे डि रु व व हि व न न ल र व र त छा ति फा टि म र ह
 द य फा टि म र इ श्व र म हा दे व का ज रा क षो ल कर गे रा पा र्व ति का य न ह रे फा र ह मो हि सि धि गुरु ह नः
 वं त कि आ नौ॥ ॥ इनु मंत्र ले स सि उ मंत्रनु वेर ३ वर्ष दिन उधा का क ट गर्नु॥ वर्ष दिन उधा त कर ग नि न ज स
 व न वा व न लागौ स भ नु ज स व न वा व जा भ नु इनु दुहु वण को नाउ सि उ जा हा दे षि वा व न लागौ स भ नु

ग्यार

थर

जाहा जाहा वा बहिउवाहानानिस पठावनु मंत्राकाशसिद्ध के क दुइ दुइ बालदे जानुत ववा ब लागदो
 रह॥ॐ॥ इति वा ब लागदो राषनु मंत्र॥ ॐ॥ अथ तेल किता इथा मनु मंत्र॥ ॥ गोग जो न क मंत्र रसितेः
 किं तेल भाइ राम लक्ष्मन कोठि ठोवइ तेल था भौ तेल वाहिथा भौ अग्नि पुत वैश्या द भौ दि देव मापिले
 उलाभ के एकाइ देउ हनु मंत्र के लिलाया गिव सइ पास्नि मस्तक भद्र जाः॥१॥ नवा भाडा गरिते ल नाप
 उत वशु की भाडा बालनुत व वटुक पका वना पाखिलान वा भाडा तेल नापि राषनु सोते ल नव वनु मं
 त्र भद्र रहनु वटुक पका व दे रहनु पकाइ सका वेर नवा भाडा का तेल पुनः बालनु वटुक पका याः
 को तेल नवा भाडा बालि ना पनु उति हो नपिय न क माय न क माया को नउ भाडा के हिको हो सु॥ ॥
 ॥ इति तेल किता इथा मनु मंत्र॥ ॥ अथ वा धारो ग दा तसुनिया को पा का घटि रा को मंत्र॥ ॥ नवा
 निदिका ति वाधि प वा गुरु गंड सुवा प का कुंभ रस सक्त लाहि मैन हिक ट ला सिद्ध र महा देव कः
 सिगो रा पा वति जं विल संधि विरहनु मान किशक्ति मानि मस्त भद्र जाः॥१॥ कु रा को मा र को पा तसः ७८

फालनु वरि प रि का पा त राषनु वेर उधा हात जारनु छाना का तला डि व व लि वा नि प र्श उ धो दु पो ड
 भो फे द गरि कु श राषनु अ नि उ सै कु श ले जारनु दिन ३ वा धारो ग दा तसुनिया को पा का घटि रो ता नु
 सवै नि को हो॥ ॐ॥ इति वा धारो ग दा तसुनिया को पा का घटि रा को मंत्र॥ ॥ अथ पोलिया को मंत्र॥
 अग्नी जर रूष र जर रू का वा भा गुरु उ प दे सै अग्नि पं भौ पा नि म स्ति भद्र जाः॥१॥ वेर ७ मंत्र नु
 पोलिया को नि को हो॥ ॐ॥ इति पोलिया को मंत्र॥ ॥ अथ वा य लोह जलो र्दा को मंत्र॥ ॥ हंस
 सै फिटि कं ति सुवः पै सै ति लोहः निर्विशुद्ध वा हिरे पुत वरि या सात लोहा पा नि न वि शाल ना हि
 पा के ना हि फुटे ना हि पि रा कर रू ज ति गो र व कि वा वा फुर ३॥१॥ इन मंत्र ले फुक नु धा व न पा का
 लोहा जने लाग वा छो ठे नि को हो॥ ॐ॥ इति वा य लोह जलो र्दा को मंत्र॥ ॥ अथ जरा को अ
 धा हा को सह जै दु धा को क पाल दु धा को मंत्र॥ अ दे स दे उ ना थ उ ता रा शं डि लि अ वि र भै र उ
 द पा सुं दु व सै के अ न त को टि दे व ता म स्त क व स र र क्षा करै हनु मंत्र ज ति वि र ह मा रि भ ग तिः

20

15

62

गुरुकिराजे जरोआया को कपालदुष्का को अधाहा को दुष्प्रासुक भै दुष्प्राफु लेवा वा हातलेः
 दुवाइ पुर्ण रासमाइ दुष्का को कपालसु क सिमंत्रनु आपनु राहिनु हात्फु केनु यतिगरि वेर ३ मंत्रे
 केपालदुष्का को हो ॥ ॥ ३ ॥ तेजरो को अधाहा को सहजै दुष्का को कपालदुष्का को मंत्र ॥ ॥ अधाहा
 के टकेटि का रोग प्रतिकार ॥ ॥ जब सा ना के टकेटि को पेढ नाहि ठा मुनि वहला गत्रिषाला गआगडाहा
 उहा ॥ नगुर्थो आव को कोइलो वे लकि गुदि सुहो धाश का फुला ॥ यतिपिसि वस्त्र गलित गर्नु महसं
 गपिनु उहि गुरिला गप्रभात १ षानु वालवरक्त जा ॥ १ ॥ जब के टकेटि को पेढ सुनियु रिक का काला
 न साहुन ॥ अन्न क पश का लो जरो जबानु कुठ अवक को जडो टिबुरा के बा ला ॥ यतिपिसि वस्त्र गलि
 त गर्नु ॥ गौत संग पेढ लेप गर्नु सुनिया को पेढ निको हो ॥ २ ॥ ज व वालक को पेढ सुनिया ॥ जौ धार सि
 धो जिरो जवानु विउरा के जडो यतिवा का का सुत संग पिसि पेढ लेप गर्नु दिया को शो क गर्नु ॥ वि
 वसि धो दालि जाउ लो गर्नु ॥ जात क कि माय लेषा नु जात को पेढ सुनिया को जा ॥ ३ ॥ सब ल जवानु

७२

10

5

हिग कुट ता ता पानि संग घानु जात के पेढ सुनिया को जा ॥ ४ ॥ अ वला को दूर्ण घाउ सम गरिषानु जात को पेढ
 छडियो निको हो ॥ ५ ॥ मेहल मुति सहिनु जात को पेढ घोलि हि दोर गत दोर ह ॥ ६ ॥ क दुकि ता ता पानि संग
 पी या वनु जात सुष प बाल हो ॥ ७ ॥ म र पि प ला पिसि वस्त्र गलित गर्नु तिल संग म र न गर्नु लु न का पो काले से
 षनु जात को शूल जा ॥ ८ ॥ पि प ला धै हो तु स्या लु न सम गरि गौ त संग पिसि वातिले जात का गुद मित्र जा क
 नु गुद को शूल जा ॥ ९ ॥ स ज व क्ष यितो पि प ला मुति सका क र्हि गो सिवालि व जो कुट सिधो हिग सुहो
 वा पु वि डं ग हर जो अ वला मरी व बा दु ल्या त्या ॥ यति सम गरि पिसि वस्त्र गलित गर्नु मह संग घानु जात को
 उषाल जा ॥ १० ॥ मन सि ल मा सि जे ठि म ह का क र्हि गो ॥ यति सम गरि पिसि मह संग दिनु जात को जरो जा ॥
 ११ ॥ मा सि वि तो ला या का सा तु पि प ला का क र्हि गो ॥ यति सम गरि पिसि मह संग घानु जात को उषाल जा ॥ १२ ॥
 वा सक सिधो आव को कोइलो ॥ यति सम गरि मह संग घानु जात को उषाल जा ॥ १३ ॥ मा सि वि तो ला या का सा तु
 का क र्हि गो ॥ यति पिसि मह संग घानु जात को जरो जा ॥ १४ ॥ पि प ला मुति समा सि का क र्हि गो ॥ यति सम गरि

दूर्णगर्भमहसंगवानु जातको उषाल जा ॥१७॥ अलैविहिग भंगिराज सुठो रुतिदूर्णगरिद्विठसंगवा
 नु वल्लभकोश्ललजा उषाल जा ॥१८॥ मासका होसुठोसिधो दूर्णोसुधो पियला जेठिमहा वायुविंठा ॥
 तिदूर्णगरिमहसंगवानदिनु जातको उषाल रह ॥१९॥ वितो मनसिलनामिसंघपियला ॥ रुतिसमगरि
 पुकावनु जातकोसभरोग जा ॥२०॥ दाडिमका विद्याअवलासु होसमगरि वाक्रिका दूधसंगवानु जातको
 उषाल जा ॥२१॥ विवहिगसुठो अलैविसिधो भंगिराज रुतिसमगरि दूर्णगर्भतववानु जातको उषाल
 जा ॥२२॥ वादुल्या त्यावजो सिधो हरडो सुठो मरिवा रुतिदूर्णगरि गाडका विवपकावनु होविवाजा
 त्कचूपरावनु जातको अष्टांगवायुजा ॥२३॥ सुवागफुलाईको डोपोलि सुठिहिगा रुतिसमगरि दूर्ण
 गगरिगाडकामहिसंगवानु वापिनु जातको कपिर जा ॥२४॥ हिग जवानु सुवाग हरडो गुहा रुतिस
 मगरिपिसिभल्को उमालनु जातको पियावनु जातको पिकि जा ॥२५॥ जौवालर भागमरि रभाग ८०
 रपियला भाग ३ दाडिमका विजभाग ३ रुतिदूर्णगरि गुडसंगपियावनु धत्तो जातको लानिकोहोकि

अ ५

जीअन्नरव ॥२॥ बुरिकिराकल्लरिसा हाराकि लादिकपुराको दूधनिल रुतिअस्त्रिका दूधरुतावनु
 निको गरिपिसि वालषक नयटावनु तालुहल्लेलापैतो लाका पिछातिलावनु वालषधत्तो जा ॥२८॥ स
 हसमेदसिल्लारोवजो दुवाकोरसुवाल्लिद्योवनु दाहिसंगवानदिनु जातको अतिसार जा ॥२९॥ ॥३॥
 तिजातुरोगप्रतिकार ॥ ॥ अथरितुलक्षण ॥ हिम शिशिर वसंत ग्रीष्म वर्षा सरत्सु विविध शरिर
 रा जामें मुक्तास्थिता स्ते ॥१॥ ह्यरितुकारा जामें त्रिसरिर कामिन्नमिन्नध्वसंतै कफरा जामें त्रिणां वा
 युमेव ॥ अथरसकुशमनामस्य सरत्तं वदुष्यति ॥२॥ ग्रीष्मवर्षा राजस्य शोषवायुश्च मंत्रिणां अथरसकुश
 वायुधातुश्च दुष्यति ॥३॥ वर्षा अनिल राजस्य मंत्रिणो पित्तसंन्वितं अथरसकुशमनामस्य मलवातस्य दुष्यति
 ॥४॥ शरदे पित्तं राजस्य मंत्रिणां कफमेव ॥ अथरसमं द्विदोषस्य पित्तधातुश्च दुष्यते ॥५॥ हे मंतं संत्रिणां
 जस्य मंत्रिणो कफदृश्यते ॥ अथरसशस्त्रिणामस्य कफपित्तं वदुष्यते ॥६॥ शिशिरं श्लेष्मराजस्य मंत्रिणं वै
 दिदृश्यते ॥ अथरोगरुनामस्य श्लेष्मधातुश्च दुष्यति ॥७॥ उषे हरति वायुनां सितलं पित्तनाशन ॥ अथ श्लेष्मरसः

20

15

८९

वि४

नासायकफ पान्तिक दुःखं ॥ १० ॥ जो लेति पित्त पोखंति वात पोखंति मर्दनः ॥ स्त्रिदोषं लंघनं पोखं कफ पोखंति उः
 घता ॥ ११ ॥ गुडे वपित नाशाय वात नाशाय मर्दनः ॥ व व नेक फ नाशाय ज्वर नाशाय लंघनः ॥ १२ ॥ उष्टं वपित ना
 शां पोखं व वातं व मधु सर्क ॥ मदे दालि विषं वै व कफि नां सिं व ते विषः ॥ १३ ॥ दालि नां व जे ये लं च कुरो गे व मे
 पुनं ॥ अपत्मार अशवं कुष्टि मा सं ज्वरी छत्तं ॥ १४ ॥ व सं ते त फ ला भ सं श्री मे तु नि व मे व वा ॥ व र्को व नि ड्योति
 व सर दे अं व वे स वि ॥ हे मं ते का श व र्जं व शि शि रे क्ति र व र्ज ये त ॥ य ड् म तु स्य पि दा घ स्य स तं स तं व द म्प हं ॥ १५ ॥
 शर दे ड् वि षं वे लं व र्को व रं व शिं ते ले ॥ शि शि रे व य वं वि षं व शं ते गु ड मे व वा ॥ १६ ॥ श्री के हि म वि षं तु लं व र्को व ति
 ले तै ल के ॥ मा व मा स नि रा हा रं व हा हा रं व का र्ति के ॥ १७ ॥ वै त्र मा स गु षा हा रं म तु रे च न श स या ॥ ए को वार म
 वे त्प स्य ड् द्वि ती यं म ल म र्दनं ॥ १८ ॥ त ति ये रोग संप्र ण च तु र्थे म र णं कृ व ॥ १९ ॥ इ ति व ड् तु ल स हा ॥ २० ॥
 अथ नि हा र स हा ॥ त नु र का ष ता ग्नि ध सु धा स रं सा प या ॥ अ व क्ता ल लि ता जि हा सा सु जि हा नी रा म या ॥ २१ ॥
 लि ष्ठे न व के ण वि श र्व णि ख न च न के ठ ना नि ष स जि हा ठे व णि रि नु वे त नी यं सा स त्रि या तः प्र कृ ति अ जि हा ॥ २२ ॥

10

5

सजि कृष्ण कृष्ण सुधा मू ल वि स र्प णि ॥ व ला कृ ष सि ता क्षा मि शे षं ति वा ल ल क्ष ण म् ॥ २३ ॥ नी लं
 पित्तं ह रि त व कृ दु कं ल व णं वा म ल पि यं ॥ दा ह पा व क ति सि प्रा र स ना न पि त्त ल क्ष णं ॥ २४ ॥ पां डु व
 र्ण र हा स्ति थो प्र के श वा ह नं व र णं ॥ पर श्मै षा स नः श्रे ष्ठा ज टा नू ट र सा पि य ॥ २५ ॥ इ ति जि ह्वा ल
 क्ष णं ॥ अथ मु त्र य रि ष ॥ श्वे ते र ज नि जा मः व टि का व व तृ ष्ट यं ॥ उ पा यं रो गी नां वै षं मु त्र श र्ते व का र य त् ॥
 १ ॥ आ दि धा रा परि त्प ज म धा धा रा स मु द्र व ॥ श्वे त का स म ये पा त्रे धृ मू त्र परि ष्ये त् ॥ २ ॥ त्रि ण ये धा रि तं
 तै लं विं दु रे को नि पा त य त् ॥ पा या ते बु द्ध दा त व वि का रं स व प त यो ॥ ३ ॥ त्रि धं व स्या म ले ल सं मु त्र श्रे
 ष्ठा व जा य ते ॥ स म प्र ल्हा दि वा रि नां तै लं विं दु प्र जा य ते ॥ ४ ॥ ति ह्वा र्थ तै ल सा द र पं मु त्र वै पि त्त ना रः
 तै ॥ तै लं वि नु था सि षा व तृ द श वि स र्प ता ॥ ५ ॥ श्रे ष्ठा वा त भ वे त्मु त्रे सु व र्णं व स मा ष मं ॥ पां डु र श्रे ष्ठा पि त्त वः
 मू त्रं वै व परि ष्ये त् ॥ ६ ॥ स जि पा त स्य मु त्रे व कृ ष्णं तै ल स ये दु षे ॥ तै ल वि नु स्त था सि षा पु द पु द र्थ भ व त्प पि ॥
 श्वे त धा राः म हा धा राः पि त्त धा रा ज उ स्त था ॥ र क्ता धा रा दी र्ते रो गी क क्षा म् तु न शं स म ॥ ७ ॥ सु व र्णं व स मा

स्पर्धमातलिंगसमग्रं॥**पिनिश्चसहस्रं** मूत्रं विपाकं रहितं भवेत्॥२॥ कफात्ते ललाषनि यंतु ल्यमूत्र प्रजायते॥
 रक्तवाते न रक्तस्य कौस्तुभापितभा भवेत्॥१०॥ वात उज्वलमं रक्तः श्रावैव हतिमेव च॥ तैल तु ल्यं भवेत् मूत्रः
 नित्यं सहस्रपित्तयो॥११॥ श्रावैव हलमरक्तमूत्रं लोकमया भवेत्॥ जेयंतदाति सारं रलिंग तु ल्यं गवेद
 न॥१२॥ वातरस्या वरमुत्र प्रजायते॥ तरिमुपरिवंधेयं तैल विंदु पुतास्तथा॥१३॥ स्वस्थ प्रजायते मूत्रं ज
 लोदरसमुद्रवो॥ मूत्रघ्न कणोपमवात ज्वरसमुद्रव॥१४॥ मूत्रकुंभमपि उरः स लैन पित्तवर्णं विवह
 तला प्रजायते॥ उर्ध्वनीलं मधोरक्तं रुधिरं ए प्रजायते॥ रक्तश्लेष्मा वसा कृष्णा असाध्यमुत्र उच्यते॥१५॥
 पित्तवर्णं यदापश्ये तैलं तु ल्यं स मुद्रवेत्॥ तथा साध्यामादृष्टा मुत्रवैद्यकरः॥१६॥ अजिर्ण न भवेः
 मुत्रश्चेतं वपितदा रुणं॥ अजामुत्रसमानं रुग्णजीर्णं ज्वरसंभवं॥१७॥ ॐ॥ इति मूत्रलक्षणं॥
 अथ षोडशसन्निपातलक्षणं॥ देवदेव महादेव ब्रह्म पुत्रस्य जातिकं॥ सर्वदेवनमस्कृतं त्रैलोक्य
 दिहेतुमान्॥१८॥ अणि प्रति सदा प्रोक्तं षोडशं सन्नि उच्यते॥ आदौ मेक प्रवक्ष्यामि श्रुत्वा तस्यापि जे

गणाः॥२॥ अरुजि हामुषं नेत्रं शलीलो मूर्च्छा कौरोति॥ इति सलक्षणं यस्य सिघनामं व सन्निपः॥३॥ वाघुः राव
 टंकरपिपलाटंकरनिबुटंकरदेवदारुटंकरगुर्जीटंकर॥ इति उमालिता तो गरिपिनुसिघनाम सन्निजा॥४॥ स्व
 रदघः तला शोषं मसुरिभाषा भवेन्नरः॥ एवं वक्र विद्यारेण॥ ज्वालिनामस्य सन्निपः॥५॥ ॐ॥ इति ज्वालिनाम
 सन्निपति कारः॥ अथ सूर्योदयो प्रतिकारः॥ ॥ वरडा वितो गुदिवः हृपक महोलि सुठो पुष्करमूला॥ इति सम
 गरिपिसिता तो गरिपिनु सूर्योदयो नाम सन्निजा॥६॥ इति मग्नं व वरुनं ज्वरगुल्मं तथैव च॥ एते तत्र विजानि
 या ज्वरगुल्मस्य सन्निपः॥ सन्निभुक्ति प्रमानेन दिन षोडशमेव च॥ ॥ इति ज्वरगुल्मस्य सन्निपति कारः॥
 अथ ज्वरनाम सन्निपति कारः॥ लेऊरिं मकुलिकादि मकुलिम जेठो वाचो वितो पीपला मकुला ठि भंगिरा लवा
 गा॥ इति समगरिता तो गरिपिनु ज्वरगुल्म नाम सन्निजा॥ ॥ इति ज्वरनाम सन्निपति कारः॥ ॥ अथ पित्तनाम स
 न्निपति कारः॥ सिसंकेटं मुषेफेन यात्रं भंगो भवेन्नरः॥ दिन दश प्रमानेन सन्निपः स उच्यते॥७॥ अथ हासुहो पति
 दपिपला वाभो॥ इति समगरिता तो गरिपिसिपिनु कं पनाम सन्निजा॥८॥ हस्यते रोदिते चैव शरिरस्य रो

20

15

भावत
था

एकं भवेत् ॥ पितृस्य सन्निनामेन प्रसाद्युद्देशे दिने ॥ १॥ सुहो भागश्वर उभागा १ वंदन भाग १ रत्न वंदन भा
 गा १ लोभागा १ पाप उभागा १ यतिपि सितो गरीपि नुपिते नाम संनिजा ॥ ८ ॥ प्रदे संसी तलं रै वनरो वाक्य
 नमु यते ॥ मेवमौ वते सन्नि प्रसाद्युः वाष्टमे दिने ॥ २ ॥ ॥ इति पितृनाम सन्नि प्रतिकारः ॥ अथ मेव नाम स
 न्नि प्रतिकारः ॥ पिपली मूलवायो वितो सुहो गवाटि बुधः पती सः ॥ इति स मगरिपि सितो गरीपि नु
 मेव नाम सन्निजा ॥ २ ॥ सुद्ध भा रां का क वा संमहो ग्रा वा त सं यु तं ना वा क्य मु य ते रोगी आ यु मु न्य प्र वर्त ते ॥ १० ॥ धर्म
 बुद्धि प्रदा त वं न रो या नि य मा ल यः ॥ सुष्ट म सन्नि पा तं व स सा ध्यं वै व पा र्श्व तिः ॥ ११ ॥ ॥ इति स हं दु नाम सन्नि प्रसाध
 ॥ ॥ गत्र भं गं कं ठ नि जं व र्द्ध ते दंत सं पु टं ॥ एवं विलो क्य नेत्राणि वज्र सन्नि व जा य ते ॥ १२ ॥ पितृ ने त्रं त था दंत पी त
 रै व त थो मु षः कं प ना म सन्नि स्था त्यु मा यु र्दि न विं श तिः कं प ना म सन्नि जौ ॥ १३ ॥ ॥ अथ रौ द्र ना म सन्नि प्र ति
 कारः ॥ रौ द्र का ल दंत सै वं रौ द्र कः ॥ व रः कृष्ट व मं वै व व्या यं व त ज ने स हा ॥ १४ ॥ ॥ रौ द्र ना म सन्नि प्र ति कारः ॥
 कटु किं व जौ मू ला का वा ना विं उ ग फ ल ति तो वा भो वितो सुहो इति स मगरिपि सितो गरीपि नु रौ द्र

८३

10

5

समागतिः

नाम सन्निजा इति ॥ अथ पु रं उ नाम सन्नि प्रतिकारः ॥ प्रवे उ म सन्नि प्रसाद्युः को उ शे दि ने ॥ कर शो ट जा ते व मु षे
 ल प्र उ यो ते ॥ दु गंध व मु र वे रै व ज्र वं ने त्रं श्र वं ति व ॥ १५ ॥ ॥ इति पु रं उ नाम सन्नि प्र ति कारः ॥ ॥ अथ दंभि
 नाम सन्नि प्र ति कारः ॥ सस्त्र पाई वितो गजपि पलिकटुकि पतिसः वेहन का कर्मि गो ॥ इति पि सितो तो
 गरीपि नु प्रवे दु नाम सन्नि जा ॥ १६ ॥ दंभि ना म सन्नि प्र ति कारः ॥ धर्म बुद्धि प्र दा त वं न रो या
 नु य मा ल यः ॥ १७ ॥ न त्प रा ना षि ता सु र्वं गंध व गि य ते स दा ॥ त्र यो द शं व स न्नि प्र सा ध्यं र म यो दि तं ॥ १८ ॥ ॥
 इति दंभि ना म सन्नि प्र सा ध्य ॥ अथ प व दो ष भ वे द्वा उ ल्का दो ष सा जा य ते ॥ सन्नि वा ष्ट दि ने आ युः अ ति स
 र स उ यो ते ॥ १९ ॥ इति अ ति सार ना म सन्नि प्र ति कारः ॥ कै न कि छा लो वे ल कि गु दिः विं उ ग फ ल सुहो अ वा
 रौ लि व द्धि यु हि त्र ति तो ग ज पि प लि ॥ इति स मगरिपि सितो गरीपि नु त्र ल्य ना म सं नि जा ॥ २० ॥ वट मा सं
 जि वि ते सो पि भे ष जं त भे ष जं त न दी य ते ॥ ध र्म बु द्धि प्र दा त वं ते न क ष प्र मु यो ते ॥ २१ ॥ भू ति कं सन्नि पा ति व
 अ सा ध्यं त स्य वि मु य से व र ॥ इति भू ति क ना म सन्नि प्र सा ध्य ॥ ० ॥ ॥

20

८४

लाप

इदं सन्निमयाख्याताषोडशं विधियते ॥ ॥ इति षोडशसन्नि ॥ ॥ अथ धूवारप्रतिकारः ॥ ॥ वंदन ३ कपू
 र २ कुंकुम ३ केराकाफुल्ल ४ वेल् ५ सेतासर्पि ६ मन्सिल ७ मजोर कोष ८ हरिताल ९ लसना १० हले
 दो ११ गुड १२ हरडा १३ वरडा १४ सिलाजू १५ कागकिविष्टि १६ रजस्वलाश्रकोलुगा १७ कुक्कुटकोहान १८ भै
 साकोनिधारकोहाडा १९ विरालाकिविष्टि २० सुवरकिविष्टि २१ विरालाकिक्कुला २२ गुर्जा २३ सायको
 उवेडोर २४ जिवदोष २५ हार २६ वल्लूर २७ वज्र २८ कुट्टर २९ वज्र ३० सायकिकायुलिल ३१ निव ३२ वाघकोहाड
 ३३ मानसकिविष्टि ३४ भेडाको ३५ इन ३६ भेडाको ३७ साग ३८ कयासकाविया ३९ विहि ४० कटा ४१ मासि ४२
 धौ ४३ मास ४४ किकेरा ४५ हाथिकोहाड ४६ वहरको ४७ साग ४८ बोधाहिग ४९ मरी ५० गुग्गुलु ५१ गंध
 क ५२ रुको ५३ कपाल ५४ सिवाल ५५ भुक्तेश ५६ देहला ५७ वारकोधुलो ५८ पुराका ५९ पुरालका ६० मुठकोधुलो
 परका ६१ कर्षि गो ६२ नेडलको ६३ मसाव ६४ कुकु ६५ इनु ६६ मजुरो ६७ गाडाकि ६८ दाला ६९ धतुराकाविया ७० ८४

15

10

5

माछाकाका ७५२ रिषकि ७६० सेतवृत्तवा ७६१ कुरितो ७६२ दोवाटाकोधुलो ७६३ बांडुकोहाड ७६४ ॥ र
 तिमेलाइवृत्तगर्नुगाइवृत्तमुक्किधूपागनु। बालकको जरोजा ७६५ बालवधको निकोहो ७६६ बालग्रह
 जा ७६७ गोवर्होतजा ७६८ बालवको उषालजा ७६९ भूतप्रेतजा ७७० मंदज्वरजा ७७१ वाउथोजा ७७२ मसान
 जा ७७३ डाइनिजा ७७४ आगदुघ्नोजा ७७५ मदालजा ७७६ बोयायाको रोगजा ७७७ घरमृज्जीजुर ७७८
 पुष्पावावनलाग ७७९ घरधुवागनुकुयं वकेदिनलाग ७८० राघोथलो उधेरिया ७८१ राघोवुकुर
 उधेरिया ७८२ मर्होषेतनिकोहो ७८३ उलराभेदहो ७८४ इति धनं तरिउत्तम ॥ ॥ इत्युलभाग १ सु
 वागभाग १ मरिवाभाग १ विषभाग १ इति पिसिनि वुरसवर्त्तनु। प्रहरजा ७८५ इति १ प्रमानवडि १ वानु
 कासोडपासो जा ७८६ इति सारजरसग्रहनिजा ७८७ मन्निपातजा ७८८ अपस्मारोगजा ७८९ जलोदरजा ७९० मृजीरोजा
 मंदानिजा ७९१ शरिरपुष्टहो ७९२ ॥ इति आनंदभैरवनामवडि ॥ ॥ अथ गुणवैवायणरसम् ॥ ॥ पोर
 भाग १ गंधकभाग १ वितोभाग १ मुठोभाग १ मरिवाभाग १ पिपलाभाग १ सुयोभाग १ त्रिफलाभाग ३ गु

५ उभागरा॥रुति मेलाहरति॥प्रमानवति वाधनुवदि॥षानु॥अष्टादशकुष्टजा॥वापुगुल्यजा॥सर्वशूलजा॥
 तेररहनिजा॥४॥ ॥इतिगुणपंचाद्य एरसम॥ ॥कौडोतेलिमासा४ सुवागपुलाइमासा६ मरी
 वमासा२ रातिगेडिवाकाकोवर्क उलोआधा॥इति एकत्रगरिपिसिहुला मानमासा४ सानाके
 टकेटिमासा१ विव छाडि दालिकाकु पथ भैसिकि महरियालिपिनु निको हो॥२॥ अन्न कुपथगा
 इका महरियालिपिनु इषटि रमाहा होटिलायानिको हो॥ प्रसूति होत तीतो गरि उमालिपिनु॥
 इति वैद्य सास्त्रटी काया प्रसूति प्रतिकारः॥ ॥कनक भुजग वलि मालती पत्रदुर्वासन सिलारस
 गंध मईयं तैल मेतत॥अपहरति वकुष्ट दृष्ट्या माविवर्द्धि स्फुटि वरण रेवु सामने त्वं जाया॥ ॥
 धतुराकौरस पानकौरस मासुतिकौरस निगंध वावति कौरस मनसिल गंधक पारा॥सम गरि
 तिलका तैल मईन गनु प्रहर४ तव सेता कुष्ट महला वनु निको हो॥ दादिना इमहालाया निको
 हो॥ गौडामहा विवाफाया माहाला वनु निको हो॥ ॥अष्टादशकुष्ट कोवोषध॥ ॥आक का दूध

रामः

८५